गुरू पूर्णिमा विशेषांक

जुलाई-2020

मूल्य – 40/-

वर्ष 10

अंक-10

नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान



ॐ

श्री काली तंत्र •

कृष्ण तंत्र •

नाग पंचमी-

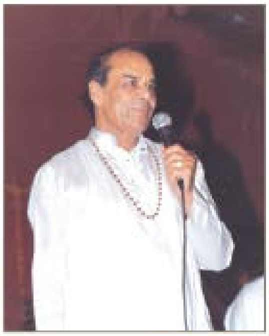
शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

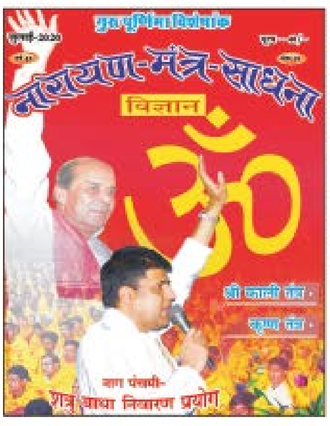
आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम: ||

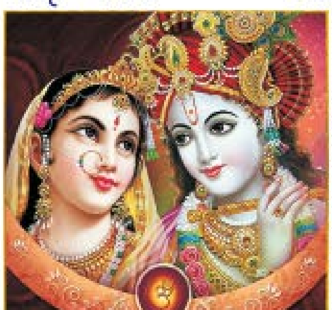


सद्गुरुदेव

स्तम्भ



साधनाएँ



ENGLISH



विशेष

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग



प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

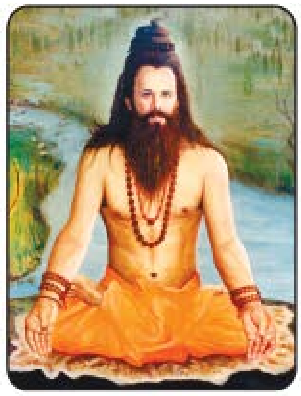
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता



प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27354368, 011-27352248

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me







नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

अभ्यर्थिनां नम शिरोत्तमानां, सत्साधनाकानां ननु भागधेयं।
तन्नौमि निखिलेश्वर देवदवं, यस्मिन प्रसन्ने सकलार्थ सिद्धि: ।।

भौतिक और आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति हेतु श्री चरणों में झुके हुए श्रेष्ठतम साधकों के सौभाग्य रूप, देवाधिदेव गुरुदेव निखिल के श्री चरणों में भक्तिभावयुक्त प्रणामांजलि अर्पित करता हूं। जिसकी प्रसन्नता से सिद्धियां स्वत: फलीभूत होती है। अन्य देवी-देवताओं की आराधना या उपासना से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि सभी शक्ति तत्वों में गुरु ही समाहित होकर चेतना पुंज को प्रदान करते हैं।

पहला कदम

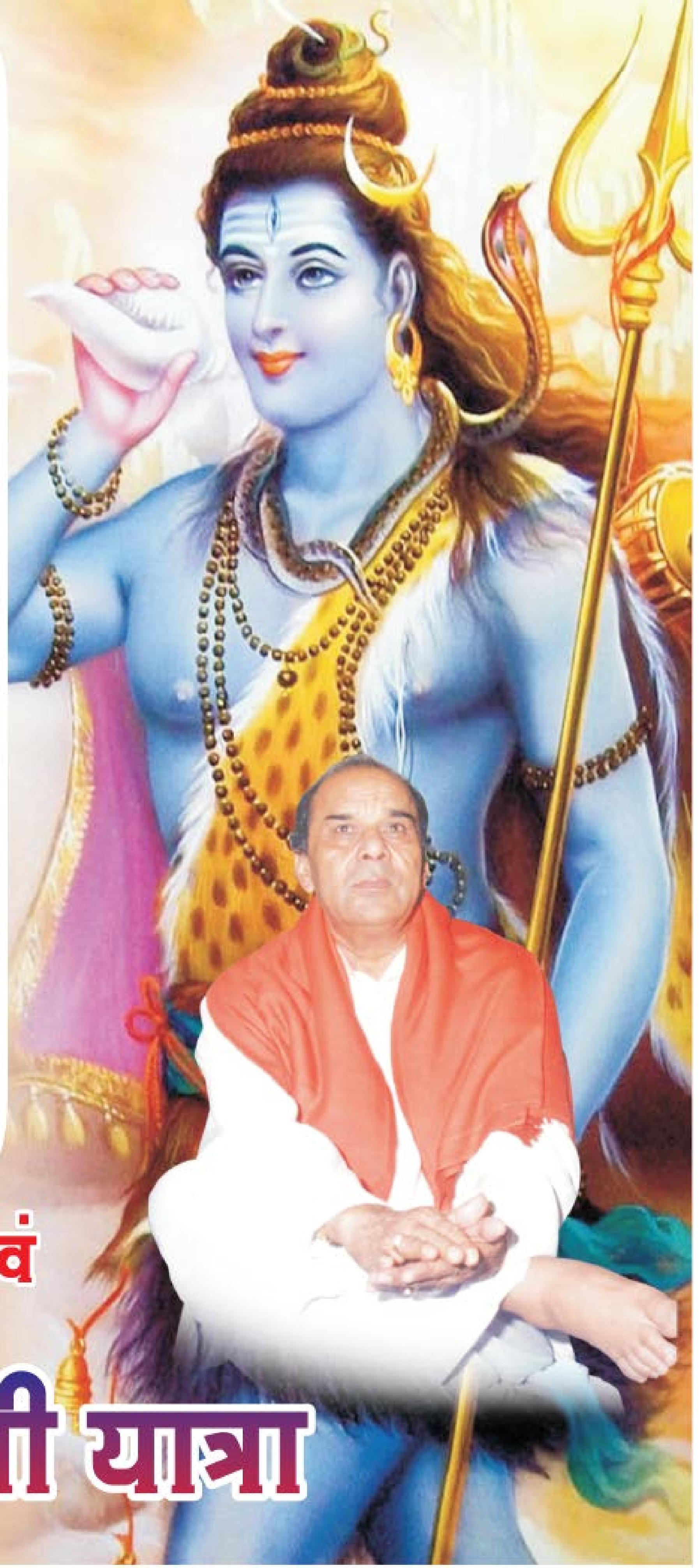
एक सीधा-साधा किसान जीवन में पहली बार पहाड़ की यात्रा को निकला। रात्रि के सफर के लिए उसने कहीं से एक कंदील जुटाई। पहाड़ियों पर जाने के लिए रात को निकल जाना ही जरूरी था। सूरज निकल आने से सफर की कठिनाई बढ़ जाने का डर जो था। यात्रा की खुशी के कारण किसान ठीक से सो भी नहीं सका, अर्धरात्रि को ही उठकर वह सफर के लिए निकल पड़ा, लेकिन गांव के बाहर आकर ही वह ठिठक कर खड़ा हो गया। उसके मन में एक दुविधा पैदा हो गई। उसने महसूस किया कि उसके पास जो कंदील थी उसका प्रकाश तो दस कदमों से ज्यादा नहीं पड़ा रहा था और सफर था दस किलोमीटर का। वह सोचने लगा कि जाना तो दस किलोमीटर है और रोशनी है मात्र दस कदमों की। यह रोशनी इतने लम्बे सफर के लिए कैसे पूरी पड़ेगी। इतने घुप्प अंधकार में इतनी सी कंदील के प्रकाश को लेकर जाना क्या उचित रहेगा? यह तो सागर में छोटी सी नाव लेकर उतरने जैसा ही है। अत: इसी चिंता में वह सूर्य के निकलने का इंतजार करने लगा। तभी उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी उसके पास से निकलकर पहाड़ियों की ओर जा रहा है। उसके हाथ में उससे भी छोटी कंदील थी। उस किसान ने वृद्ध को रोककर अपनी दुविधा बताई तो वह पहले तो खूब हंसा और फिर बोला, 'पागल! तू पहले दस कदम तो चल। इतना चलने के बाद, इतना ही फिर आगे दिखने लगेगा। यदि एक कदम भी आगे का दिखता रहे तो सारी दुनिया की परिक्रमा की जा सकती है।' बात किसान की समझ में आ गई, वह उठा और यात्रा पर चल पड़ा। सूर्य निकलने से पूर्व वह पहाड़ियों पर था। जीवन के मार्ग पर क्या उस बूढ़े की सीख याद रखने योग्य नहीं है?

साधना के मार्ग में भी यही करना चाहिए, धीरे-धीरे साधना मार्ग पर आगे बढ़ने से ही पूर्णता प्राप्त होती है।

समर्पण और साधना द्वारा शिष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है। केवल आवश्यकता है उसके पास एक महान् गुरु हो जो उसे पूर्ण ज्ञान प्रदान कर सके। शंकराचार्य के जीवन उत्थान की चर्चा के साथ ही सद्गुरुदेव का यह ओजस्वी प्रवचन

देव्योर्थ मातुं परिदेह रूपं,
ज्ञानोप मां वयी भवतुं श्रीयेवं।
आत्मानुभूति परमां सहितं सदेवं,
देव्योर्थ वातुं भवदेव सिन्धुं।।

मेरे जीवन का उद्देश्य, मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं उन रहस्यों को ज्ञात करूं जिन रहस्यों को विज्ञान नहीं मालूम कर सकता, नहीं जान सकता। पिछले पांच सौ वर्षों में विज्ञान तो बराबर प्रयत्नशील बना हुआ है मगर वह उस ज्ञान को समझ नहीं पाया कि एक गाय घास खाती है और घास दूध में कनवर्ट कैसे हो जाता है। आज तक विज्ञान घास को दूध में कनवर्ट नहीं कर पाया, एक मां गेहूं की रोटी खाती है और दूध बन जाता है। यह विधान क्या है, यह विज्ञान नहीं समझ पाया, यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक वस्तु विज्ञान समझ पाए। उसकी एक लिमिटेशन है, उसकी एक सीमा है।



समर्पण एवं कुण्डलिनी यात्रा







मगर आपके व्यक्तित्व की कोई सीमा नहीं है। वह अनंत है और उतना अनंत है कि हम एक स्थान से पूरी दुनिया को देख सकते हैं और हम साधनाओं के द्वारा उन सिद्धियों को प्राप्त कर सकते हैं, जिसके द्वारा जान सकते हैं कि

- जगदम्बा क्या है ?
- लक्ष्मी क्या है ?
- सिद्धाश्रम क्या है ?
- ऋषि, मुनि, योगी यति ये सब क्या है ?
- जीवतंता क्या है, चैतन्यता क्या है ?
- आखिर यह जीवन क्या है ?
- मेरे जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य क्या है ?

जैसा कि गुरुदेव कहते हैं कि अपने जीवन को बहुत ऊंचाई पर उठा देना है तो किस प्रकार से ऊंचा उठाएं, क्या करें?

सीढ़ियों पर खड़े होने से तो ऊंचा नहीं हो पाएगा और गृहस्थ में रहते हुए बाल बच्चे पैदा करते हुए, घिसते, घसीटते हुए भी नहीं प्राप्त कर सकते। उसके लिए कहीं कुछ छोड़ना पड़ेगा, बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा। दस परसैंट भी छोड़ेंगे तो नब्बे परसैंट आप प्राप्त कर लेंगे और छोड़ेंगे ही नहीं तो कुछ प्राप्त नहीं कर पाएंगे और उसके बाद आपको लगेगा कि आपने हीरे गंवा दिए थे, केवल आप कोयले और कंकर पत्थर एकत्रित कर रहे थे तब आपको एहसास हो पाएगा।

आज यदि मुझसे पूछा जाए कि आप गृहस्थ में भी रहे, संन्यास में भी रहे आप अब क्या कर रहे हैं और यदि मैं जो साधकों और शिष्यों को दे रहा हूं उससे परे हट कर देखूं तो केवल कंकर, पत्थर इकट्ठे कर रहा हूं। बच्चों को रोटियां खिला रहा हूं पत्नी को रोटी खिला रहा हूं। घर में मेरी पत्नी है, बच्चे हैं और वैसा ही है जैसे समुद्र के किनारे बैठे कंकर पत्थर, अपनी झोली में इकट्ठा करते रहे। परंतु वह जो मैंने साधना का ज्ञान प्राप्त किया था वे हीरे-मोती थे और आज भी मुझे उसके ऊपर गर्व है। आज भी गर्व है अपने योगियों पर संन्यासियों पर, अपने ज्ञान पर, अपनी चैतन्यता पर।



वह सब कुछ प्राप्त कर सकें और उन आयामों को देख सकें, उस पक्ष को देख सके। देखेंगे तो जीवन अपने आप में उज्ज्वल बन जाएगा।

और आप मुझसे पूछें तो वृद्धावस्था जीवन में आती ही नहीं, होती भी नहीं। वह बस एक शब्द है। मानसिक न्यूनता जैसी कोई चीज होती नहीं, मृत्यु जैसा कोई शब्द है ही नहीं। देह समाप्त हो सकती है, मगर देह को खुद ही जीवन्त बना दें तो फिर आत्मा तो समाप्त होती ही नहीं, उस आत्मा के ऊपर फिर से देह का आवरण कर लेंगे। फिर कायाकल्प कर लेंगे। अगर हमारे ऋषि मुनि दो हजार साल जीवित रह पाते थे तो हम क्यों नहीं कर पाते। हममें फिर क्या कमी है?

कमी है, हमारी साधना की, कमी है जीवन में गुरु वह ज्ञान नहीं दे पा रहा है आपको, आप सावधानी में वह सिद्धि प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। आप साधनाओं में प्रयत्न नहीं कर पा रहे हैं। पूर्ण मनोयोग से उनमें जुट नहीं पा रहे हैं। पूरी तरह से जुटने की जरूरत है आपको टुकड़े-टुकड़े हो जीवंत होना और सांस लेना वह कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। आप पर ऑक्सीजन मास्क चढ़ा दिया जाए और अस्पताल में लिटा दिया जाए, वह जीवन नहीं है। आप ऑक्सीजन ले रहे हैं और मर रहे हैं, ऑक्सीजन ले रहे हैं और जी रहे हैं वह जीवन कहलाता ही नहीं। जीवन वह कहलाता है जहां वक्षस्थल आपका पूर्ण पौरुषवान हो, शरीर ताकतवान और क्षमतावान हो और आप सब कुछ बैठे-बैठे देख सकें कि क्या घटनाएं, घट रही हैं। उन पहलुओं को देख सकें, जो ज्ञान को समेटे हुए हैं। उन पर्वतों को देख सकें, उस हिमालय को देख सकें, उस मान सरोवर को देख सकें और उन उच्चकोटि की चीजों को देख सकें जो जीवन का मूल उत्स है। वे घोंघे पत्थर नहीं हैं, वे हीरे हैं।

आप एक बार भी उन्हें अपने जीवन में देखेंगे तो आपको ये सब अपने जीवन की चीजें बहुत मामूली लगने लग जाएगी। जीवन में एक ही क्षण दूसरी बार नहीं आ सकता। एक बार क्षण आ गया और उसे आपने नहीं पकड़ा तो आप चूक



गए। मान लो इस क्षण में आपको साधना सिद्धि सफलता दीक्षा दे रहा हूं तो यह जरूरी नहीं कि आपके जीवन में दूसरा ऐसा क्षण आए या मैं वापस आपको यह दीक्षा दूं यह जरूरी या संभव नहीं है। अगर चूक गए तो चूक गए आप। चूक गए तो बहुत बड़ी चीज चूक गए आप। छोटी-मोटी चीज नहीं चूके। आज शायद आप इस बात को एहसास न करें, मगर एक दिन अवश्य करेंगे।

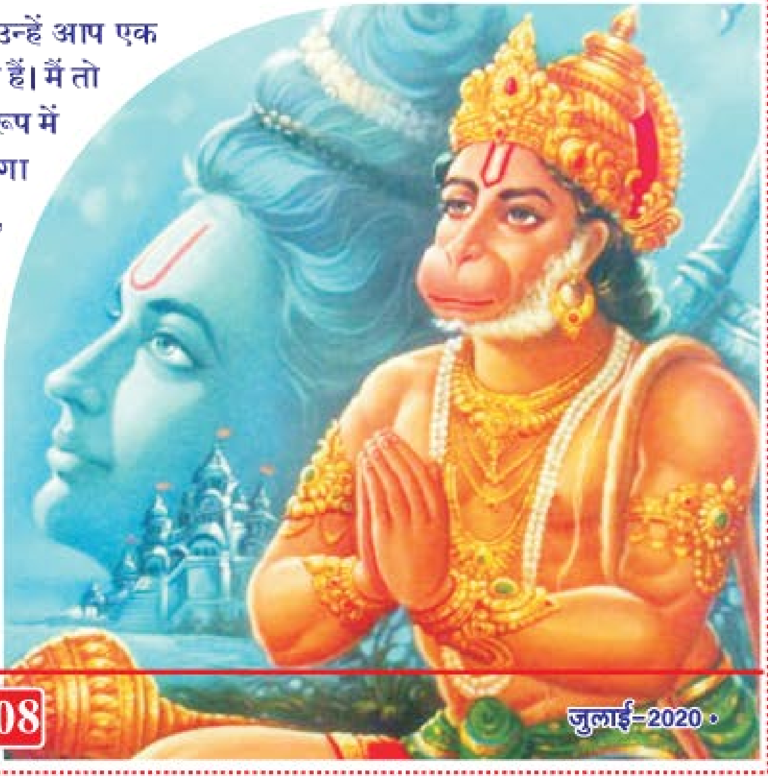
मैं आपको समुद्र के बीचों-बीच कूदने की तैयारी करा रहा हूं। मैं नहीं चाहता कि आप समुद्र के किनारे बैठे रहें, आप डरपोक बने रहें, भीरू बने रहें। आप घबराएं नहीं कि अंदर कूदूंगा तो मर जाऊंगा, मर जाएंगे तो मर जाएंगे, मगर यह गारंटी की बात है कि अगर निकलेंगे तो मोती लेकर निकलेंगे, घोंघे, पत्थर लेकर फिर बाहर नहीं निकलेंगे।

और मेरा तो बराबर यही चिंतन रहता है कि मैं उन दीक्षाओं को, प्रयोगों को, उस ज्ञान को, उन प्रवचनों को स्पष्ट करूं। जितने क्षण हमारे पास है चाहे दो घंटे हैं, चार घंटे हैं तो इनमें जितना ज्यादा शिष्यों को दे सकूं दूं। मैंने निश्चय कर लिया था कि बिल्कुल शिविरों में नहीं जाऊंगा। मानस बना लिया था। सौ परसेंट सोच लिया था कि शिविरों में भाग नहीं लेना है। अगर साधक मेरे पास स्वयं आएंगे तो सिखा दूंगा।

मगर प्रेम की डोर एक ऐसी मजबूत होती है, जिससे मजबूत कोई डोर होती ही नहीं। फिर आप खींच लेते हैं उस डोरी को खींचते हैं तो मेरे पांव उठते हैं, फिर सोचता हूं कि यह ज्ञान तो अंदर रह ही जाएगा फिर क्या फायदा होगा? फिर मेरे सांस लेने से फायदा भी क्या जब एक-एक सांस इस बात के लिए गिरवी रख दी है कि शिष्यों के लिए ही हर क्षण समर्पित हो, प्रत्येक सांस शिष्यों के लिए हो तो फिर मैं सांस अकेला लूं उससे, फायदा भी क्या होगा?

मैं ऐसा जीवन नहीं जी सकता कि पलंग पर लेटा रहूं और ए.सी. चलता रहे और मैं नींद लूं। ऐसा संभव नहीं हो पाता। जो कुछ अंदर है वह मैं देना चाहता हूँ और इतना अधिक हिलोर है, समुद्र है कि मैं देता ही रहूं। पुस्तकों के माध्यम से, प्रवचनों के माध्यम से, कैसेटों के माध्यम से और आपको जीवित जाग्रत चैतन्य व्यक्तित्व बनाकर के। मैं चाहता हूं कि आपको कृष्ण और राम की तरह ऊंचा उठा सकूं।

वे भी एक व्यक्तित्व थे, एक सामान्य व्यक्तित्व यदि उन्हें आप एक इतिहास की दृष्टि से देखें। भगवान की दृष्टि से तो वह प्रणम्य हैं। मैं तो आपको भी प्रणाम करता हूं कि आप भी निश्चित ही उसी रूप में हैं। मगर आप उस जगह पहुंचेंगे तब पूरा संसार झुक जाएगा आपके सामने। जगह-जगह आपकी स्तुति हो पाएगी, जगह-जगह एहसास हो पाएगा कि हमारे पूर्वज क्या थे क्योंकि आप उन सिद्धियों उन सफलताओं को प्राप्त कर पाएंगे और यदि आप नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, न ही आपका अभ्यास है तो गुरु खुद की तपस्या के अंश से उसे आपके भीतर प्रवाहित कर दें।



कोई साधना शिविर होता है तो पांच-पांच दिन तक सोता ही नहीं, क्योंकि समय ही नहीं मिल पाता। रात्रि में नींद लेने का और दिन में सोने का सवाल ही नहीं होता, लेटता हूं तो फिर यह कल्पना होती है कि कल यह दिवस

है शिष्यों को क्या दूं, किस प्रकार से दूं। बीस चीजें मेरे मानस में होती हैं तो बीसों उतनी महत्वपूर्ण होती हैं। बीस में से क्या दूं, मगर ऐसा दे दूं कि फिर उनको कुछ लेने की जरूरत रहे ही नहीं।



मैं तो हर क्षण देने को तैयार हूं, आवश्यक है कि आप ग्रहण करें और ग्रहण करने के लिए कोई भी क्षण उपयुक्त हो सकता है। उसके लिए फिर कोई जरूरी नहीं कि सिद्ध मुहूर्त हो क्योंकि जगदम्बा तो अपने आप में प्रत्येक क्षण चैतन्य है, गुरु तो हर क्षण देने के लिए तत्पर है।

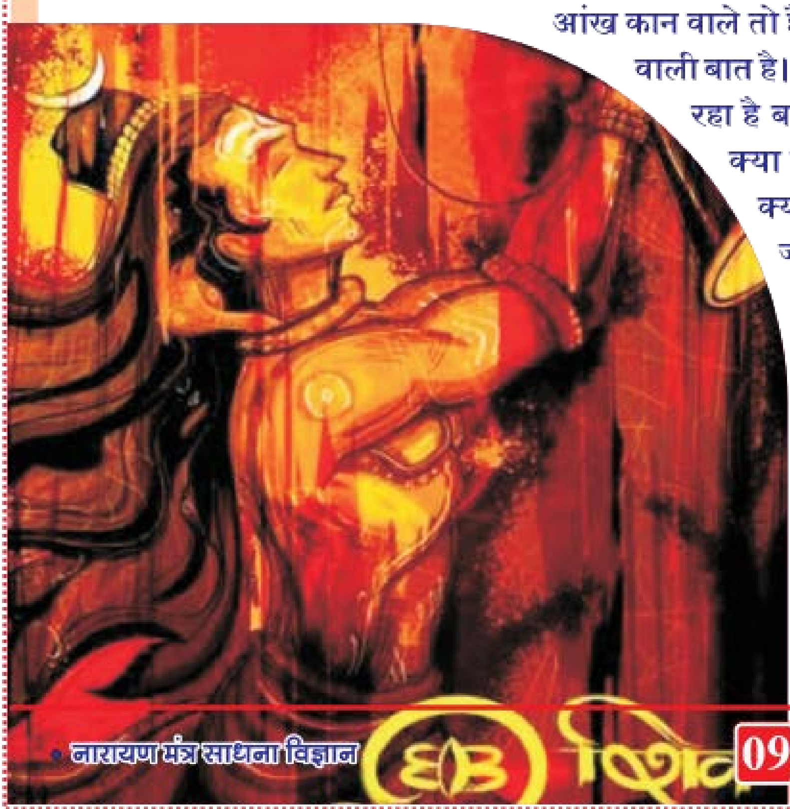
शास्त्रों में कहा गया है कि आषाढ़ महीने में देव शयन करते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवोत्थान होगा या देव उठेंगे। अगर उस समय उठेंगे तो फिर श्रावण के महीने में हम भगवान शिव की पूजा कैसे करते हैं। फिर भगवान शिव तो सोए हुए हैं? फिर शारदीय नवरात्री में हम जगदम्बा की पूजा कैसे करते हैं, जगदम्बा तो सोई हुई है?

देव सोए हुए नहीं हैं, वे तो सदैव चैतन्य हैं। वह तो हमारे अंदर जो ज्ञान है, वह सोया हुआ है। उसको जीवित जाग्रत चैतन्य करके एक-एक देवता की तस्वीर को जिंदा, जाग्रत करके सामने खड़ा कर सकें, वह ज्ञान, वह चेतना आपमें आनी चाहिए, वह ताकत आपकी आंख में आनी चाहिए और वही ताकत आपको देना चाहता हूँ मैं।

फिर आप देखेंगे कि उस आनंद का अलग ही मजा है, अपने आप में अलमस्त फकीरी है। गृहस्थ फिर भी चलाते रहेंगे आप। गृहस्थ आपका चलना भी चाहिए। मैं आपको संन्यासी होने की दीक्षा नहीं दे रहा हूं। मैं आपको कह भी नहीं रहा हूं कि आप अपनी पत्नी को छोड़ दें या पति को छोड़ दें। मैं कह भी नहीं रहा हूं कि व्यापार छोड़ दें या नौकरी छोड़ दें। मैं कह रहा हूं कि वैसे घौंचे, पत्थर आप बटोरिए मत। करते रहिए काम, मगर बीच समुद्र में कूदने की हिम्मत रखिए, आप।

और फिर जब मैंने आपको आश्वासन दे दिया तो आप मेरे ऊपर भरोसा करिए कि इस समुद्र में मैं आपको डूबने नहीं दूंगा यह गारंटी है निश्चित रूप से।

अगर कोई समझदार आदमी है तो इशारा भी समझ जाता है, मूर्ख आदमी है तो डंडे मारने से नहीं समझता। हम दो आंख कान वाले तो हैं, मगर हम कितने ज्ञानी हैं, यह आपको खुद निर्णय करने वाली बात है। आपको समझना होगा कि क्या यह आदमी जो इतना कह रहा है बार-बार, क्या यह मूर्ख है, क्या इसको कोई स्वार्थ है, क्या इसको कोई कमी है, क्या इसको रोटी नहीं मिल रही है क्या इसके सोने के लिए पलंग नहीं है, कमी क्या है इनके जीवन में?



और कमी नहीं है तो हमारे सामने आकर के इतना फोर्स क्यों कर रहा है यह हमें? क्यों बार-बार प्रत्येक को तैयार कर रहा है? प्रत्येक को क्यों प्रोत्साहित कर रहा है? प्रत्येक को क्यों छाती में लात मार रहा है?

और मैं कह रहा हूं कि मैं ऐसा यदि नहीं करूं तो फिर मेरे जीवन का मतलब रहेगा ही नहीं। यदि आपमें से प्रत्येक साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं कर पाए, तो मैं समझूंगा कि मैं स्वयं निराश हो गया, असफल हो गया और



असफलता से मैं मरना ही नहीं चाहता, रहना ही नहीं चाहता हूं, सांस भी नहीं लेना चाहता हूं।

और साधना में सफलता के लिए आपको, एक सहारे की जरूरत है, एक गुरु की। ऐसा गुरु जो आपसे तीस साल से जुड़ा है, पचास साल से जुड़ा है, पिछले कई जन्मों से जुड़ा है और मैं संन्यास में था तो एक भी संन्यासी शिष्य हिला नहीं, विचलित नहीं हुआ, मैं चार-चार साल भी उनसे नहीं मिला तो भी उनके मन में कोई फर्क आया ही नहीं अंतर आया ही नहीं। उन्हें भरोसा था कि हो सकता है किसी वजह से गुरुजी नहीं मिल पाए हों मगर मिलेंगे जरूर। मिलेंगे तो एक साथ सब कुछ दे देंगे और बराबर उनका इंतजार बना रहता था और मुझे भी बराबर मेरे माइंड में क्लिक करता रहा कि उनका ऋण मेरे ऊपर है क्योंकि वे बराबर जुड़े हुए हैं उनको मुझे देना है।

आप इतने साल से मुझसे जुड़े हैं और प्रत्येक बात मेरी मानी है। तो मेरा धर्म है, मेरा कर्तव्य है कि मेरा ऋण तब उतर पाएगा जब मैं आपको वह सब कुछ दूंगा जो देना मेरा धर्म, मेरा फर्ज, मेरा कर्तव्य है, उसमें पीछे नहीं हट सकता आपसे।

और नवरात्री हो, होली हो या दीपावली हो जहां गृहस्थ शिष्यों को संभालना पड़ता है वहां संन्यासी शिष्यों को भी संभालना पड़ता है। वे भी इंतजार करते हैं कि पंद्रह मिनट के लिए ही सही गुरुदेव आएं और दीक्षा दें, प्रवचन दें और कुछ ऐसी क्रिया करें जो हमारे जीवन में अभीष्ट लक्ष्यदायक हों। यों तो साल का प्रत्येक दिन महत्वपूर्ण है, 365 दिन ही महत्वपूर्ण हैं मगर कुछ क्षण ऐसे होते हैं जो अपने आपमें बहुमूल्य बन जाते हैं। उन क्षणों की कोई तुलना नहीं हो सकती। उन क्षण विशेष में कुछ ऐसा कार्य हो जो अपने आपमें दुर्लभ हो, अद्वितीय हो, श्रेष्ठ हो और यही चिंतन लेकर के मैंने उस श्लोक से अपनी बात प्रारम्भ की।

देव्योर्थ मातुं परिदेह रूपं.....

इसी श्लोक, इसी चिंतन, इसी विचार, इन्हीं पंक्तियों के माध्यम से शंकराचार्य अपने गुरु के पास जाकर खड़े हुए। और उन्होंने कहा कि मैं एक सामान्य व्यक्तित्व हूं, एक सामान्य बालक हूं, एक ऐसा बालक हूं कि कोई ज्ञान नहीं है मुझे, एक सड़क पर पड़ा हुआ कंकर पत्थर हूं, जिसको कोई भी ठोकर मार देता है और मैं केरल से रवाना होकर नर्मदा के किनारे तक इसलिए पहुंचा दूं कि मैं आप जैसा गुरु प्राप्त कर सकूं।



मगर आपसे पहले मैंने शिव साधना की है, इसलिए कि मैं शिव से कुछ चाहता ही नहीं था, मैं तो केवल यही चाहता था कि इस जीवन में ऐसा गुरु हो जो मेरा अभीष्ट लक्ष्य मुझे दे सके, जो मेरे मन की इच्छा पूरी कर सके, मेरे जीवन को पूर्णता दे सकें, मेरे जीवन को अद्वितीयता दे सकें।

गोविंदपादाचार्य चुपचाप सुनते रहे। उन्हें ज्ञात था कि इसने शिव साधना की है, इस बालक ने और उस शंकराचार्य ने एक पूरी तरह संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया। इतना संघर्षपूर्ण कि एक आठ साल का बालक जब उसने संन्यास लिया तो घर वालों ने उसे अलग कर

दिया, समाज ने अलग कर दिया क्योंकि समाज के बंधन उस समय बहुत मजबूत थे। समाज ने कहा तुम जाति से बाहर हो।

और उन्हीं दिनों उनकी मां की मृत्यु हो गयी जो कि जन्मदात्री थी। उन्होंने अपने परिवार वालों को, कुटुंब वालों को कहा कि मेरा धर्म है कि मैं अपनी मां का दाह संस्कार करूं। मगर सबने कहा कि तुम समाज से बाहर हो, हम तुम्हारी माता के दाह संस्कार में भाग नहीं लेंगे। तो शंकराचार्य ने सोचा यह कैसा समाज हुआ और इस समाज को मैं मजबूत कर पाऊंगा जब मैं कुछ बनूंगा और अपनी मां की लाश को कंधे पर अकेला ढोकर, श्मशान में जाकर अकेले उसे मुखाग्नि दी।



कल्पना करें कितना दुःख, कितनी वेदना हुई होगी, कितनी तकलीफ हुई होगी उस आठ साल के बालक को। जब उस बालक ने भगवान शिव की साधना की तो स्वयं भगवान शिव ने कहा तेरा नाम आज से शंकर रहेगा, मगर पूर्णता प्राप्त करने के लिए तुम्हें नर्मदा के किनारे जाना पड़ेगा। वहीं पर तुम्हें गुरु मिलेंगे, गोविंदपादाचार्य और जब तक तुम्हारे अंदर का एक-एक अणु नहीं खुलेगा, नहीं जाग्रत होगा, जब तक अंदर की चेतना जाग्रत नहीं होगी, तब तक तुम्हारी सारी साधनाएं व्यर्थ हैं और तुम्हें और कोई साधना करनी ही नहीं है। ऐसा कह कर भगवान शिव अन्तर्ध्यान हो गए।

शंकर आठ नौ साल का बालक, कहां केरल, कहां मध्य प्रदेश! नर्मदा के किनारे ओंकारेश्वर के पास में आज भी शंकराचार्य की गुफा है। गोविंदपादाचार्य के पास जाकर उन्होंने कहा कि मैंने भगवान शिव की साधना की है और उन्होंने कहा है कि तुम्हें जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त होनी ही चाहिए और ऐसी होनी चाहिए कि उसके बाद जीवन में कोई साधना करने की जरूरत नहीं रहे।

शंकर ने कहा मंत्र प्रामाणिक हैं या नहीं, सामने खड़े होकर मंत्र बोलते हैं या नहीं। यह मैं देखना चाहता हूं। मैं देखना चाहता हूं कि किसी भी गृहस्थ को मैं पूर्णता तक कैसे पहुंचा सकता हूं, उनके जीवन के अभावों को कैसे दूर कर सकता हूं और उससे भी बड़ी बात यह कि भगवान शिव ने कहा कि मेरी उम्र केवल 32 वर्ष है, इन 32 वर्षों में मैं उस जगह पहुंचना चाहता हूं जहां अपने आपमें संपूर्णता प्राप्त हो। बस केवल यही इच्छा है। मगर गोविन्दपादाचार्य ने कहा कि जब तक तुम्हारे अंदर के सारे अणु, परमाणु विखंडित नहीं होंगे, जाग्रत नहीं होंगे, चैतन्य नहीं होंगे, तब तक तुम्हें अद्वितीयता प्राप्त नहीं हो पाएगी। तुम्हारे जैसे साधना करने वाले और पच्चीस मिल जाएंगे और सैकड़ों लोग मिल जाएंगे, मगर संसार में तुम अकेले ही बनो, तुम्हारे जैसा कोई बने ही नहीं, अगर तुम्हारी यह अभिलाषा, यह लक्ष्य है और अगर इस बात के लिए मेरे पास आए हो तो बहुत कठोर साधना करनी पड़ेगी और साधना करनी पड़ेगी एक शिष्य बन करके। केवल गुरु सेवा के अलावा तुम कुछ करो ही नहीं। मैं देखना चाहता हूं कि तुममें कितनी क्षमता है।



शंकर ने कहा यह तो बहुत छोटी बात है, अगर आप कहें तो अपना जीवन है गुरुदेव आपके चरणों में



समर्पित कर दूं। मैं चाहता हूं कि मेरे अंदर के सारे चक्र जाग्रत हो जाएं एक बार में ही और आप ही कर सकते हैं अपने पाद प्रहार से क्योंकि आपका नाम इस समय विश्व में विख्यात है। सारा विश्व इस बात को स्वीकार करता है कि आप उस ज्ञान को भी दे सकते हैं कुण्डलिनी जागरण होने के माध्यम से, चक्र जागरण होने के माध्यम से।

और आप लोगों की एक गलतफहमी दूर कर दूं कि कुण्डलिनी के सात चक्र नहीं होते कुण्डलिनी के एक सौ आठ चक्र होते हैं और उनमें से भी 64 चक्र केवल आपके मस्तिष्क में है और जब वे पूरे चक्र जाग्रत होते हैं तभी पूर्णता प्राप्त होती है। पहले यह ज्ञान था मगर बाद में यह ज्ञान अधूरा बना रहा, एक शार्ट कट बना रहा कि ये सात मेन पाइंट हैं इन्हें स्पर्श कर लीजिए।

शंकराचार्य ने कहा मैंने तो सुना था कि मूलाधार के सहस्रार तक केवल सात ही चक्र हैं तो गोविंदपादाचार्य ने कहा इसीलिए अद्वितीय नहीं बन सकते क्योंकि ज्ञान अधूरा है। तुमने शब्द प्रयोग किया अद्वितीय और मैंने कहा कि तुम्हें अद्वितीय बनाऊंगा। मगर अद्वितीय बनना है तो पूरे 108 चक्रों को जाग्रत करना पड़ेगा तुम्हारे। केवल सात चक्रों को जाग्रत करने से काम चलेगा ही नहीं और उसके लिए वह विधि तुम्हें देनी होगी, एक-एक चक्र को पूर्णता के साथ जाग्रत करना पड़ेगा एक ही क्षण में एक ही झटके में और अगर ऐसा नहीं होता तो तुम जीवन में वह नहीं प्राप्त कर सकते जो तुम चाहते हो। इसलिए मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम चाहते क्या हो।

शंकराचार्य ने कहा मैं छः चीजें चाहता हूं, यदि मुझे बोलने की अनुमति हो तो मैं छः तथ्यों की ओर आपका ध्यान, आकर्षित करना चाहता हूं। मैं केरल प्रदेश के ब्राह्मण का एक बालक हूं। बचपन में पिता की मृत्यु हो गई। मां का दाह संस्कार मैंने अपने कंधे पर डाल कर किया और आपको ज्ञात है कि भगवान शिव की साधना इसलिए की कि मैं उस गुरु को प्राप्त कर लूं जो गुरु मुझे उस पूर्ण ज्ञान को दे सके और पहली बार आपने यह बताया कि सात चक्र नहीं होते 108 चक्र होते हैं। यह पहली बार सुन रहा हूं। छः तथ्य मेरे सामने हैं और मैं चाहता हूं कि मैं कायाकल्प कर सकूं, जिस समय भी मैं चाहूं मैं पूर्ण शरीर को परिवर्तन कर सकूं। मैं यह जान लेना चाहता हूं कि किस प्रकार एक सर्प पूर्ण कायाकल्प कर लेता है। भगवान शिव भी सर्प से प्यार करते हैं और भगवान विष्णु के ऊपर भी सर्प की छाया रहती है। उस कायाकल्प विधि को समझ लेना चाहता हूं, मैं समझ लेना चाहता हूं कि किस प्रकार से वृद्धावस्था को यौवनावस्था में परिवर्तित किया जाए किसी का भी मेरा ही नहीं और मनुष्य के ही रूप में नहीं, मैं जिस रूप में चाहूं वैसा बन सकूं। क्या ऐसा संभव है?



गोविंदपादाचार्य ने कहा ऐसा संभव है।

शंकराचार्य ने दूसरी बात कही कि मुझे 32 साल उम्र मिली है। 32 में दस साल तो व्यतीत हो गए और 22 वर्षों में क्या मैं पूरे भारत वर्ष में अपने व्यक्तित्व को, अपने ज्ञान को, अपनी चेतना को हजारों-हजारों शिष्यों तक पहुंचा सकता हूं? क्या इतनी विद्वता और सारे शस्त्र एक साथ कंठस्थ हो सकते हैं? कब तक मैं पढ़ता रहूंगा,



यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, ऋग्वेद? उन शास्त्रों का तो कोई अंत नहीं है। उन उपनिषदों को मैं कब तक पढ़ता रहूंगा? क्या कोई ऐसी साधना नहीं है, जिसके माध्यम से समस्त मंत्र ही मेरे शरीर में अपने आप में प्राणमय बन जाएं? एक-एक रोम से मंत्र निकलने लग जाए। क्या कोई ऐसी क्रिया है? क्या मैं ऐसा कर सकता हूं?

गोविंदपादाचार्य ने कहा ऐसा तुम कर सकते हो।

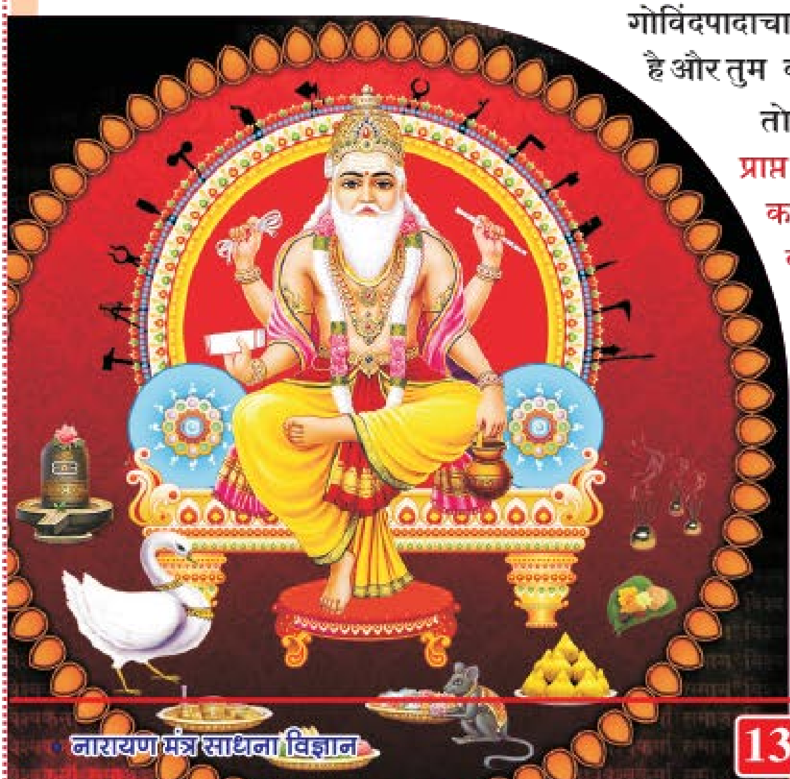
शंकराचार्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा मुझे तो सही ढंग से केरल की भाषा ही नहीं बोलनी आती, क्या मैं इतना अद्वितीय वक्ता बन सकता हूं कि मैं बोलूं और सामने वाला सम्मोहित हो जाए, मंत्रमुग्ध हो जाए, बात सुनने में अपने आप में तन्मय हो जाए, लीन हो जाए? कोई कहे और पूर्ण शास्त्र मेरे अंदर से प्रवाहित हो, कोई कहे उपनिषद का श्लोक और मेरे अंदर से उपनिषद का श्लोक प्रवाहित हो। उस प्रवाह में मुझे वेद मंत्र बोलना पड़े तो मैं बोल सकूं, मुझे सोचना नहीं पड़े कि यह यजुर्वेद का कहा मंत्र है कैसे बोलूं। ऐसा मैं चाहता हूं। क्या मेरा पूरा शरीर मंत्रमय बन सकता है?

गोविंदपादाचार्य ने कहा ऐसा बन सकता है क्योंकि प्रत्येक रोम अपने आप में एक मुख होता है, लाखों मुख हैं।

सहस्राक्षी रेखा पूर्वक:
सहस्राक्ष: सहस्र पाद:

मनुष्य के तो लाखों मुंह हैं, लाखों हाथ हैं, लाखों चैतन्यताएं हैं और आप यह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

शंकर ने कहा चौथा एक और बिंदु, इस कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से क्या मैं अपने, पिछले सैकड़ों जन्मों को और अगले सैकड़ों जन्मों को एक साथ देख सकता हूं? और देखूं ही नहीं, क्या मैं, इस जीवन को उन आने वाली बाधाओं से परे हटा सकूं, सफलता प्राप्त कर सकता हूं? बाधाएं मेरे सामने आएं ही नहीं, कठिनाइयां नहीं आएं। जो कुछ मैंने चाहा है, वह प्राप्त हो जाए। अगर मैंने सम्मोहन चाहा है, वशीकरण चाहा है तो सामने वाला पूर्ण वशीभूत हो। देखूं और वह सम्मोहित हो जाए। क्या कोई ऐसी विधि है? क्या इसके लिए मुझे कोई दूसरा मंत्र जप करना पड़ेगा? कोई दूसरी विधि है?



गोविंदपादाचार्य ने कहा एक ही विधि है। दूसरी विधि की जरूरत ही नहीं है और तुम क्या पूछना चाहत हो?

तो शंकर ने कहा कि मेरी अंतिम इच्छा यह है कि आचार्य पद प्राप्त कर सकूं। उच्चकोटि का गृहस्थ बन सकूं, उच्च कोटि का कवि बन सकूं, उच्च कोटि का लेखक बन सकूं और मैं उस वशीकरण के माध्यम से पूरे ब्रह्माण्ड को जाग्रत करता हुआ चेतनायुक्त बना सकूं।

गोविंदपादाचार्य ने कहा यह अंतिम बात नहीं पांचवी बात कही है तुमने, छठी और कुछ है बात तुम्हारी।

शंकर ने कहा मैं संकोच के मारे बोल नहीं पाया था।

गोविंदपादाचार्य ने कहा जब गुरु और शिष्य के बीच में हवा भी नहीं होती तो कोई पर्दा होता ही नहीं तो फिर संकोच तुम्हें रखने की जरूरत ही नहीं।



तो शंकर ने कहा- या आज के युग में....

अभी केवल 700 साल हुए हैं शंकराचार्य को उत्पन्न हुए, कोई दस हजार, पच्चीस हजार साल नहीं हुए हैं।

तो शंकर ने कहा क्या ऐसा संभव है कि एक अंगुष्ठ मात्र में मनुष्य इस पूरे शरीर को, कनवर्ट करके, इतना छोटा सा बनाकर के अन्नमय कोष से प्राणमय कोष में परिवर्तित करके, किसी भी स्थान पर जा सकता है? अगर मैं सिद्धाश्रम जाना चाहूं, तो क्या जा सकता हूं? क्या मैं इंद्रलोक में जा सकता हूं?

क्या मैं कैलाश जाकर वैसे ही भगवान शिव के साक्षात दर्शन कर सकता हूं जैसे आपके कर रहा हूं? क्या मैं ब्रह्म लोक में जाकर के जो उनके चारो मुख से वेद उच्चरित हो रहे हैं, उनको सुन सकता हूं? क्या आज के युग में ऐसा संभव है?

गोविंदपादाचार्य ने कहा ये प्रश्न सारे, तुम्हारे नहीं हैं, ये प्रश्न भगवान शिव के हैं जो तुम्हें दिए गए हैं। तुम्हें रास्ता बताया है और यह बताया है कि तुम यह ज्ञान कहां से प्राप्त कर सकते हो और ये छः की छः अपने आप में ऐसी विधियां हैं कि एक-एक विधि में बीस साल लगते हैं। कोई छोटी चीज तुमने पूछी ही नहीं। ऐसा कैसे संभव है कि एक ही बार में सब कुछ संभव हो जाए। पूरा आकाशगमन, एक लोक से दूसरे लोक में जाने की क्रिया, संपूर्ण वेद वेदांत ज्ञान, चेतना, मंत्र अपने आप में प्रत्येक रोम-रोम से निकलते हो, एक व्यक्तित्व इतना सम्मोहित कर सके, चेहरे को आपके कोई देखे और उसकी हिम्मत न रहे कि आपके सामने खड़ा रह सके, और ऐसा आचार्य बन सको कि विद्धता के क्षेत्र में तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सके, और तुम गृहस्थ जीवन को भी पूर्णता के साथ देखना चाहते हो और संन्यास जीवन की भी अंतिम पराकाष्ठा तक पहुंचना चाहते हो, और तुम चाहते हो कि तुम भगवान शिव को साक्षात देख सको कि वे कैलाश पर मां पार्वती से बात कर रहे हैं, और तुमने प्रश्न किया कि क्या तुम विष्णु लोक, इंद्रलोक में विचरण कर सकते हो, क्या पूरा शरीर अंगूठे के आकार का हो सकता है? तो शास्त्रों में तो इसके बारे में कहा गया है कि प्रत्येक विधि अपने आपमें इतनी महान है कि एक ही विधि प्राप्त कर लें तब भी व्यक्ति अद्धितीय बन जाता है और उसमें भी बीस साल लगते हैं। तुम्हारे सामने जो वे संन्यासी शिष्य बैठे हैं, उनमें से किसी को, कोई मंत्र सिखा रहाहूं, किसी कोई मंत्र सिखा रहा हूं, किसी को कोई और मंत्र सिखा रहा हूं पंद्रह-बीस साल से और तुमने आकर के एक साथ छः की छः चीजों को मांग लिया, मेरे सामने रख दिया। यह असंभव है। कोई गुरु यह ज्ञान दे ही नहीं सकता क्योंकि उनको मालूम ही नहीं है।



और गोविंदपादाचार्य ने कहा आने वाली पीढ़ियां फिर सात चक्रों में उलझ जाएगी, उनको मालूम ही नहीं होगा कि 108 चक्र कहां होते हैं और जब ज्ञात ही नहीं तो कोई गुरु चक्रों को जाग्रत करेगा कैसे और जाग्रत नहीं करेगा, तो फिर रोम-रोम से मंत्र ध्वनि होगीकैसे और देह को प्राणों में परिवर्तित करेगा कैसे जिससे देह सुरक्षित रहे।

शंकर ने यही चाहा कि उसे यह सब प्राप्त हो कि वह प्रत्येक लोक में यात्रा कर सके एक सैकण्ड में। यह कितना आनंददायक तथ्य, कितने आनंददायक प्रश्न है। क्या आपको अपने जीवन में कोई ऐसा गुरु मिला जो यह सब दे सके? शंकर को मिला मगर गुरु मिलने से पहले

उसने भगवान शिव की पूर्ण साधना की, एक पैर पर खड़े होकर के, पत्ते खाकर के। वह चाहता था कि उसे एक ही साधना करनी है उतनी उम्र उसके पास थी ही नहीं, उम्र केवल 21 या 22 साल बची थी ओर उसने सोचा कि पूरे आर्यावर्त को अपनी मुट्ठी में कस लेना है। मंत्रमय बन जाना है, चेतनामय बन जाना है, पूरे ब्रह्माण्ड में यात्रा कर लेनी है और यह दिखा देना है कि मैं आचार्य हूं। मैं दिखा देना चाहता हूं कि मेरे चेहरे में अपूर्व ओज है। मैं दिखा देना चाहता हूं कि इतनी चुंबकीय शक्ति है कि जिसको चाहूं अपने अनुकूल बना सकता हूं चाहे वह कोई भी व्यक्तित्व हो मेरे सामने खड़ा नहीं रह सके।

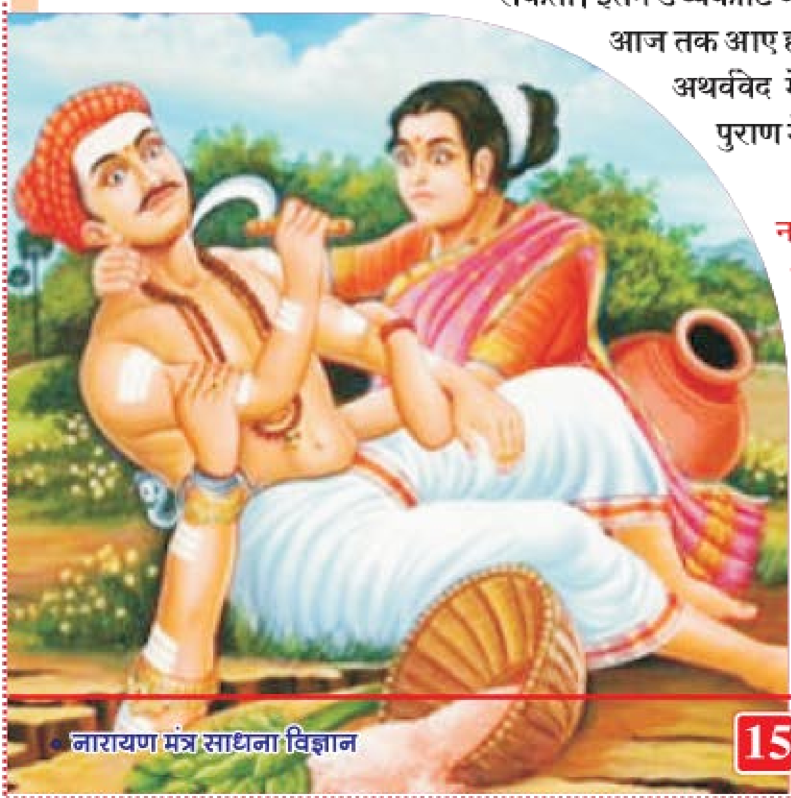


शंकर ने कहा सबसे बड़ी बात तो यह कि मैं सारे 108 चक्रों को एक साथ जाग्रत करना चाहता हूं और मैं सीखूंगा तो आपसे ही क्योंकि इस विधि का और कोई गुरु ज्ञाता है ही नहीं। मृत देह को वापस जाग्रत करने का संजीवन ज्ञान और किसी के पास है ही नहीं। वृद्धावस्था में बिल्कुल मृत्यु के सन्निकट आए व्यक्ति को पूरा जीवन दे दे दिया जाए, उसको ठीक कर दिया जाए वह विद्या किसी के पास नहीं है, उन लोकों में विचरण कर लिया जाए जो अद्‌भुत हैं, वह विद्या किसी के पास नहीं है। क्या मैं एक मरे हुए व्यक्ति को वापस जीवित कर सकता हूं?

तो गोविंदपादाचार्य ने कहा तुम तब ऐसा कर सकते हो जब एक पूर्ण गुरु तुम्हें मिले, जब उस गुरु के प्रति पूर्ण तुम्हारी भावना हो और वह पूर्ण प्रसन्न होकर तुम्हारे चक्रों को जाग्रत कर दें।

शंकर ने कहा मैं तैयार हूं।

गोविंदपादाचार्य ने कहा नहीं। यह आज संभव नहीं है और यह भी जरूरी नहीं कि तुम मंत्र जप करो। मगर यह नवरात्री में सिद्धिदात्री के दिन ही संभव है। उस विशेष मुहूर्त के न पहिले न बाद में, सिद्धि तभी प्राप्त हो सकती है। इतनी उच्चकोटि की दीक्षा तभी मिल सकती है। इससे पहले नहीं मिल सकती। तुमने सारे शास्त्रों को एक साथ इकट्ठा करके रख दिया है, यह एक मनुष्य के दिमाग का विचार नहीं हो सकता। इतने उच्चकोटि के प्रश्न तुम्हारे दिमाग का विचार नहीं हो सकता। इतने उच्चकोटि के प्रश्न तुम्हार मानस में नहीं आ सकते, किसी के मानस में आज तक आए ही नहीं एक साथ। न ऋग्वेद में आया, न यजुर्वेद में आया, न अथर्ववेद में आया, न सामवेद में आया, न उपनिषद में आया, न पुराण में आया। यह किसी और के मस्तिष्क के प्रश्न है।



भगवान शिव के अलावा कोई और इस ज्ञान को बता ही नहीं सकता जिससे एक मृत व्यक्ति को जीवित कर सकें। चेतना दे सकें, रोग रहित कर सकें, अपने आपको चुंबकीय कर सकें और कुण्डलिनी के 108 चक्र जाग्रत कर सकें। मैंने स्वयं जब गोविंदपादाचार्य और शंकराचार्य के इस भाष्य को पढ़ा तो आश्चर्यचकित रह गया कि क्या हम सब अभी तक अंधेरे में भटक रहे हैं, क्या मैं अपने शिष्यों को समझ नहीं पा रहा हूं। अपने शिष्यों को एक बार में ही नहीं सब दे दिया जाए कि उनका चेहरा अपने आप में बहुत सम्मोहक बन जाए, इतनी ताकत आ जाए, क्षमता आ जाए कि सारा वेद



पुराण का ज्ञान प्राप्त हो जाए, फिर यह जरूरत रहे ही नहीं कि यह मंत्र जप करें, या वो साधना करें।

शंकराचार्य ने कहा मुझे कोई साधना करनी ही नहीं, क्योंकि उम्र ही मेरे पास कम है। मुझे और कोई साधना चाहिए ही नहीं क्योंकि भगवान शिव ने कहा है कि इन छः तथ्यों से मिलकर ही सर्वांगपूर्ण व्यक्तित्व बन सकता है, और यह साधना चूक गए शंकर तो तुम जीवन चूक जाओगे, पूरा जीवन खोखला और निरर्थक हो जाएगा और भगवान शिव ने यह भी कहा कि यह ध्यान रखना कि वरदान मांगना गुरु से तो एक ही मांगना, कि मेरे पूरे 108 चक्र जाग्रत हो केवल सात चक्र नहीं। वे तुम्हें बहलाएं, भटकाएं कुछ भीकरें, तुमने मेरी साधना की है मैं तुम्हें उसी जगह पहुंचा रहा हूं जहां तुम्हें यह सब प्राप्त हो सकता है। वही गुरु तुम्हें संजीवनी विद्या दे सकता है, वे गुरु मृत व्यक्ति को जीवित कर के प्रत्येक रोम-रोम में किस प्रकार से अग्नि ज्वाला पैदा की जा सकती है, वे जानते हैं कि वरदान देने की क्रिया कहां से आ सकती है, शाप देने की क्रिया कहां से आ सकती है यदि कुण्डलिनी पूरी जाग्रत है, तो जो आप बोले वह सत्य हो ही। उसको वरदान कहते हैं और यदि अपने क्रोध में किसी को कह दिया तो वह भस्म होगा ही, समाप्त होगा ही, चाहे वह आपका कैसा भी प्रबल शत्रु हो, यह वरदान देने का और शाप देने का ज्ञान तभी आ सकता है चेतना तभी आ सकती है जब आपका पूरा शरीर एवं कुण्डलिनी जाग्रत हो।

गोविंदपादाचार्य ने कहा ऐसा हो पाने के लिए आवश्यक है कि तुम पूर्ण तन्मयता से विकार रहित होकर गुरु सेवा एवं समर्पण करो। क्या तुम ऐसा कर सकोगे?

शंकराचार्य ने कहा अगर मेरे जीवन के 21 साल बचे हैं तो आप कहें तो मैं 20 साल भी आपकी सेवा करने को तैयार हूं। एक साल भी फिर मेरे लिए सब कुछ प्राप्त करने के लिए बहुत होगा। मगर मैं यह अवसर नहीं चूकना चाहता क्योंकि फिर गोविंदपादाचार्य जैसे, आप जैसे गुरु मुझे नहीं मिलेंगे, फिर भगवान शिव की मेरी वह आराधना बेकार जाएगी, फिर जो इस जीवन में चाहता हूं कि सारे रहस्य देखूं वह नहीं हो सकेगा। मैं चाहता हूं सारे विद्वान मुझसे परास्त होंगे, मेरे सामने खड़े ही नहीं रह सकें।

और शंकराचार्य ऐसे ही बने उनके सामने कोई विद्वान टिक नहीं पाया चाहे वह काशी में रहे, या उज्जैन में रहे। इसीलिए वे आचार्य कहलाए। मंडल मिश्र को भी उनके सामने हारना पड़ा, उनके चरणों में झुकना पड़ा जो कि उस समय का संसार का श्रेष्ठ विद्वान था और शंकर एक स्थान से कायाकल्प करके दूसरे स्थान में जा सके। जब मंडन मिश्र और शंकर का शास्त्रार्थ हुआ तो मंडन मिश्र ने कहा मैं तुम्हें बहुत उच्च कोटि का विद्वान नहीं मानता हूं क्योंकि मैं संसार का श्रेष्ठ विद्वान हूं मुझे सारे वेद कंठस्थ हैं, पुराण कंठस्थ हैं, शास्त्र कंठस्थ हैं। आप जो भी कहें वह श्लोक में उच्चरित कर सकता हूं, आप मुझसे शास्त्रार्थ करें।

शंकराचार्य ने कहा मैं आया ही इसलिए हूं क्योंकि जो कुछ मैंने प्राप्त किया है, वह तुम प्राप्त कर ही नहीं पाए हो, इसलिए मैं तुमसे जीत जाऊंगा।



मंडन मिश्र की पत्नी भी विदूषी थी। तो शंकराचार्य ने जब मंडल मिश्र को पराजित किया तो मंडन मिश्र की पत्नी प्रश्न किया और कहा कि पत्नी, पति की अर्द्धांगिनी होती है, मुझे आप हराएंगे, तभी मंडन मिश्र पराजित माने जाएंगे। मंडल मिश्र की पत्नी ने गृहस्थ जीवन से संबंधित प्रश्न पूछा तो एक राजा के शरीर में परकाया प्रवेश द्वारा प्रवेश करके शंकराचार्य ने गृहस्थ को भी देखा कि गृहस्थ क्या होता है और मंडन मिश्र और उसकी पत्नी को पराजित होकर उनका शिष्य बनना पड़ा।



और शंकर ने गृहस्थ भी देखा, संन्यास जीवन को भी देखा, ब्रह्म लोक और रूद्रलोक को भी देखा, अपने ऊपर एक चुंबकीय आकर्षण भी पैदा किया और सारे शरीर को मंत्र मय भी बनाया और पूरे भारतवर्ष में, पूरे आर्यावर्त में शंकर जैसा एक व्यक्तित्व ही बना और हम आज भी कहते हैं कि शंकर भाष्य जैसा ग्रंथ बन ही नहीं सकता, अगले दस हजार साल तक भी वैसा ग्रंथ बन ही नहीं सकता और शंकर जैसा व्यक्तित्व भी वापस पैदा नहीं हो सकता।

यह क्या चीज है? हम कब तक घिसटते हुए जीवन व्यतीत करते रहेंगे? आपने अपने जीवन में पोथियां पढ़ी कि सात चक्र हैं मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्र और सहस्रार चक्र और जाग्रत एक भी हुआ नहीं और पोथियां पढ़-पढ़ के हजारों लोगों ने कुण्डलिनी जागरण करने की क्रिया शुरू कर दी। मगर क्या गोविंदपादाचार्य गलत थे? क्या शंकर भाष्य गलत है?

गोविंदपादाचार्य ने शंकर से कहा मैं तुम्हें अद्वितीय बनाऊंगा, मैं बताऊंगा कि तुम कैसे अपने शरीर को दूसरे शरीर में परिवर्तित कर सकते हो, मैं बताऊंगा कैसे किसी रोगी को वापस जीवन दे सकते हो। मैं तुम्हें बता सकता हूं पूर्ण संजीवनी विद्या किसे कहते हैं, मैं तुम्हें सिखाऊंगा। मैं तुम्हें बता सकता हूं कैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर एक क्षण में जा सकते हैं। मैं सिखा सकता हूं कि कैसे उस काल को देख सकते हैं कि एक जीवन पहले या दो जीवन पहले तुम क्या थे आगे दो जीवन में क्या है और दो घंटे बाद क्या घटना घटित होने वाली है और सारा वेद सारे उपनिषद्, सारे शास्त्र अपने आप तुम्हारे शरीर में समाहित कर सकता हूं। मगर यह हो सकता है केवल सिद्धिदात्रि के दिवस पर।



और मैं भी इस दिवस पर जब संन्यासी शिष्यों के पास जाता हूं तो वे कहते हैं कि आज तो आप केवल 108 कुण्डलिनी जागरण की दीक्षा दीजिए। इसके अलावा हमें कुछ चाहिए ही नहीं आज क्योंकि ऐसा दिन फिर वापस जीवन में आ ही नहीं सकता ओर आज के दिन हम वह प्राप्त ही नहीं कर पाएं तो सब व्यर्थ है। हम बीस साल से तीस साल से केवल आपके नाम का स्मरण कर रहे हैं कोई साधना नहीं कर रहे हैं, आप दीजिए तो यह उच्च कोटि की दीक्षा दीजिए।

और अगर मैं उनको दे सकता हूं वह दीक्षा तो मेरे गृहस्थ शिष्यों में क्या कमी है, उनको क्यों नहीं दूं। उन संन्यासी शिष्यों में क्या विशेषता है और गृहस्थ शिष्यों में क्या न्यूनता है?



ये छः की छः साधनाएं जो शंकराचार्य ने एक ही दीक्षा के द्वारा अपने गुरु गोविंदपादाचार्य से प्राप्त की ये अपने आप में अद्वितीय है, देव दुर्लभ हैं, श्रेष्ठतम हैं और प्रत्येक संन्यासी के लिए अगर आवश्यक है तो प्रत्येक गृहस्थ के लिए तो और भी आवश्यक है जिससे कि पहले से उन्हें पता लग जाए कहां सममस्याएं आने वाली हैं। हम जानना चाहते हैं कि भगवान शिव का साक्षात स्वरूप क्या है? हम उन्हें देख नहीं पाते और केवल ॐ नमः शिवाय का जप करते रहते हैं।

शंकराचार्य ने पूछा- या मैं अपनी आँखों से कैलाश पर्वत देख सकता हूं, क्या ब्रह्म लोक देख सकता हूं, क्या इंद्र लोक देख सकता हूं, क्या उन अप्सराओं को देख सकता हूं, क्या सिद्धाश्रम को देख सकता हूं?

और गोविंदपादाचार्य ने कहा अवश्य देख सकते हैं। सिद्धिदात्रि के अवसर पर आप मेरे पास आना, मैं अवश्य तुमको वह दीक्षा दूंगा।

और संन्यासियों के लिए यह दीक्षा महत्वपूर्ण है तो गृहस्थ के लिए भी महत्वपूर्ण है। गृहस्थ भी अपने आप में उतना ही कठिन जीवन है जितना संन्यास है, संन्यास से ज्यादा कठिन गृहस्थ है तो मैं अपने गृहस्थ शिष्यों को उस जगह क्यों नहीं पहुंचाऊं जहां संन्यासी शिष्यों को पहुंचा रहा हूं। उनके लिए भी मेरा वही धर्म वही कर्त्तव्य है, संन्यासियों के लिए यह दिवस महत्वपूर्ण है तो गृहस्थों के लिए भी अद्वितीय है। मगर अद्वितीय तब है जब आप गुरु से इस दिन सिद्धिदात्रि के दिन वह दीक्षा प्राप्त कर सकें।

और यह साधनाएं यह दीक्षा आपको कहीं और मिल नहीं सकती बार-बार ऐसा गुरु मिल नहीं सकता जो एक साथ छः की छः क्रियाओं को प्रदान कर सके, बार-बार ऐसी जीवन में स्थिति बन नहीं सकती, बार-बार ऐसी चेतना मिल नहीं सकती, बार-बार ऐसा कोहिनूर मिल नहीं सकता और यह दीक्षा मैंने पिछले पचास साल में दी ही नहीं। देना संभव ही नहीं था, क्योंकि शिष्य उस स्थिति तक पहुंचे नहीं थे कि ग्रहण कर सकें। मगर मैं कोई ज्ञान दबा कर रखना नहीं चाहता और क्रोध और जिद मुझे इस बात पर आई कि संन्यासियों ने कहा ऐसी दीक्षा हम ही प्राप्त कर सकते हैं। मैंने कहा अगर तुम प्राप्त कर सकते हो तो मेरे गृहस्थ शिष्य भी प्राप्त कर सकते हैं। उनको भी मैं यह दीक्षा दूंगा हर हाल में दूंगा।

उन्होंने कहा ये तो मलमूत्र से भरे शरीर हैं।

मैंने कहा मैं इन्हें प्राणमय बना दूंगा। अगर यह देह है, मल-मूत्र से भरी है तो मैं इसे प्राणमय बना दूंगा जहां अन्नकोष की जरूरत ही नहीं रहे, खाने की जरूरत ही नहीं रहे, पीने की जरूरत ही नहीं रहे। अन्नमय कोष को प्राणमय कोष में परिवर्तित ही तो करना है, परिवर्तित करने से ये उस जगह पहुंच जाएंगे जहां तुम पहुंचे हुए हो, उसके बाद वे छः माह की छः साधनाएं उन्हें एक साथ दे दूंगा।



यही कशमकश मेरी उन संन्यासियों के साथ चली। वे सब उत्सुक होकर सोचते हैं कि यह तो बिल्कुल एक नयी पगडंडी नया रास्ता बना रहे हैं, जिनको देना ही नहीं चाहिए, उनको दे रहे हैं एक दुर्लभ ज्ञान कि वे गृहस्थ कल

को कुछ भी कर लेंगे।

और मैं उनको कहता हूं कि मैं चाहता हूं मेरे गृहस्थ शिष्य इतने सक्षम बने कि कुछ भी कर सकें और संसार में उन जैसा किसी का व्यक्तित्व ही न हो। यही चाहता हूं मैं।

वे कहते हैं यह जिद है आपकी और मैं कहता हूं कि अगर जिद नहीं है, हठ नहीं है तो पौरुष भी क्या है आपका। कोई संन्यासियों का ठेका थोड़े ही ले रखा है कि वे ही सब कुछ करेंगे। गृहस्थ शिष्यों से भी मेरा उतना ही प्रेम है जितना संन्यासी शिष्यों से है, शायद उनसे भी ज्यादा है क्योंकि गृहस्थ शिष्य पैरों से आकर लिपट जाते हैं, एक क्षण भी आँखों में आंसू निकलने छूटते नहीं हैं, इतना आप शिष्य प्यार करते हैं।



जब मैंने उन संन्यासी शिष्यों से कहा कि मैं यह दीक्षा तुम्हें दे रहा हूं तो उन गृहस्थों को भी दूंगा।

तो वे बोले क्या सारे गृहस्थ शिष्यों को देंगे?

मैंने कहा मैं एक-एक गृहस्थ शिष्य को दूंगा, प्रत्येक बच्चे को दूँगा। बाहर ही नहीं जो गर्भस्थ शिशु होगा, उसे भी दूंगा।

तो ऐसी दीक्षा मैं दे सकता हूं आवश्यकता है आपके समर्पण की, प्रेम की, दृढ़ता की। आप इन साधनाओं को चाहे चमत्कार कीजिए, चाहे विश्वास कहिए, चाहे विश्वास न कीजिए। आप विश्वास नहीं करेंगे तो ये आपके जीवन के पाप हैं जो आपके सामने आकर खड़े होंगे। जीवन में कई रूपों में पाप सामने आकर खड़े होते हैं, कभी बेटे के रूप में पाप आते हैं, कभी अविश्वास के रूप में, कभी पत्नी के रूप में आते हैं जो आपको साधना करने से रोकते हैं, कभी संशय के रूप में पाप सामने आकर खड़े हो जाते हैं।

ये जीवन की न्यूनता है क्योंकि आप गृहस्थ जीवन में है। मगर मैं भी गृहस्थ हूं। यदि मैं इन सिद्धियों को प्राप्त करके सफलता प्राप्त कर सकता हूं तो आप भी कर सकते हैं और आपको मैं करवाऊंगा ही, हर हालत में करवाऊंगा।

जो आपके अंदर अंधकार है उसे दूर करने की आवश्यकता है। संशय आपके जीवन का अंग है कि मैं जिंदा हूं या मरा हुआ हूं, जिसको संशय है वह जीवन में कुछ कर नहीं सकता। सियार जीवन में शेर बन नहीं सकते और शेर बनना है तो हुंकार करनी ही पड़ेगी, उछल कर हाथी पर प्रहार करना ही पड़ेगा, उसके मस्तिष्क को फाड़ना ही पड़ेगा। तभी शेर बन सकते हैं।



और आपको मैं शूकर या सियार बनाना नहीं चाहता हूं, आपको मैं शेर बनाना चाहता हूं कि आप दहाड़ें तो शत्रु आपके सामने टिक ही नहीं सकें और यह मेरी जिद्द है, हठ है तो है कि यह दीक्षा दूंगा पूर्णता और चैतन्यता के साथ दूंगा, केवल पुरुषों और स्त्रियों को ही नहीं अगर पेट में बालक है तो उन्हें भी यह दीक्षा दूंगा।

आप आगे बढ़कर गुरु से यह दीक्षा प्राप्त कर सकें, श्रेष्ठतम बन सकें। अद्वितीय बन सकें और जीवन में वे छः की छः स्थितियाँ प्राप्त कर सकें जो शंकराचार्य ने प्राप्त की

ऐसी ही कामना करता हूं, हृदय से आशीर्वाद देता हूं।

समस्त 108 कुण्डलिनी जागरण दीक्षा पूरे जीवन का सौभाग्य है। सिद्धाश्रम में बैठे योगियों, संन्यासियों के लिए भी यह दुर्लभ है और गृहस्थ शिष्यों के लिए तो संभव ही नहीं है कि प्रत्येक रोम से मंत्र उच्चरित हो और जो संभव नहीं है वही मैं संभव करके दिखाऊंगा।

जो संभव नहीं है वही जीवन में करके दिखाना है। मेरा पूरा जीवन एक जिद्द पर जिंदा रहा है, एक संघर्ष पर जिंदा रहा है, एक निश्चय पर जिंदा रहा है। जो और मना करेंगे वह काम करूंगा ही मैं क्योंकि मेरा पूरा जीवन विद्रोही रहा है और अंतिम क्षण तक विद्रोही रहेगा।

आप मुझसे कुछ लेकर जाएं तो एक अद्वितीय चीज लेकर जाएं, ऐसी दुर्लभ चीज लेकर जाएं कि किसी योगी को यति को, तांत्रिक को, गुरु को बताएं तो वह टुकुर-टुकुर ताकता रहे कि ऐसा कैसे संभव हुआ। यह ज्ञान कहीं मिल नहीं पाएगा, किसी ग्रंथ में नहीं मिल पाएगा। यह केवल इस जीवित ग्रंथ में मिल पाएगा और कहीं नहीं मिल पाएगा। संभव ही नहीं है।

और यह मेरी जिद्द है कि आपको अद्वितीय बनाना है। अद्वितीय का अर्थ है कि आपके समान दूसरा कोई न हो। ऐसे ही आप अद्वितीय बन सकें इस दीक्षा के माध्यम से ऐसा मैं आशीर्वाद देता हूं, कल्याण कामना करता हूं।



सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

तिब्बती धनप्रदाता

लामा यंत्र



405/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहचान करा ही देती हैं... इसके लिए कहने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो अपनी उपस्थिति मात्र से, अपनी सुगन्ध से ही आस-पास के लोगों को एहसास करा देती है, अपने होने का....

उत्तम कोटि के मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दिव्य यंत्रों के लिए भी किसी विशेष साधना की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे यंत्र तो स्वयं ही दिव्य रश्मियों के भण्डार होते हैं, जिनसे रश्मियां स्वत: ही निकल कर सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति एवं स्थान को चैतन्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा अवश्य है परन्तु तंत्र क्षेत्र में जो उपलब्धियां तिब्बत के बौद्ध लामाओं के पास हैं, वे आम आदमी को आश्चर्यचकित कर देने और दांतों तले उंगलियाँ दबा लेने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसे ही एक सुदूर बौद्ध लामा मठ से प्राप्त गोपनीय पद्धतियों एवं मंत्रों से निर्मित व अनुप्राणित यह यंत्र साधक के आर्थिक जीवन का कायाकल्प करने के लिए पर्याप्त है।

इस यंत्र का स्थापन एवं मंत्र जप तिब्बती लामाओं को धन-धान्य, समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है, फिर अभाव उसके जीवन में नहीं रहते, ऋण का बोझ उसके सिर से हट जाता है और उसे किसी के आगे हाथ नहीं पसारने पड़ते। आप भी इसका स्थापन करें एवं साधना द्वारा इसका लाभ प्राप्त करें।

विधान

किसी भी रविवार की रात्रि को यह यंत्र लाल कपड़े पर चावल की ढेरी पर स्थापित करें एवं फिर यंत्र के सम्मुख 15 मिनट तक निम्न मंत्र का उच्चारण करें और यंत्र को उसी लाल कपड़े में मौली से बांधकर अपनी पैसे रखने के स्थान में रख दें फिर जब समय मिले तो रविवार को इस मंत्र का 15 मिनट जप कर लिया करें। इससे आपके घर में अर्थ वृद्धि होगी।

मंत्र

।। ॐ मणिपद्मे धनदायै हुं फट् ।।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-



अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 796003



30.07.2020

या किसी भी शुक्रवार को

भोग और मोक्ष को धारण करने की साधना है

बीजावली षोडशी

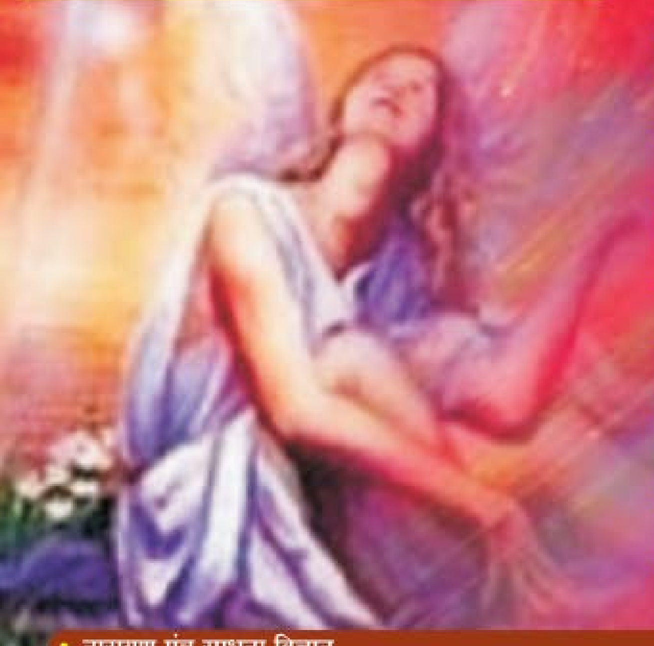
जीवन तभी श्रेष्ठ कहलाता है, जब वह सभी दृष्टियों से पूर्ण हो, जैसे कोई आनन्दमय उत्सव हो एवं वह भोगों का संयमपूर्वक उपयोग करता हुआ भी मोक्ष में स्थित रहता है।

यह सुनने में विरोधाभास जैसा लगता है, परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि जब तक भोग को समझा नहीं जाता, तब तक मोक्ष की प्राप्ति भी सम्भव नहीं है। जब तक व्यक्ति किसी चीज का स्वयं अनुभव नहीं कर लेता, तब तक उस चीज से मुक्त होना असम्भव है। यही कारण है, कि अगर मोक्ष की स्थिति प्राप्त करनी है, तो पहले भोग को भी समझना जरूरी है, उसे स्वीकार करना आवश्यक है, क्योंकि वह स्थिति मोक्ष की ओर अग्रसर होने की पहली सीढ़ी है।

भोग से मोक्ष प्राप्ति

आजकल तो सभी धर्म भोग एवं इन्द्रियों से प्राप्त समस्त सुखों के विरुद्ध हैं, वे इन्द्रियों का दमन करने पर जोर देते हैं। तथाकथित साधु-संन्यासी, धर्मगुरु भी वही बात कहते हैं, फलतः उनका व्यक्तित्व दो भागों में बंटकर रह जाता है, क्योंकि प्रकृति ने शरीर की संरचना इस प्रकार से की है, कि उसकी कुछ मूलभूत आवश्यकताएं हैं, जिनका किसी प्रकार दमन नहीं किया जा सकता है।

और जो प्राकृतिक नियमों का दमन करने में लग जाता है, वह एक प्रकार से खुद से ही लड़ने लग जाता है, वह अपनी इच्छाओं का दमन करने लग जाता है फलस्वरूप वह अन्दर तो वैसा का वैसा ही रह जाता है जैसा पहले था, परन्तु बाहर से अपने आपको ब्रह्मचारी व वीतरागी सा दिखाने की चेष्टा करता है। इस प्रकार वह व्यक्ति पाखण्डी मात्र बनकर रह जाता है। अन्दर उसके कुछ और चलता रहता है और बाहर वह कुछ और ही दिखाने की चेष्टा करता रहता है। इसका कारण है दमन, इसका कारण है भोग को अस्वीकार करना। ऐसे व्यक्ति जब भोग को अस्वीकार करने का दिखावा करते हैं, तो न वे भोग ही प्राप्त कर पाते हैं और न ही उसका अन्तिम चरण यानि मोक्ष को, क्योंकि उनके अन्दर तो सारी इच्छाएं व कामनाएं दबी ही रहती हैं।



मोक्ष का अर्थ ही होता है वह स्थिति, जब कोई इच्छा या वासना शेष न रहे और यह निर्वाण की स्थिति तभी प्राप्त हो सकती है, जब भोग द्वारा अपनी सभी इच्छाओं और कामनाओं को भोग लिया जाए। यह बात अन्तिम ही है, क्योंकि कामनाओं की पूर्ति बिना उनसे कौन मुक्त हो सकता है ? जैसे हमारे ऋषि-मुनि भी गृहस्थ आश्रम में रहे परन्तु पूर्ण संयमपूर्वक। हमें उनके गृहस्थ शब्द को परिभाषित करने के लिए उनके पूरे दिन की दिनचर्या का अध्ययन करना चाहिए जिसमें अध्यात्म की प्रचुरता रहती है। थोड़े से शब्दों में कहा जाए, तो भोग और मोक्ष दो नहीं एक ही है, इनमें कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि एक 'कार्य' है तो दूसरा 'परिणाम' है। अगर व्यक्ति अपने जीवन को पूर्णता के साथ भोग सके, तो वह मोक्ष में स्थित हो जाता है।



सभी सयाने एक मत

चाहे कोई भी मत हो, चाहे तंत्र, योग अथवा अन्य कोई भी, वे सभी इस बात को मानते हैं और जानते हैं, कि जब तक व्यक्ति अपनी इच्छाओं को पूरी नहीं कर लेता, तब तक वह आगे की सीढ़ी अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकारी नहीं होता।

तंत्र तो यहां तक कहता है कि अगर भोग बीज है, तो मोक्ष उसी से उत्पन्न एक विशाल छायादार वृक्ष है। यदि भोग कली है, तो मोक्ष उस कली का एक अत्यधिक सुन्दर पुष्प के रूप में प्रस्फुटन है, इसलिए भोग और मोक्ष में कोई अन्तर नहीं है।

तंत्र हर चीज को पूरी तरह से स्वीकार करने पर अधिक जोर देता है, क्योंकि उसके लिए सभी स्थितियां दिव्य हैं, उसके लिए सभी स्थितियां कल्याणकारी हैं और उनमें आपस में कोई भेद नहीं है, यही है तंत्र की क्रांतिकारी अद्वैत दृष्टि।

भोग का अर्थ सिर्फ वासना नहीं है जैसा कि आजकल लोग तुरन्त समझ लेते हैं। जिस दिन व्यक्ति यह समझ लेता है कि संयम के साथ आनन्दमय जीवन जीना ही पूर्ण जीवन है, उसी क्षण से उसे दमन करने की आवश्यकता नहीं रह जाती और उसका खण्डित व्यक्तित्व तत्क्षण एक इकाई बन जाता है। इसी स्वीकार के कारण व्यक्ति को फिर कभी दमन की आवश्यकता नहीं पड़ती, अपितु उसका भोग स्वत: ही रूपान्तरित होकर 'मोक्ष' बन जाता है।

तब वह व्यक्ति पूर्णत: इच्छारहित और कामना रहित होकर भी नाना भोगों को भोगता हुआ मिल सकता है। राजा जनक के बारे में कौन नहीं जानता, वे तो 'विदेह' कहलाते थे अर्थात् जिसे अपनी देह का भी भान न हो, परन्तु फिर भी वे राज्य का संचालन करते रहे और पूर्णत: भोगमय वातावरण में रहे।

भगवान कृष्ण पूर्ण भोगमय वातावरण में रहते हुए भी पूर्णत: उन्मनीय अवस्था में रहते थे और पूरे विश्व में जगद्गुरु की तरह पूजे गए।

ऐसे कितने ही उदाहरण दिए जा सकते हैं, जब व्यक्ति पूर्णत: मोक्ष में रहता हुआ भी भोग को निर्लिप्त भाव से भोगता रहता है। परन्तु यह भी सत्य है, कि मोक्ष कि स्थिति पर पहुंचने का मार्ग भोग ही है, फिर चाहे इस स्थिति पर बुद्ध पहुंचे हो या शंकराचार्य पहुंचे हो या महावीर....

और यह स्थिति जीवन में कोई भी प्राप्त कर सकता है, लेकिन पहले इसके लिए सभी दबी इच्छाओं, कामनाओं का पूरा करना आवश्यक है, इसके लिए कई उच्चकोटि की तांत्रिक साधनाएं हैं, जिनको सम्पन्न करने से व्यक्ति की समस्त कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। उसके जीवन में लक्ष्मी, मान, सम्मान एवं ऐश्वर्य की बहुतायत हो जाती हैं। उसे किसी भी प्रकार की कमी नहीं खलती और वह जीवन में जो कुछ भी चाहता है, वह उसे स्वत: प्राप्त हो जाता है।

चाहे प्रमोशन हो, चाहे व्यापार वृद्धि, इच्छित विवाह, ऊंचा पद या कुछ और, व्यक्ति को सब प्राप्त होता है। इस प्रकार इच्छाओं को पूर्ण करते हुए वह उस स्थिाति को भी प्राप्त कर लेता है, जहां कोई इच्छा, वासना या कामना शेष नहीं रह जाती। इसके बाद तो वह स्वयं ही 'मोक्ष' प्राप्ति की ओर अग्रसर हो जाता है और कृष्ण, महावीर, बुद्ध आदि की श्रेणी में आ जाता है।

बीजावली षोडशी साधना



यह एक अति तीव्र व शीघ्र फलदायी तांत्रिक साधना है। तांत्रिक ग्रन्थों में इसकी अत्यधिक प्रशंसा की गई है। उच्च कोटि के योगियों व तांत्रिकों ने तो यहां तक कहा है, कि जिसने बीजावली षोडशी साधना सम्पन्न कर ली, फिर उसे अन्य कोई साधना करना आवश्यक ही नही रह जाती। वास्तव में ही यह साधना अपने आप में ही श्रेष्ठ, उपयोगी, जनकल्याण के लिए उत्तम है। इस साधना को सम्पन्न कर लेने मात्र से ही व्यक्ति नर से नारायण बनने की दिशा में अग्रसर होने लग जाता है।

साधना विधि

यह साधना 30.07.20 को करें या किसी शुक्रवार को करें। यह एक दिवसीय है।

साधक को सफेद वस्त्र धारण कर प्रात: 5 बजे इस साधना को आरम्भ करना चाहिए। सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें। अपने सामने सफेद बाजोट पर अक्षत की ढेरी पर 'बीजावली षोडशी यंत्र' स्थापित करें।

यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य से पंचोपचार पूजन करें, फिर भोग एवं मोक्ष के प्रतीक रूप में एक 'गौरी शंकर रुद्राक्ष' यंत्र पर अर्पित करें और दोनों स्थितियों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें।

तत्पश्चात् 'इच्छापूर्ति माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें'

मंत्र

।। श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐ ह्रीं श्रीं सौ: क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं ।।

Shreem Hreem Ayeim Kleem Soum Shreem Hreem
Kleem Ayeim Hreem Shreem Souh Kleem Ayeim
Hreem Shreem

साधना करते समय साधना स्थल पर कोई न आए-जाए। भोजन हल्का एवं सात्विक हो। इन नियमों का पालन करते हुए जब साधना समाप्त हो, तो अगले दिन सभी पूजन सामग्री, यंत्र, माला, रुद्राक्ष, अक्षत उसी सफेद वस्त्र में बांधकर किसी जल में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से साधना सिद्ध होती है और साधक अपनी इच्छाओं व कामनाओं को फलित कर पाता है तथा पूर्ण आनन्दमय जीवन जीता हुआ मोक्ष का अधिकारी होता है।

प्रयोग पैकेट न्यौछावर - 540/-

क्या आप अभी तक

संतान सुख से वंचित हैं

अत्रि ऋषि

ने ही तो विधि निकाली है



सन्तानप्राप्ति प्रयोग की

कृति प्रदत्त सभी शक्तियों में कामशक्ति सर्वोच्च रूप से महत्वपूर्ण है इतना तो सभी जानते हैं, कि वंश वृद्धि एवं सन्तानोत्पत्ति में इसी शक्ति का ही योगदान रहता है, परन्तु बहुत कम व्यक्तियों को ज्ञान है, कि यही कामशक्ति अनेकानेक रूपों में रूपान्तरित होकर मानव शरीर को बलिष्ठ, स्वस्थ बनाती है एवं संयम रखने पर यही ऊर्जा ऊपर की ओर प्रवाहित होकर साधक को आध्यात्मिक ऊंचाई प्राप्त करने में सहायक होती है। जब यही काम ऊर्जा क्षीण होती है, तो व्यक्ति का शरीर बलहीन व कान्तिहीन हो जाता है और व्यक्ति जीवन को एक तरह से ढोने को विवश हो जाता है। कामशक्ति के ह्रास का एक और अभिशाप है सन्तानहीन जीवन, जिसके कारण न केवल वंशवृद्धि में बाधा उत्पन्न हो जाती है अपितु समाज में मान-प्रतिष्ठा में भी हानि होती है।

एक सन्तानहीन स्त्री को उसके जीवन में परिवार के तानों के अतिरिक्त समाज के व्यंग बाणों को भी झेलना पड़ता है। पुरुष तो सारा दोष पत्नी के सर मढ़ कर किनारा काट लेता है। जबकि इसके लिए सिर्फ पत्नी ही जिम्मेवार नहीं होती।



सर्वविदित है, कि राजा दशरथ सन्तानहीन थे तथा प्रौढ़ावस्था तक भी उनका महल सन्तान की किलकारियों से वंचित ही रहा। तब वशिष्ठ ने उनको सन्तानोत्पत्ति हेतु साधना एवं यज्ञ करने का निर्देश दिया। इसी साधना के फलस्वरूप राम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न का जन्म हुआ। राजा जनक भी सन्तानहीन थे तथा साधना एवं तपोबल से ही उन्हें सीता जैसी पुत्री की प्राप्ति हुई। कुन्ती के भी सन्तान नहीं थी तथा दुर्वासा ऋषि प्रदत्त मंत्र के द्वारा ही उनके पुत्र हुए। यही नहीं इस अद्भुत दिव्य मंत्र के प्रयोग द्वारा कुन्ती ने माद्री को भी पुत्र प्राप्त करने की विधि प्रदान की।

ऐसे एक-दो नहीं, अनेकों उदाहरण हमारे शास्त्रों एवं ग्रन्थों में मिलेंगे, जबकि मंत्र एवं तंत्र शक्ति द्वारा सन्तानहीन माता-पिता ने सन्तान सुख प्राप्त किया। क्या ये सब मिथ्या हैं, कपोलकल्पित कथाएं हैं? और अगर नहीं, तो क्या आज भी ऐसा सम्भव है?

जहां एक ओर अपने प्राचीन ज्ञान पर से हमारा विश्वास समय के साथ-साथ क्षीण होता गया है, वहीं आधुनिक विज्ञान घूम फिर कर उन्हीं तथ्यों पर पहुंच रहा है, जिनका उद्घोष हमारे ग्रन्थ कर रहे हैं। आज तो विज्ञान उस स्थिति पर जा पहुंचा है, जहां प्रजनन के लिए पिता की आवश्यकता ही नहीं। क्लोनिंग पद्धति द्वारा एक नवजात की उत्पत्ति कर ली गई है। आज जब यह सब हो रहा है, तो हमें आश्चर्य नहीं होता, परन्तु जब हम पढ़ते हैं, कि वाल्मिकी ने अपने तप द्वारा लव जैसे ही एक बालक की सृष्टि कर दी थी, तो हम बात को हंसी में टाल देते हैं।

ऐसा क्यों?

कारण है हमारा दृष्टिकोण, वह आज स्थूल हो गया है। साधना, मंत्र एवं संकल्प शक्ति के अद्भुत बल को हम न पहचानते हैं और न ही स्वीकारते हैं। परन्तु हमारे आपके मानने, न मानने से जो सत्य है उस पर लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता। आज भी मंत्र, साधना आदि उतने ही सार्थक एवं प्रभावी हैं, जितने वे राम, कृष्ण के काल में थे। हाँ! इतना अवश्य है, कि मनुष्य की संकल्प शक्ति, श्रद्धा एवं विश्वास न्यून हो गए हैं, जिनके आधार पर दैविक शक्ति का लाभ प्राप्त किया जाता है।

इसी दैवीय शक्ति एवं साधना के बल पर मानव शरीर में आवश्यक सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है, जिससे सभी व्याधियां, रोग एवं दुर्बलताएं समाप्त होती हैं। इसी प्रकार की साधना है यह 'सन्तान प्राप्ति साधना'।

सन्तानहीन होने के अनेकों कारण हो सकते हैं, जिनमें निम्न प्रमुख हैं

1. पति अथवा पत्नी में शारीरिक दुर्बलता।
2. पत्नी का बार-बार गर्भपात होना।
3. यदि बालक उत्पन्न होने के कुछ ही समय पश्चात् काल का ग्रास बन जाता हो।

इनके अतिरिक्त सन्तान होने के पश्चात् भी अनेकों कारणों से माता-पिता सन्तान सुख से वंचित रह जाते हैं, जैसे कि सन्तान का आज्ञाकारी न होना।

कारण कुछ भी हो निम्न प्रयोग द्वारा पूर्ण सन्तान सुख प्राप्त होता ही है। यह प्रयोग पुत्रदा एकादशी 30 जुलाई 20 को सम्पन्न करें या इसके बाद इसे आप माह के किसी भी सोमवार को सम्पन्न कर सकते हैं। पति-पत्नी दोनों को साथ बैठकर इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए। दोनों स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर लें।

क्या आप जीवन में अभी तक इस अनिवर्चनीय आनन्द से स्वयं को केवल इस कारण से वंचित कर रहे थे, कि यह तो भाग्य में नहीं है, तो बदल डालिए अपने भाग्य को, छोड़ दीजिए इस हीन मानसिकता को, क्योंकि अब आपके पास यह श्रेष्ठत्तम प्रयोग है।

प्रयोग के लिए प्रातःकाल में पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठें। विवाहित युगल सर्वप्रथम 'तांत्रोक्त गुरु पूजन' के अनुसार अथवा 'विशिष्ट गुरु पूजन' ऑडियो कैसेट सुनकर गुरु पूजन करें, फिर 'सन्तान प्राप्ति माला' से गुरु मंत्र की पांच माला जप करें। किसी पात्र में 'सन्तान प्राप्ति यंत्र' स्थापित करें। यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से करें। इसके पश्चात् 'सौभाग्य गुटिका', स्थापित करें व उसका संक्षिप्त पूजन करें।

निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर ग्यारह पुष्प चढ़ाएं

ॐ शान्तिरस्तु।। ॐ तुष्टिरस्तु।।
ॐ पुष्टिरस्तु।। ॐ वृद्धिरस्तु।।
ॐ अविघ्नस्तु।। ॐ आरोग्यमस्तु।।
ॐ पूर्णसमृद्धिरस्तु।। ॐ वेद समृद्धिरस्तु।
ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु।।
ॐ धन धान्यः समृद्धिरस्तु।।
ॐ पुत्र पौत्र समृद्धिरस्तु।।

फिर दोनों पति व पत्नी 'सौभाग्य गुटिका' पर दृष्टि रखते हुए 'संतान प्राप्ति माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें

मंत्र

।। ॐ श्रीं श्रीं ऐं पुत्रान् देहि देहि ह्रीं ह्रीं ॐ शम्।।

Om Shreem Shreem Ayeim Putraan Dehi Dehi Hreem Hreem Om Sham

मंत्र जप पति या पत्नी दोनों में से कोई एक करे तथा दूसरा व्यक्ति साथ में बैठकर निरन्तर मंत्र जप करता रहे, यह प्रयोग चाहे तो सिर्फ पति या पत्नी कोई एक भी कर सकता है। दोनों संयुक्त साधना करें तो श्रेयस्कर होगा।

मंत्र जप के बाद पति माला को धारण कर ले एवं पत्नी गुटिका को एक पीले धागे में पिरोकर गले में धारण कर ले। यंत्र को पूजा स्थान में ही रहने दें। सवा महीने बाद यंत्र, माला तथा गुटिका जल में प्रवाहित कर दें।

यह प्रयोग बहुत सरल, लघु परन्तु अचूक है। यदि आपके सन्तान है, तो भी यह प्रयोग उस सन्तान की उन्नति के लिए कारगर सिद्ध होगा। इस साधना विधि द्वारा निश्चय ही सफलता प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग अनेक दम्पत्तियों ने किया है तथा हर बार सफलता ही प्राप्त हुई है।

न्यौछावर-450/-



नाग पंचमी प्रयोग

शत्रु बाधा निवारण हेतु

नाग पंचमी की साधनाएं अत्यधिक गोपनीय और रहस्यमयी रही है।

इनके जानकारों की संख्या अत्यंत सीमित ही देखने को मिलती है। यूं तो सपेरे बहुत सारे मिल जाएंगे लेकिन उस तंत्र से सम्बन्धित साधक और उसकी साधनाओं को प्राप्त करना अत्यधिक कठिन है इस तंत्र से संबंधित कुछ विशिष्ट साधनाएं एवं प्रयोग होते हैं जो अत्यधिक सफल एवं प्रभावकारी हैं। संक्षिप्त कर्मकाण्ड में ही श्रेष्ठ सफलता को कम समय में प्रदान कर देते हैं।

नाग तंत्र में शत्रुओं को परास्त करने, उन्हें मुंह की खाने के लिए सर्पों को अस्त्रों के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

कई सर्प अस्त्र तो दिव्यास्त्रों की तुलना में आते हैं।

सर्प अस्त्र के प्रयोग से शत्रु, वह चाहे जैसा भी हो, मकड़ी के जाल जैसा फंसकर रह जाता है।

वह चाहे तांत्रिक हो, शारीरिक या सामाजिक शत्रु चाहे जिस भी प्रकार का हो। नाग अस्त्रों की विशेषता यह भी है कि शत्रु इन अस्त्रों के प्रहार में उलझ गया तब तक वह उससे मुक्त नहीं हो सकता है, जब तक उसकी काट या विकल्प का सही ज्ञान उसको नहीं मिल पाता है। उस अस्त्र के माया जाल और कलुषित पीड़ा में वह उलझकर समाप्त हो जाता है या फिर वह मित्रवत समर्पित स्वभव में आ जाता है।



नाग पंचमी के दिन नागास्त्र यंत्र को कच्चे दूध से स्नान करावें और किसी पात्र में लाल वस्त्र के आसन पर स्थापित करें। इसके उपरांत यंत्र पर त्रिशूल के आकार का तिलक लगाते हुए शत्रु समस्या की निजात हेतु कामना करें या शत्रु का नाम लें। साथ ही किसी पात्र में कच्चा दूध और शहद अक्षत के साथ मिश्रित कर रख लें। धूप, दीप आदि से पूजन कर निम्न मंत्र का रक्तबीज माला से 9 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ श्लीं नागास्त्राय नमः ।।

मंत्र जप उपरांत दुग्ध को किसी निर्जन स्थान में विसर्जित कर दें। यंत्र, माला को लाल वस्त्र में लपेटकर अपने घर या पूजा स्थान में आजीवन स्थापित रखे, तब तक शत्रु समस्या नहीं आ सकती है। जब भी कोई शत्रु समस्या अनुभव हो तो एक माला मंत्र जप करें। शत्रु के अहित सोचते ही वह उलझकर रह जाएगा, उसकी गति मति उसी क्षण से भ्रमित होकर समाप्त होनी प्रारम्भ हो जाएगी।

न्यौछावर-450/-



दही हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक होता है। दही में भरपूर मात्रा में कैल्शियम, प्रोटीन और विटामिन पाये जाते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में तो प्राचीन काल से ही दही का बहुत महत्व रहा है चाहे किसी भी प्रकार का उत्सव हो।

नाम भेद : संस्कृत-दधि, हिन्दी-दही, बंगाल-दही, गुजराती-दहि, अंग्रेजी-Curd।

दही में प्रोटीन की क्वालिटी श्रेष्ठ होती है। दही जमने की प्रक्रिया में बी विटामिनों, विशेषकर थायमिन, रिबोफ्लेवीन और निकोटेमाइड की मात्रा दुगुनी हो जाती है। दूध की अपेक्षा दही सरलता से पचता है।

वर्णन : जमे हुए दूध को दही कहते हैं, आयुर्वेद के मत से यह पांच प्रकार का होता है। मन्द, मधुर, मधुराम्ल, अम्ल और अत्यम्ल, जो दूध जमकर कुछ गाढ़ा पड़ गया हो और जिसमें खट्टा, मीठा किसी प्रकार का स्वाद मालूम न हो उस दही को मन्द कहते हैं। जो जमकर गाढ़ा हो गया हो और जिसमें मीठा रस तो प्रगट हो मगर खट्टा रस प्रगट नहीं हुआ हो, उस दही को मधुर या स्वादु कहते हैं। जो दही खट्टा मीठा दोनों रसों से युक्त हो, उसको मधुराम्ल या स्वादु अम्ल दही कहते हैं। जिस दही में मधुरता नष्ट होकर खट्टापन तेज हो गया हो उसको अम्ल दही कहते हैं। जो दही अत्यंत खट्टा हो, जिसके खाने से दांत खट्टे हो जाए और शरीर में रोमांच हो जाए उसको अत्यम्ल दही कहते हैं।

गुण-दोष और प्रभाव : आयुर्वेद मत-आयुर्वेद के मत से दही अम्ल, भारी, वात के विकार को दूर करने वाला, मलरोधक, मूत्रल, बलकारक, कफनाशक, रुचिवर्धक, जलन को दूर करने वाला तथा खाँसी श्वास, पीनस, विषम ज्वर में लाभदायक है।

मदनपाल निघण्टु के मतानुसार दही गरम, अग्नि दीपक, स्निग्ध, कुछ कसेला, भारी, पचने में खट्टा, मलरोधक तथा रक्त-पित्त, सूजन, मेद और कफ को बढ़ाने वाला होता है। मूत्रकृच्छ्र, जुकाम, शीत और विषम ज्वर, अतिसार, अरुचि और दुबलेपन में दही हितकारी है।

मन्ददही - मन्ददही मलमूत्र और दाह को पैदा करने वाला होता है।

मधुर या स्वादु दही - वीर्यवर्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पचने में मीठा और रक्तपित्त को कुपित करने वाला होता है।

स्वादुअम्ल दही - इसके गुण सामान्य दही के समान हैं।

अम्ल दही - दीपन और रक्तपित्त तथा कफ को पैदा करने वाला होता है।

अत्यम्ल दही - रुधिर विकार, वात और पित्त को पैदा करने वाला होता है।

दही की मलाई - दही की मलाई स्वादिष्ट, भारी, वीर्य वर्द्धक, वातनाशक, जठराग्नि को मन्द करने वाली वास्ति रोग नाशक और पित्त तथा कफ को बढ़ाने वाली होती है।

मक्खन निकला हुआ दही - मक्खन निकाले हुए दूध का दही मलरोधक, शीतल, हलका अग्नि दीपक और संग्रहणी रोग को दूर करने वाला होता है।

दही रक्त में कॉलेस्ट्रोल नामक घातक पदार्थ को मिटाने की क्षमता रखता है। यह सख्त पदार्थ रक्त शिराओं में जमकर रक्त प्रवाह को रोकता है। जिससे ओटोरओस क्लीरोसिस नामक हृदय-रोग होता है। चिकने पदार्थ अधिक खाने वाले इसी रोग के शिकार हो जाते हैं। अत: दही का प्रयोग उत्तम है।

पथ्य के अन्दर हमेशा मीठा दही ही काम में लेना चाहिए। क्योंकि मीठा दही रोग नाशक और अति खट्टा दही रोग कारक होता है।

दही में सेंधा नमक और राई का चूर्ण मिलाकर हेमन्त और शिशिर ऋतु में खाने से कफ और वात दूर होते हैं। अग्नि प्रदीप्त

- पेट की गर्मी को दही के सेवन से दूर किया जा सकता है।
- दही का सेवन करने से मुंह के छालों में आराम मिलता है।
- सौन्दर्य बढाने में भी दही का लेप महत्वपूर्ण उबटन माना जाता है।
- पाचन शक्ति बढ़ाने में लिए दही बहुत लाभकारी सिद्ध होती है।
- दही के नित्य सेवन से अपच एवं भूख न लगने जैसी समस्या दूर होती है।
- दही का सेवन करने से इम्युनिटी को मजबूती प्रदान होती है।
- दही मोटापा दूर करने में एक महत्वपूर्ण औषधि है।

होती है। यह शरीर को दृढ़ करता है और अंगों में कांति पैदा करता है। यह एक उत्तम पथ्य है।

दही का तोड़ - कृमिनाशक, बल कारक, रुचिवर्धक, शरीर के स्रोतों को शुद्ध करने वाला, आनन्ददायक, कफ नाशक, तृषानिवारक, वातनाशक, तृप्तिजनक और शीघ्र ही मल के संचय को भेदने वाला है।

उपयोग :

बवासीर : दही का अथवा मट्ठे का लगातार सेवन करते रहने से बवासीर से खून बहना बन्द हो जाता है।

जमाल गोटे की दस्तें : दही में दो माशे कतीरा गोंद पिलाने से जमाल गोटे की दस्तें बन्द होती है।

अतिसार : पके हुए चावलों को दही में मिलाकर खिलाने से अतिसार में लाभ होता है।

अपच : सेंका हुआ पिसा हुआ जीरा, नमक और काली मिर्च दही में डालकर नित्य खाने से अपच ठीक हो जाता है। भोजन शीघ्र पचता है।

सिर-दर्द (आधे सिर में) : दही, चावल और मिश्री मिलाकर सूर्योदय से पहले खाने से सूर्योदय के साथ बढ़ने-घटने वाला सिर-दर्द ठीक हो जाता है। इसे कम से कम छः दिन लें।

आँते : बुल्गारिया के ही गैस्ट्रो एन्ट्रोलोजिस्ट प्रो. ताशो ताशेव के अनुसार एन्टीबायोटिक्स देने के पश्चात् आँतों के बैक्टीरियल फ्लोरा पर पड़े कुप्रभाव को दही से बचाया जा सकता है।

हृदय रोग : उच्च रक्त दाब, मोटापा तथा गुर्दे की बीमारियों में भी दही अत्यधिक लाभप्रद बताया गया है।

हृदय रोगनाशक : रक्त में बनने वाले कोलेस्ट्रोल नामक घातक पदार्थ को मिटाने की क्षमता रखता है। कोलेस्ट्रोल नामक सख्त पदार्थ रक्त शिराओं में जमकर रक्त प्रवाह रोकता है और उससे ओटोरओस क्लीरोसिस नामक हृदय रोग होता है। चिकने पदार्थ खाने वाले इसी रोग के शिकार होते हैं। अतः दही का प्रयोग उत्तम है।

काले बाल : आधा कप दही में एक नींबू निचोड़ कर मिला लें। इसे बालों पर मलें और 20 मिनट रहने दें और फिर सिर धोयें तो इससे बाल मुलायम एवं काले हो जाएँगे।

बाल : एक कप दही में पिसी हुई 10 काली मिर्च मिलाकर सिर धोने से सफाई अच्छी होती है। बाल मुलायम एवं काले रहते हैं।

बालों को गिरने से रोकने के लिए दही से सिर धोना चाहिए। दही बालों की जड़ों में लगाइये और बीस मिनट बाद सिर धोइये ऐसा करने से लाभ होगा।

फरास : एक कप दही में थोड़ा सा नमक मिलाकर बिलोलें, फेंट लें। इससे बालों को मलकर धोयें। फरास दूर हो जाएगी।

फोड़े में सूजन, दर्द, जलन : हो तो पानी निकाला हुआ दही बाँधे। एक कपड़े में दही डालकर पोटली बाँध कर लटका दें। इससे दही का पानी टपक जायेगा। फिर इसे फोड़े पर लगाकर पट्टी बाँध दें। दिन में तीन बार पट्टी बदलें।

अनिद्रा : दही में पिसी हुई काली मिर्च, सौंफ तथा चीनी मिलाकर खाने से नींद आ जायेगी।

भाँग का नशा : ताजा दही खिलाते रहने से भाँग का नशा उतर जाता है।

शरीर से दुर्गन्ध : ऐसा होने पर दही और बेसन मिलाकर शरीर पर मलें।

वैज्ञानिकों के अनुसार दही खाने के एक घण्टा बाद ही उसके 81 प्रतिशत अंश को शरीर आत्मसात् कर देता है, जबकि दूध सेवन के एक घण्टे के बाद 32 प्रतिशत अंश ही शरीर आत्मसात् कर पाता है। दही से शरीर की फालतू चर्बी कम होती है। इसलिए मोटापा कम करने के लिए दही या मट्ठे का सेवन बहुत उपयोगी है।

हानिकारक : दमा, श्वास, कफ, शोथ, रक्त, पित्त, ज्वर में दही न खायें। रात के समय दही कभी नहीं खाना चाहिए।

(विशेष प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह ले लें।)

शिव से शक्ति की भिन्नता नहीं है और यह बात अपने पूर्ण यौवन के साथ चरित्रार्थ होती है श्रावण मास में जब प्रकृति जो शक्ति रुपा है अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ खिल उठती है और शिव आह्लाद मुद्रा में प्रतीत होते हैं। क्या सम्बन्ध है शिव और शक्ति में और कैसे उतारा जाये शिव और शक्ति को जीवन में?



श्रावण मास

शिव और शक्ति का रसेश्वर पर्व है

श्रावण में सम्पन्न कीजिए, भगवान शिव से सम्बन्धित कोई भी साधना।
(देखें जून एवं जुलाई पत्रिका)

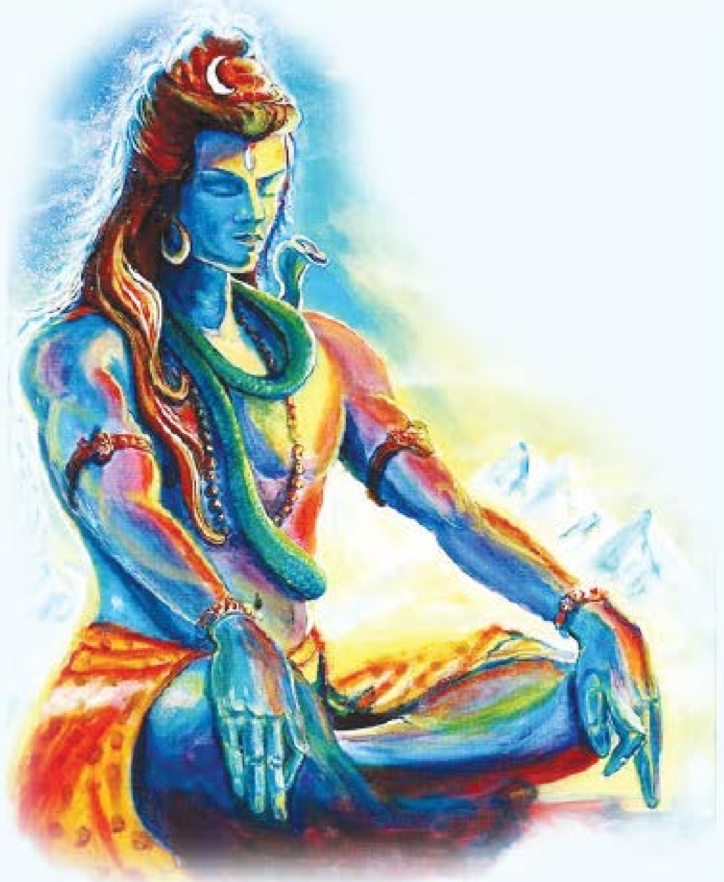
उपनिषदों के प्रारम्भ में ब्रह्म के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट करते हुए प्रश्न पूछा गया कि 'किं कारणं ब्रह्म' अर्थात् जगत का कारण जो ब्रह्म है, वह कौन है ? आगे चलकर ब्रह्म के स्थान पर रुद्र और शिव शब्द का प्रयोग किया गया है 'एकोहि रुद्रः शिव' अर्थात् जो जगत पर शासन करते हैं वे रुद्र भगवान एक ही हैं, वे प्रत्येक जीव के भीतर स्थित हैं, समस्त जीवों का निर्माण कर पालन करते हैं और प्रलय में सबको समेट लेते हैं। अर्थात् यह जगत पूर्ण रूप से रुद्र स्वरूप ही हैं, एक ही रुद्र से अणु परमाणु रूप में जीव आत्मारूप में कोटि'कोटि रुद्र उत्पन्न हुए जो रुद्र में ही विलीन हो जाते हैं।

नारायण उपनिषद में भगवान शिव को अनेक नामों से प्रणाम किया गया है



शिवाय नमः, शिवलिंगाय नमः, भवाय नमः, भवलिंगाय नमः,
शर्वाय नमः, सर्वलिंगाय नमः, बलाय नमः।
बलप्रथनाय नमः इत्यादि एवं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभयो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यो।
ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपति
ब्रह्म शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्।
नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय
हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः।





इसीलिए भगवान रुद्र के सम्बन्ध में कहा गया है कि भगवान शिव ही इन्द्र इत्यादि देवताओं की उत्पत्ति हेतु, वृद्धि हेतु अधिपति और सर्वज्ञ हैं, वे परमदेय सबको सद्‌बुद्धि में संयुक्त करे।

इस संसार में कर्म फल देने के लिए ही सृष्टि होती है। व्यक्ति अपने जीवन में नाना प्रकार के सुख और दुख भोगता हुआ अन्ततः पुनः सृष्टि में विलीन हो जाता है। इसलिए भगवान शिव को प्रलय का देव कहा गया है जो व्यक्ति के जीवन में सब दुखों को हर लेते हैं, इसलिए वे हर हैं और प्रार्थना में भी कहा जाता है

हर हर महादेव जो हरण करने वाले हैं, वे ही तो महादेव हैं।

अव्यक्त और व्यक्त दोनों ही रूपों में शिव को जाना जाता है, इसीलिए शिव सगुण भी हैं और निर्गुण भी हैं। निर्गुण रूप में वे लिंगाकार रूप में और सगुण रूप में विभिन्न रूपों में सर्वपूज्य हैं।

शिव भक्ति के अधीन शिव को त्रिनेत्र, त्रिशूल, मुण्डमाला धारी एवं दिगम्बर, श्मशान वासी, अर्धनारीश्वर, भस्मधारी माना है। वास्तविक रूप में शिव के त्रिनेत्र त्रिकाल अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान ज्ञान के बोधक हैं।

शिव के त्रिनेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि स्वरूप हैं।

शिव की मुण्डमाला प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु का स्मरण कराती रहती है, जिससे वे दुष्कर्मों से विरक्त रखने का प्रयास करते हैं।

शिव दिगम्बर होते हुए भी भक्तों के ऐश्वर्य को बढाने वाले और मुक्त हस्त में दान करने वाले हैं। श्मशानवासी होते भी तीनों लोकों के स्वामी हैं अर्धनारीश्वर होते भी योगाधिराज हैं, मदनजित अर्थात् काम को जीतने वाले होकर भी सदा महा शक्ति भगवती उमा के साथ हैं, भस्मधारी होते हुए भी अनेक रत्नराशियों के अधिपति हैं।, वहीं शिव अजन्मा और अनेक रूपों में विभूषित हैं, व्यक्त भी हैं और अव्यक्त भी।

भगवान शिव के महादेव, भव, दिव्य, शंकर, शम्भु, उमाकांत, हर, मुण्ड, नीलकंठ, ईश, ईशान, महेश, महेश्वर, परमेश्वर, सर्व, रुद्र, महारुद्र, कालरुद्र, त्रिलोचन, विरुपाक्ष, विश्वरूप, कामदेव, काल, महाकाल, काल-विकरण, पशुपति इत्यादि अनेक नाम हैं।

शिव शब्द का अर्थ है कल्याण, शिव ही शंकर है, शं का अर्थ है कल्याण, क का अर्थ है करने वाला अर्थात् शंकर ही कल्याणकारी देव हैं, ब्रह्म ही शिव है, सृष्टि की उत्पत्ति और पूर्णता शिव में ही है।

जिस प्रकार पुष्प में गंध, चन्द्र में शीतलता, सूर्य में प्रभा सिद्ध है, उसी प्रकार शिव में शक्ति भी सिद्ध है, शक्ति को किसी भी रूप में कहा जाए उमा, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी, इन्द्राणी, महाकाली सब शिव के साथ ही निहित हैं। शिव पुरुष रूप हैं तो उमा स्त्री स्वरूप, शिव ब्रह्म हैं तो उमा सरस्वती रूप है। शिव विष्णु और उमा लक्ष्मी, शिव सूर्य तो उमा छाया, शिव चन्द्र हैं तो उमा तारा, शिव यज्ञ हैं तो उमा वेदी, शिव अग्नि हैं तो उमा स्वाहा, इसीलिए शिव और शक्ति दोनों की संयुक्त रूप से ही आराधना की जाती है। लिंगाकार रूप में भी शिव और शक्ति का समन्वित रूप लिंग और वेदी के रूप में प्रकट होता है।

प्रणव अक्षर 'ॐ' शिव का गान कहा गया है अर्थात् संसार की प्रथम ध्वनि 'ॐ' ही थी, ओंकार की ध्वनि अर्थात् प्रणव के सम्बन्ध में कहा गया है, कि यह सर्वव्यापी है, यह तारक मंत्र है, ब्रह्म विद्या है, यह सकल मंत्रों का मूल है, इसीलिए प्रत्येक मंत्र के पहले प्रणव मंत्र अर्थात् ॐ बोला ही जाता है।

सदाशिव को मृत्युंजय कहा गया है, उन्हें त्र्यंबक कहा गया है, सांसारिक प्राणी सदैव यम अर्थात् मृत्यु से बचने का प्रयत्न करता है और केवल शिव को ही महाकाल, मृत्युंजय और अमृतेश्वर कहा गया है, शिव ही काल से ऊपर महाकाल है, मृत्यु को जीतने वाले हैं, इसीलिए मृत्युंजय हैं, जीवन में बार-बार मृत्यु से बचाकर अमृत दिलाने में समर्थ हैं।

भौतिक युग और शिव



भगवान शिव आध्यात्मिकता के देव हैं तो भौतिकता के भी देव हैं, भौतिक जगत में व्यक्ति को जीवन में परिवार, पुत्र आनन्द, विद्या, ज्ञान, भयहीनता, सब कुछ तो चाहिए और ऐसा ही तो भगवान शिव का स्वरूप है, शक्ति स्वरूपा उमा पार्वती सदैव साथ हैं, देव अग्रणी गजानन्द पुत्र हैं, वहीं शौर्य देव कार्तिकिय दूसरे पुत्र हैं, ऋद्धि-सिद्धि पुत्र वधूएं हैं, सब कुछ होते हुए भी आनन्द से युक्त होकर, भस्म धारण कर हिमालय वासी हैं अर्थात् सब गुणों को रखते हुए भी मोह से परे हैं, जहां शिव हैं वहां भगवती हैं, जहां शिव हैं वहां गणपति हैं, जहां शिव हैं वहां शौर्यपति कार्तिकिय हैं, जहां शिव हैं वहां ऋद्धि और सिद्धि हैं। जहां शिव हैं, वहां जल है क्योंकि शिव की जटाओं में जल धारण करने वाले की क्षमता है और जहां जल है वहीं जीवन भी है।

कुण्डलिनी शक्ति जागरण में ज्योति स्वरूप शिवलिंग का पूजन शिव और शक्ति का समन्वित पूजन है, यह पृथ्वी रूपी इष्ट और आकाश रूपी लिंग का मिलन है। शिव साधना, शिव सिद्धि, शिव कृपा बिना शिवलिंग पूजन सम्भव ही नहीं और निरन्तर बहती जल धारा जीवन के जल तत्व को अभिव्यक्त करती है, यदि मनुष्य की देह से जल तत्व हटा दिया जाए तो जीवन समाप्त हो जाता है, इसीलिए जीवन के प्रतीक शिवलिंग का सदैव अभिषेक किया जाता है। अभिषेक का तात्पर्य है अर्पण, अभिषेक का तात्पर्य है ग्रहण करना, अभिषेक का तात्पर्य है निरन्तर प्रवाह होते रहना अर्थात् जहां शिव हैं वहीं निरन्तर प्रवाह है। यह सृष्टि भी जल से उत्पन्न हुई है और जल में ही विलीन हो जाती है। इसीलिए कहा गया है जल के बिना जीवन की कल्पना व्यर्थ है।

रहिमन पानी राखिए बिना पानी सब सून,
पानी गए न उबरे मोती मानस चून॥

अर्थात् मनुष्य में जल ही जीवन प्रदान करता है, जब तक जल है तब तक जीवन है, देह में भी रुधिर के रूप में जल तत्व ही तो विद्यमान है, इस शरीर में पंचतत्वों में आकाश, भूमि, जल, वायु... में भी जल तत्व को प्रधान माना गया है। नेत्रों की भाषा भी आनन्द स्वरूप, करुणा स्वरूप प्रेम अश्रु के रूप में ही प्रकट होती है, जीवन का निरन्तर क्रम भी जल तत्व वीर्य के माध्यम से प्रकट होता है, सत्व और रज ही तो सृष्टि का क्रम निर्विघ्न रूप से चलते रहते हैं।

वर्षा ऋतु - श्रावण मास

जल को देखते ही मन में प्रसन्नता उदय होती है क्योंकि शरीर के भीतर का जल बाह्य जल से अपने आप को जोड़ता है, देह को हजार विधियों से स्वच्छ रखा जा सकता है लेकिन देह के ऊपर जल डालकर स्नान करने से जो निर्मलता प्राप्त होती है वह और किसी अन्य माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती है। वर्षा में बरसते हुए जल को देखकर आत्मा भी प्रसन्न हो जाती है, मनुष्य हर ऋतु में अर्थात् शीत, उष्ण ऋतु में अपने आप को संयोजित कर लेता है लेकिन वर्षा की न्यूनता में सब कुछ शुष्क हो जाता है, वर्षा तो भगवान शिव का वरदान है जो आकाश मार्ग से पृथ्वी को तृप्त करने के लिए आती हैं और जब तक मनुष्य के जीवन में तृप्ति नहीं आती तब तक वह शुष्क अनुभव करता है, इसीलिए भगवान शिव को रसेश्वर कहा गया है, रस का तात्पर्य है जल तत्व और जीवन में जितने जल तत्व हैं वे भगवान शिव से ही उत्पन्न माने गए हैं।

प्रश्न उठता है कि व्यक्ति अपने जीवन में जल तत्व को सार्थक कैसे करे जिससे उसके जीवन में शुष्कता समाप्त हो जाए, वह करुणा, प्रेम, आनन्द के रस तत्वों से सरोबार रहे? तो उसके लिए वर्षा ऋतु और वर्षा ऋतु में भी भगवान शिव का किसी न किसी रूप में आवाहन, पूजन और साधना उसके जीवन को पूर्णता प्रदान करती है। वर्षा का काल श्रावण मास माना गया है, उस समय ऐसा लगता है कि प्रकृति रूपी शक्ति पृथ्वी भी आकाश रूपी शिव को अपने साथ एकाकार करने के लिए तात्पर्य है, कहीं बीज बोए हुए हों या नहीं हो प्रकृति में से अपने आप हरीतिमा प्रकट हो जाती है। यह हरियाली पृथ्वी के शुष्क सौन्दर्य को संवार देती है, इसीलिए श्रावण मास को शिव कल्प या शैव कल्प कहा गया है।

जिस प्रकार शिवलिंग में बाण पुरुष और प्रकृति का मिलन है, उसी प्रकार श्रावण मास भी ब्रह्माण्डीय शिवलिंग और पृथ्वीरूपी प्रकृति का महामिलन है। इस कल्प में, इस काल में शिव की किसी भी रूप में आराधना की जाए वह अधूरी नहीं रह सकती क्योंकि शिव साकार निराकार हर रूप में विद्यमान हैं, जहां जीवन है वहां शिव हैं, जहां श्रावणमास है वहां शिव अपनी कृपा प्रदान करने के लिए आतुर है।



कितने आश्चर्य की बात है कि राक्षस भी शिव भक्त हैं, देवता भी शिव भक्त हैं, राम भी शिव भक्त हैं, रावण भी शिव भक्त हैं, महिषासुर भी शिव भक्त हैं और महिषासुर मर्दिनी शक्ति भी शिव स्वरूपा हैं। ऐसा इसलिए कि दो नेत्रों वाला कुछ भूल कर सकता है लेकिन जिसका त्रिनेत्र है वह उस प्रकाश से, उस आशीर्वाद से किसी को भी अभागा नहीं रख सकता।



श्रावण मास प्रेम और अनंग का प्रतीक भी है और प्रेम और अनंग के देव शिव से अधिक कौन हो सकते हैं जिन्होंने अपनी प्रत्येक लीला में एकोही रुद्र होते हुए पूरी सृष्टि में अनेकानेक रुद्र उत्पन्न किये हैं। जब मन में प्रसन्नता हो, रस भाव हो, सौन्दर्यभाव हो तो रसेश्वर शिव की साधना अवश्य करनी चाहिए और जहां शिव पूजा शिवलिंग पूजा हो वहां आद्याशक्ति, गौरी पूजा, गणाधिपति, गणपति पूजा शौर्यपति कार्तिकेय पूजा, ऋद्धि और सिद्धि की पूजा जीवन में शुभ और लाभ की प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

जो सत्य है वह शिव है, जो शिव है वह सुन्दर है, इसीलिए जो शिव है वह सत्य है, जो शिव है वह आनन्द है और यही है–

सत्यम शिवम् सुन्दरम्।





शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरू से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- जो व्यक्ति शिष्य बनना चाहता है उसको सेवा भाव से परिपूर्ण होना चाहिए।
- उसके मन में मानवीय मूल्य पूर्ण रूप से विद्यमान हो। उसमें असीम धैर्य होना चाहिए ताकि वह गुरु द्धारा ली गई परीक्षाओं में पूरा उतर सके।
- अगर शिष्य सेवा करता है और बहुत समय बीतने पर भी गुरु उससे एक भी शब्द न कहे और न ही उसे साधनाओं का ज्ञान प्रदान करे और फिर भी शिष्य अपनी सेवा या भावना में किसी प्रकार की न्यूनता न आने दे तो समझना चाहिए वह शिष्य बनने के लायक है।
- अगर गुरु कोई ऐसा कार्य दे जो कि उसके बस की बात नहीं है, लेकिन फिर भी वह पूरे मन से उसमें जुट जाता है तो समझना चाहिए उसमें गुरु के प्रति आस्था है।
- परिश्रम की भावना शिष्य का मूल गुण है। वह केवल प्रदर्शन न करें, अपितु सच्चे मन से कार्य सम्पन्न करे जो गुरु ने उसे सौंपा है।
- यदि शिष्य गुरु के समक्ष कोई इच्छा प्रकट करे और वह फलीभूत न हो या फलीभूत होने में अधिक समय लग रहा हो और फिर भी शिष्य के मन में कोई विपरीत विचार न आए तो समझें की शिष्य पूर्णत: समर्पित है।
- शिष्य को आगे बढ़कर गुरु का कार्य सम्पन्न करना चाहिए और गुरु को विश्वास दिलाना चाहिए कि वह ही इस कार्य के लिए सर्वथा योग्य है।
- शिष्य के जीवन में धैर्य और विश्वास का सबसे अधिक महत्व है। समय उसके लिए कोई महत्वपूर्ण नहीं। उसे चाहिए कि वह आवश्यकता पड़े तो पूरा जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर दें।

गुरु वाणी





- अध्यात्म का अर्थ स्वयं के उसी सौन्दर्य से परिचित हो जाना है। जो सौन्दर्य अपने केवल एक अंश में तुम्हारे समक्ष कहीं पुष्प बनकर खिला है, तो कहीं आकाश में पल-प्रतिपल बदलते रंगों में छिपा है। एक आकाश तो तुम्हारे भी भीतर है वत्स! जाना नहीं इसे तुमने? वहीं तो भादो के घने मेघों की तरह तैर रही हैं अनेक साधना सिद्धियाँ।
- साथ ही मेरा स्वप्न तो यह भी है कि मेरे शिष्य उस पवित्र भूमि का स्पर्श कर, अपने जीवन को धन्य कर, उसकी चेतना से ओतप्रोत हो कर, वहां की स्निग्धता में तरल होकर वहां की पावनता से पवित्र होकर वहां की ज्योत्स्ना से शुभ्र होकर पुन: इस समाज में लौटे और समाज को स्पष्ट और प्रामाणिक विवरण दे सकें। बता सकें कि बिना भौतिकता को छोड़े हुए भी कैसे जीवन के उस सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।
- स्वच्छ तालाब में खिले प्राकृतिक कमल की भांति मैं अपने शिष्यों के मन में कमल विकसित कर रहा हूँ। ऐसे कमल जिनमें जीवन की धड़कन हो, पवित्रता हो, दिव्यता और चेतना हो।
- भगवान चाहे हमें एक गुण दें, चाहे दस गुण दें, यदि हम उन्हीं का विकास करते रहेंगे तो निश्चय ही वृद्धि होगी। अपने आपको हीन समझना, तुच्छ समझना और बिना पुरुषार्थ किए, बिना परिश्रम किए ईश्वर को दोषी ठहराना अपने आप को ही धोखा देना है।
- परमात्मा ने कृपा कर अवश्य ही हर व्यक्ति को कोई न कोई विशेषता, कोई न कोई गुण प्रदान किया ही है, आवश्यकता है तो अपने उस गुण को पहिचानने की और उस गुण का विकास करने की, क्योंकि एक गुण से ही अनेक गुणों की उत्पत्ति होती है।

श्रावण मास

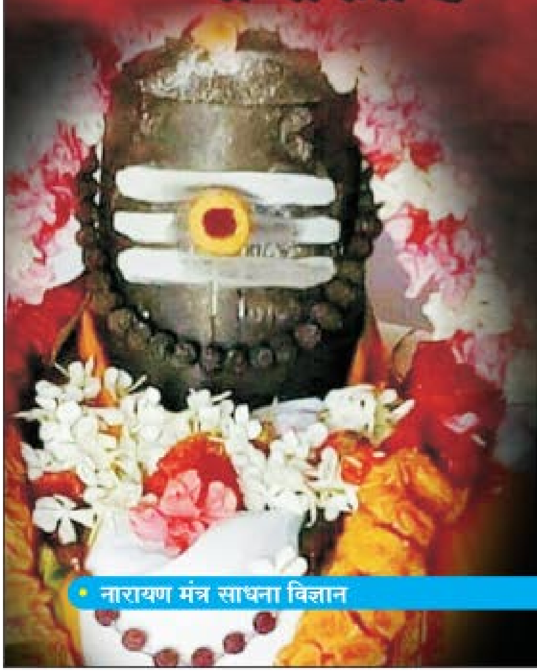
6.7.20 से 3.08.20

ॐ नम शिवाय

यह श्रावण माह साधक के जीवन में अत्यन्त ही सुखद अहसास लेकर आता है। उसके जीवन में आने वाली बाधाओं की समाप्ति एवं उसकी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए की गई साधनाएं इस मास में शीघ्र फल प्रदान करती है। यह भगवान शिव की कृपाप्राप्ति का मास है। अगले पृष्ठ पर इसी से सम्बन्धित दो साधनाएं दी जा रही हैं, जो अत्यन्त सरल एवं प्रभावी हैं। साधक इन्हें सम्पन्न कर लाभ उठा सकते हैं।

जीवन की विविध समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं

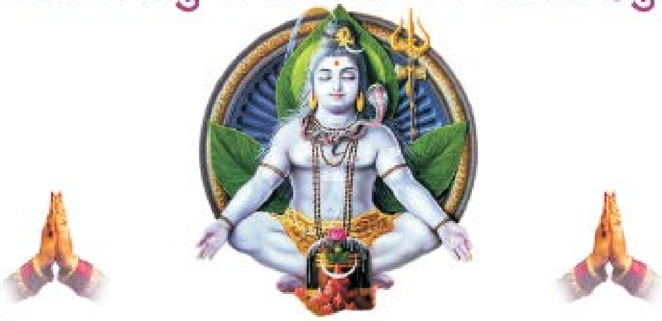




श्रावण मास

में सम्पन्न होने वाले इन प्रयोगों से

समस्त शत्रु व बाधाओं की समाप्ति हेतु



27.07.20

धन प्राप्ति के पश्चात् मानव का सारा ध्यान अपने शत्रुओं की समाप्ति, उनकी योजनाओं को विनष्ट करने में केन्द्रित हो जाता है। शत्रु से यहां तात्पर्य है, जो मानव की उन्नति में बाधक बन कर उपस्थित हो जाता है। उस पर नियन्त्रण करने हेतु यह ऐसा ही शत्रु समाप्ति प्रयोग है, जो आप के उन्नति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को जड़मूल से समाप्त कर देगा।

किसी पात्र में चावल रखकर उस पर 'महाकाल यंत्र' स्थापित करें। यंत्र का पूजन भस्म या चन्दन, बिल्व पत्र, कनेर के पुष्प से करें। भगवान शिव का ध्यान पुष्प चढ़ाते हुए करें

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं
त्रयः शूल निर्मूल नं शूलपाणि,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।

इसके पश्चात् यंत्र के समक्ष तेल का दीपक लगाकर, निम्न मंत्र का रुद्राक्ष माला से ग्यारह माला मंत्र जप करें एवं इसके बाद किसी पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर काली मिर्च से 101 आहुतियां दें।

मंत्र

।। ॐ शं शत्रुनाशाय रुद्राय फट्।।

Om Sham Shatrunaashaay Rudraay Phat

जप के पश्चात् समस्त सामग्री किसी मन्दिर में चढा दें या निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाड़ दें।

न्यौछावर-450/-

सर्व मनोकामनापूर्ति हेतु



3.08.20

यूं तो शुद्ध हृदय से यदि भगवान शिव का ध्यान किया जाए, तो मानव की सभी कामनाएं पूर्ण हो ही जाती हैं। मनोकामना की पूर्ति हेतु श्रावण मास में यह ऐसा तीव्र तंत्र प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करके मानव अपनी कामनाएं शीघ्र पूरा कर सकते हैं।

सफेद वस्त्र पर कुंकुम से त्रिशूल बनाएं, उस पर 'काम्य शिव यंत्र' स्थापित करें। यंत्र का पूजन अष्टगंध, धतूरा तथा आक के पुष्प से करें, घी का दीपक लगा दें। इसके बाद शिव का ध्यान करें

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

निम्न मंत्र का 30 मिनट जप करते हुए यंत्र पर आहुति के समान तिल चढ़ाएं

मंत्र

।। ॐ ऐं मनोवांछित साधय साधय ॐ।।

जप के पश्चात् यंत्र तथा तिल को किसी भी शिव मन्दिर में चढ़ा दें।

न्यौछावर- 240/-





गृहस्थ जीवन आनन्दयुक्त

बनाने का अद्‌भुत प्रयोग

यह प्रयोग आप स्वयं सम्पन्न करें

अथवा

विवाह पूर्व अपने पुत्र या पुत्री से

सम्पन्न करायें,

तो निश्चय ही

आपको अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे-

1. यह प्रयोग 09.08.20 या किसी भी मंगलवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। लड़की स्वयं या लड़की के माता-पिता या किसी योग्य पण्डित से भी यह प्रयोग सम्पन्न करवाया जा सकता है।
2. इस प्रयोग में निम्न साधना उपकरणों जो कि प्राणप्रतिष्ठित हों, की आवश्यकता पड़ती है-विवाह बाधा निवारण माला, विवाह बाधा निवारण यंत्र।
3. प्रात:काल यंत्र को स्थापित कर पहले दूध तथा पवित्र जल से स्नान करायें और स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर, केशर से तिलक कर पात्र में स्थापित कर दें।
4. इसके पश्चात् 'दैनिक साधना विधि' पुस्तक से गुरु पूजन सम्पन्न करें।
5. दाहिने हाथ में जल, अक्षत तथा पुष्प लेकर संकल्प बोले-यह साधना मैं सम्पन्न कर रहा हूं, जिससे मेरा/मेरी पुत्र का/पुत्री गृहस्थ जीवन सुखमय हो सके।
6. निम्न मंत्र की 'विवाह बाधा निवारण माला' से 11 मालाएं, 21 दिन तक जप करें-

मंत्र

।। ॐ ह्लौं कामदेवाय रत्यै सर्व दोष निवारय सिद्धय फट् ।।

Om Hloum Kaamdevaay Ratyei Sarva Dosh Nivaaray Siddhay Phat



21वें दिन प्रयोग समाप्त हो जाए, तब अगले दिन वह यंत्र तथा माला जल में प्रवाहित कर दे। ऐसा करने से जीवन में विवाह सम्बन्धित समस्त दोष समाप्त होते हैं।

न्यौछावर-450/-

एक साक्षात्कार



अगली नस्लें याद करेंगी कि तुमने

स्वामी निखिलेश्वरानन्द को देखा है

- किंकर स्वामी



परमहंस स्वामी निखिलेशवरानंद जी को मैं अत्यंत निकट से जानता हूँ। सदियों में कोई व्यक्तित्व ही ऐसा होता है, जिसके बारे में कुछ कहा जा सकता है जिसके बारे में लिखने से आनन्द की अनुभूति हो सकती हैं, जिसके पास बैठने से कुछ ऐसा एहसास होता है कि हम इस व्यक्तित्व से कुछ प्राप्त कर रहे हैं और ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी है, स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी।

परंतु इनकी न्यूनता यह रही कि इन्होंने अपने आपको प्रचार प्रसार से बहुत दूर रखा। अपने आपको विज्ञापित करना या प्रचार पाने की कोशिश करना इनके स्वभाव में ही नहीं रहा। उच्चकोटि के संन्यासी सम्मेलनों में जब इन्हें अध्यक्ष पद के लिए आमंत्रित किया जाता था तो ये अत्यंत विनम्रतापूर्वक मना कर एक तरफ हट जाते थे, अगर इनकी जगह कोई दूसरा व्यक्ति होता और जो ज्ञान इनके पास है, जितनी शक्ति और सामर्थ्य इनके पास है, उसका सौवां हिस्सा भी यदि किसी के पास होता तो वह चीख-चीख कर अपने बारे में बताता रहता, पूरी दुनिया उसके चारों तरफ घेरा डाले रहती, परंतु इस व्यक्ति में ऐसा कुछ भी नहीं है, या मैं यूँ कहूँ कि यह व्यक्ति प्रचार-भीरू है तो ज्यादा सही होगा।

इसमें कोई दो राय नहीं कि सिद्धाश्रम समस्त ब्रह्माण्ड का आध्यात्मिक चेतना पुंज है, और वहां निरंतर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न की जा रही है। परंतु निखिलेश्वरानन्द जी के वहाँ सदेह होने या न होने से बहुत बड़ा अंतर हम अनुभव कर रहे हैं, उनके वहाँ होने से एक चेतना एक वातावरण और एक ऐसा माहौल बना रहता है जिससे कण-कण गुंजरित रहता है, स्वामी जी ने पहली बार यह अहसास दिलाया कि साधना रूखी सूखी और निर्जीव बे रस नहीं है, अपितु इसमें भी आनन्द और मधुरता का सामंजस्य है, उन्होंने ही पहली बार सिद्धाश्रम को भारतीय और कलात्मक नृत्य से संयोजित किया, पहली बार देवताओं को सिद्धाश्रम में साक्षात रूप में उपस्थित करने का प्रयास किया, पहली बार आँखें बन्द किये योगियों को मुस्कराहट और हंसी प्रदान की, पहली बार शांत और निर्जन वातावरण में खिलखिलाहट, हास्य और आनन्द का उद्रेक किया और आज सिद्धाश्रम में जो चहल-पहल है, जो आनन्द का सागर लहराता है, वह सब उनकी देन है।

भगवान श्री कृष्ण पूर्ण सोलह कला होते हुए भी जीवन भर अत्यंत नम्र बने रहे, उन्होंने सामान्य रूप से मनुष्य की तरह जन्म लिया, सामान्य बालकों की तरह आचरण किया, ठीक उसी प्रकार खेले कूदे कार्य किया, और ठीक उसी प्रकार से रोना हंसना, प्रेम करना, मुस्कराना और शिक्षा प्राप्त करना आदि कार्य किये।

जो दर्प जो विशालता जो प्रखरता और जो प्रचण्डता इनके संन्यासी जीवन में मैंने देखी है, जो त्यागवृत्ति और निष्प्रहता मैंने संन्यास जीवन में इनके प्रति अनुभव की हैं वह अपने आपमें एक मिसाल है, सैकड़ों-सैकड़ों संन्यासी शिष्य आतुर रहे है इनका शिष्यत्व प्राप्त करने के लिए। हजारों योगी और संन्यासी व्यग्र रहे हैं, इनके पास कुछ क्षण बैठने के लिए, इनसे कुछ सीखने के लिए और इनसे बहुत कुछ प्राप्त करने के लिए, और इन्होंने सभी को बहुत कुछ देने का प्रयास किया, इनके द्वार हमेशा सब के लिए खुले रहे, न किसी प्रकार का व्यस्तता का भाव रखा और न व्यर्थ का अहंकार, इसीलिए आज हिमालय के हजारों-हजारों संन्यासी परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का नाम स्मरण करते ही श्रद्धा से झुक जाते हैं, फिर भले ही उन्होंने इस विराट व्यक्तित्व को देखा हो या नहीं, परंतु हिमालय के कण-कण में उनका व्यक्तित्व गुंजरित है, और उन्होंने हिमालय को पूरे भारतवर्ष से परिचित कराने में जो योगदान दिया है, साधना की पूर्णता के लिए जो प्रयत्न किया है उसकी अपने आपमें कोई मिसाल नहीं है।

इन पंक्तियों के माध्यम से मैं उनकी आत्मश्लाघा नहीं कर रहा हूँ, मैं कोई उनकी प्रशंसा या विज्ञापन भी नहीं कर रहा हूँ, उस व्यक्तित्व को इनकी जरूरत भी नहीं है यदि आकाश में प्रखर सूर्य अपने पूर्ण तेज पुंज से चमक रहा हो और उल्लू अपनी आँखें बन्द कर ले या सूर्य को नहीं देखे और वह कहे कि सूर्य है ही नहीं, तो इसमें सूर्य का क्या दोष? यदि वर्षा ऋतु में अत्यंत मधुर वर्षा की बूँदे सम्पूर्ण पृथ्वी को आप्लावित कर रही हो, और कोई चातक अपनी चोंच खोल कर उस मधुर जल को प्राप्त ही नहीं कर सके तो इसमें वर्षा का क्या दोष? और यदि कहीं पर विराट व्यक्तित्व और ज्ञान का पुंज साकार हो, और कोई उसे प्राप्त करना ही न चाहे और अपनी आँखे बन्द किये ही अहंकार में चूर अपनी ही अज्ञानता से व्यक्तित्व की आलोचना करता रहे, तो उसमें उस व्यक्तित्व का क्या दोष?

सिद्धाश्रम का आधारपुंज

आप अपने घर में बैठे इस बात को अनुभव नहीं कर सकेंगे, कि एक व्यक्तित्व के होने और न होने से कितना बड़ा अंतर आ जाता है, फिलहाल आप इस बात का अनुभव नहीं कर सकेंगे, कि किसी विराट व्यक्तित्व के होने या न होने से संस्था में कितना अधिक अंतर आ जाता है यह हमने अनुभव किया है, इसमें कोई दो राय नहीं कि सिद्धाश्रम समस्त ब्रह्माण्ड का आध्यात्मिक चेतना पुंज है, और वहां निरंतर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न की जा रही है। परंतु निखिलेश्वरानन्द जी के वहाँ सदेह होने या न होने से बहुत बड़ा अंतर हम अनुभव कर रहे हैं, उनके वहाँ होने से एक चेतना एक वातावरण और एक ऐसा माहौल बना रहता है जिससे कण-कण गुंजरित रहता है, स्वामी जी ने पहली बार यह अहसास दिलाया कि साधना रूखी सूखी और निर्जीव बे रस नहीं है, अपितु इसमें भी आनन्द और मधुरता का सामंजस्य है, उन्होंने ही पहली बार सिद्धाश्रम को भारतीय और कलात्मक नृत्य से संयोजित किया, पहली बार देवताओं को सिद्धाश्रम में साक्षात रूप में उपस्थित करने का प्रयास किया, पहली बार आँखें बन्द किये योगियों को मुस्कराहट और हंसी प्रदान की, पहली बार शांत और निर्जन वातावरण में खिलखिलाहट, हास्य और आनन्द का उद्रेक किया और आज सिद्धाश्रम में जो चहल-पहल है, जो आनन्द का सागर लहराता है, वह सब उनकी देन है, आज भी वे सूक्ष्म प्राणों से नित्य या लगभग नित्य आकर सबको संभाल लेते है, सभी के हाल-चाल पूछ लेते है, सभी की बात सुन लेते है, और सभी को बहुत कुछ बता देते है, यह एक आश्चर्य इस रूप में, कि अत्यधिक व्यस्त रहता हुआ आदमी इतना समय कैसे निकाल लेता है, परंतु हमने अपनी इन आँखों से देखा है, पिछली शिवरात्रि को ही उन्हें अपने गृहस्थ शिष्यों के बीच सस्वर रुद्राभिषेक करते हुए, और शिव पूजन कराते हुए देखा है, तो ठीक उसी क्षण उन्हें संन्यासी शिष्यों के बीच भी भगवान पारदेश्वर का पूजन सम्पन्न सम्पन्न कराते हुए मैंने अपनी इन आँखों से देखा है, मैंने उसमें भाग लिया है और आनन्द की असीमता अनुभव की है। एक ही क्षण में दो स्थानों पर दो रूपों में साधना सम्पन्न कराना एक विराट व्यक्तित्व का ही रूप हो सकता है और इस बात के लिए हम सब लोगों को गौरव और गर्व है।

जिन्होंने कदमों से नापा है ब्रह्माण्ड को

और यह कह कर मैं कोई अनहोनी बात नहीं कर रहा हूँ, मैं तो इन पंक्तियों के माध्यम से वही सब कुछ कह रहा हूँ, जो मैंने उनके साथ रह कर अनुभव किया है जो मैंने उनके साथ रह कर सीखा है, समझा है, अहसास किया है, मैं उनका शिष्य भी नहीं हूँ एक तरह से गुरु भाई के रूप में हूँ परंतु मैं आज अहसास करता हूँ कि यदि मैं उनका शिष्य होता तो मैं अपने आपको ज्यादा गौरवान्वित अनुभव करता, उनकी साधनात्मक गति के आगे यह भू-मण्डल बहुत छोटा सा है जिस किसी दिन उन्होंने ब्रह्माण्ड के रहस्यों को उजागर किया, उस दिन उन्होंने पूरी पृथ्वी पर तहलका सा मच जायेगा क्योंकि उन्होंने उन ग्रहों नक्षत्रों को देखा है, वहाँ पर विचरण किया है जहाँ पर मानव विद्यमान है जहाँ पर विज्ञान की ऊँचाइयां हैं, जहाँ पर साधना की प्रतिभूतियां है और मुझे विश्वास है कि वह दिन जल्दी ही आने वाला है जब वे इस विषय पर साधना के इस रहस्य पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

पर जब मैं उन्हें गृहस्थ जीवन में देखता हूँ तो अपने आपमें दंग रह जाता हूँ, मेरा मन, मेरा मस्तिष्क और मेरी साधना विश्वास नहीं कर पाती कि हिमालय का उच्चकोटि का योगी निखिलेश्वरानंद और जोधपुर में कार्य करने वाला यह व्यक्तित्व दोनों एक ही है, एक सामान्य मनुष्य के रूप में जीवन संचालित करने वाला हर क्षण सक्रिय रह कर कार्य करने वाला व्यक्तित्व एक ही है, यह समायोजन करना बड़ा कठिन हो रहा है, पर जो कुछ मैं देख रहा हूँ वह सत्य है



आज इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मैं समस्त संन्यासी योगियों और हिमालय के कण-कण की तरफ से सिद्धाश्रम के प्रत्येक व्यक्तित्व की तरफ से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

गुरु पूर्णिमा पर पूज्य सद्गुरुदेव

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी

को नमन

और जो कुछ देखा है वह भी पूर्ण सत्य है, उच्चकोटि का व्यक्तित्व ही इस प्रकार का नम्र और विनीत हो सकता है। हरी भरी फूलों की डाली बार-बार लचक सकती है, झुक सकती है, झूम सकती है, सूखा ठूंठ न तो झुक सकता है, और न किसी को छाया और आनन्द दे सकता है।

और यहीं पर मुझे वेदव्यास के उस श्लोक का स्मरण हो आता है कि भगवान श्री कृष्ण पूर्ण सोलह कला होते हुए भी जीवन भर अत्यंत नम्र बने रहे, उन्होंने सामान्य रूप से मनुष्य की तरह जन्म लिया, अवतरित नहीं हुए सामान्य बालकों की तरह आचरण किया, ठीक उसी प्रकार खेले कूदे कार्य किया, और ठीक उसी प्रकार से रोना हंसना, प्रेम करना, मुस्कराना और शिक्षा प्राप्त करना उन्होंने किया, इसीलिए कि वे यदि मानव को कुछ देना चाहते थे तो उनके लिए यह आवश्यक था कि वे भी सामान्य मानव की तरह बने रहे, ठीक उसीप्रकार दुख सुख का अनुभव करे। सामान्य मनुष्य की तरह ही उदास हो, परेशान हो, चिंतित हो, मुस्कराये, हंसे, खिल-खिलाये और कहीं से किसी को ऐसा अहसास भी न होने दें, कि यह अर्जुन के रथ पर बैठा हुआ सामान्य सारथी अपने आपमें विराट तेज पुंज लिये हुए है। सब लोगों ने उसे सामान्य और साधारण मनुष्य समझा, द्रोपदी ने उलाहना दिया अर्जुन ने बुरा भला कहा, दुर्योधन ने अपना प्रबल शत्रु समझा परंतु इतना होने पर भी वे सामान्य मानव बने रहे पर इसी सामान्य मानव ने गीता जैसा विराट ग्रंथ अगली पीढ़ियों को सौंपा, सामान्य दिखने वाले व्यक्ति ने पूरे महाभारत युद्ध को जीत कर दिखा दिया कि विराटता प्रदर्शन करने की चीज नहीं।

और इस श्लोक के अंत में वेदव्यास ने बहुत सुंदर बात कही है कि द्वापर युग का यह सौभाग्य था, कि उस युग में भगवान श्री कृष्ण जैसे विराट व्यक्तित्व ने जन्म लिया, विचरण किया और कार्य किया परंतु द्वापर युग का यह दुर्भाग्य भी था कि उस समय के लोगों ने श्रीकृष्ण के महत्व को न तो समझा और न उसका लाभ ही उठाया उनके जाने के बाद आने वाली पीढ़ियों ने उनकी विराटता को अहसास किया, उनके ज्ञान और चिंतन को समझने का प्रयत्न किया, वह एक ऐसा व्यक्तित्व था, जो लौकिक रूप में प्रेम करता हुआ दिखाई देता था, राधा के पीछे मंडराता हुआ और बांसुरी बजाता हुआ दिखाई देता था, उसी सामान्य मनुष्य ने गीता जैसा अद्वितीय ग्रंथ भी लिखा, जो सारथी बना हुआ सामान्य व्यक्तित्व लग था, उसने महाभारत जैसे युद्ध में पाण्डवों को विजय दिला कर यह बता दिया कि विराटता अपने आत्म का तत्व है। काश! द्वापर युग के लोग उस विराट व्यक्तित्व को पहिचान पाते, उससे जुड़ पाते, तो निश्चय ही वे लोग अपने आपमें पूर्णता प्राप्त कर पाते, परंतु यह सब तो बाद में ही होना था, उनकी महानता और विराटता को आने वाली पीढ़ियों ने ही अनुभव किया उसी युग में किसी व्यक्ति की विराटता और महानता को अनुभव किया ही नहीं जाता, वे तो केवल आलोचना कर सकते है, और यह समाज का नियम है, मैं समझता हूँ, उसी समय चक्र की पुनरावृत्ति हो रही है।

अगली नस्लें याद रखेगी

जिस रूप में यह उच्चकोटि का व्यक्तित्व सामान्य मनुष्य की तरह हर्ष, शोक, सुख-दुख में जी रहा है, आलोचनाओं के झंझावत में आगे बढ़ रहा है, उस रूप में आज का सामान्य मनुष्य इस विराट व्यक्तित्व को नहीं पहिचान सके, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जिस प्रकार से यह व्यक्तित्व अपने सामान्य गृहस्थ शिष्यों को समझा रहा है, उनके संदेह, उनकी आलोचनाओं के बीच निष्ठा से कार्य कर रहे हैं, वह वास्तव में ही बहुत कठिन है, इस प्रकार का जहर पीते रहना सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं है। जिस प्रकार से ये गृहस्थ शिष्य अपने आपको शिष्य कहने का दंभ रखते है, उस हिसाब से तो 'शिष्य' शब्द की परिभाषा ही बदल जायेगी फिर तो हम संन्यासी शिष्यों को अपने लिये शिष्य शब्द न लगाना कर कुछ और शब्द लगाना चाहिए, होना तो यह चाहिए था, कि इस सामान्य मनुष्य के आवरण के भीतर जो महानता और विराटता छिपी हुई है, उसे हम पहिचानने का प्रयत्न करे, उनसे आत्म संबंध स्थापित करे उनके कार्यों में योगदान दे, और कुछ ऐसा करे जिससे कि हम सही अर्थों में शिष्य कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकें, एक बार फिर उनके होठों पर मधुरता के साथ 'शिष्य' शब्द, उच्चरित हो काश, ऐसा हो पाता।

आज इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मैं समस्त संन्यासी, योगियों और हिमालय के कण-कण की तरफ से सिद्धाश्रम के प्रत्येक व्यक्तित्व की तरफ से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और हम सब कामना करते हैं, कि हमारा जीवन हमारी आयु, उन्हें प्राप्त हों, और वे ज्यादा वर्षों तक जीवित रह कर अद्वितीय कार्य सम्पन्न करते रहें।

और यह बात भी दो टूक सत्य है, कि आप सब गृहस्थ शिष्यों का सौभाग्य है, कि हमारी अपेक्षा आप लोगों को इस व्यक्तित्व ने ज्यादा समय, ज्यादा अवसर और ज्यादा सुविधाएं दी है। आज भले ही आप इन पर या अपने आप पर गर्व का अहसास न कर सके, पर यह निश्चित है, कि आने वाली पीढ़ियां आप पर गर्व करेगी कि आप कभी इस विराट व्यक्तित्व के सम्पर्क में रहे हैं। आने वाली पीढ़ियां सहसा आप पर या आपके कथन पर यह विश्वास नहीं कर पायेगी कि आपने इस विराट व्यक्तित्व के साथ कुछ क्षण बिताये है, इनके साहचर्य में रहे हैं, और इनके मुँह से अपने लिए 'शिष्य' शब्द का उच्चारण सुना है। परंतु हम सब लोगों को आप गृहस्थ शिष्यों पर ईर्ष्या है, कि आप हम लोगों की अपेक्षा इनके साथ रहने के लिए ज्यादा समय प्राप्त कर सके है और आपके सौभाग्य पर गर्व है कि आप इनके साथ है, आने वाली पीढ़ियां आप पर गर्व करेगी।

(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान 1989 पत्रिका से)



श्री गुरु स्तवन



नमस्तुभ्यं महा मंत्र दायिने शिवरूपिणे।
ब्रह्म ज्ञान प्रकाशाय संसार दुःख तारिणे।।
अति सौभाग्य विद्याय वीरायाज्ञान हारिणे।
नमस्ते कुल नाथाय कुल कौलिन्यदायिने।।
शिव तत्व प्रकाशाय ब्रह्म तत्व प्रकाशिने।
नमस्ते गुरवे तुभ्यं साधकाभय दायिने।।
अनाचाराचार भाव बोधाय भाव हेतवे।
भावाभाव विनिर्मुक्त मुक्ति दात्रे नमो नमः।।
नमस्ते सम्भवे तुभ्यं दिव्य भाव प्रकाशिने।
ज्ञानानन्द स्वरूपाय विभवाय नमोनमः।
शिवाय शक्ति नाथाय सच्चिदानन्द रूपिणे।
काम रूपाय कामाय काम केलि कलात्मने।।
कुल पूजोपदेशाय कुलाचार स्वरूपिणे।
आरक्त निज तच्छक्ति वाम भाग विभूतये।।
नमस्तेऽस्तु महेशाय नमस्तेऽस्तु नमो नमः।
इद स्तोत्र पठेन्नित्य साधको गुरु दिग्मुख।।
प्रातरुत्थाय देवेशि ! ततो विद्या प्रसीदति।
कुल सम्भव पूजायामादौ यो नः पठेदिदम।।
विफला तस्य पूजा स्यादभिचाराय कल्प्यते।
इति कुब्जिका तंत्रे गुरु स्तोत्रं समाप्तम।।

महामंत्र प्रदाता शिव स्वरूप ब्रह्म ज्ञान देने वाले सांसारिक दुखों को हरने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम है, अति सौम्य स्वभाव वाले, विद्या सम्पन्न, वीर हम शिष्यों के अज्ञान को हरण करने वाले, उदात्त, वंश परम्परा को देने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम है, शिव तत्व को जानने वाले, ब्रह्म को प्रकाशित करने वाले साधकों को अभय दान करने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम, सदाचार और दुराचार के स्वरूप को जानने वाले, ज्ञान के हेतुभूत, भाव और अभाव से परे मुक्ति दाता, गुरुदेव आपको प्रणाम, शिव स्वरूप, दिव्य ज्ञान को देने वाले, ज्ञान स्वरूप सर्वत्र व्यापक रहने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम, शिव रूप सर्व शक्ति सम्पन्न, सतचित्त, आनन्द स्वरूप, इच्छाधारी साधकों की इच्छा पूर्ति करने वाले, इच्छानुसार लीला करने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम, वंश मर्यादा को जानने वाले, तद्नुसार उपदेश देने वाले, प्रेममय शक्ति स्वरूपा, भगवती माता को अपने वामभाग में विराजमान किये हुये, हे ! महेश्वर गुरुदेव आपको मेरा बार-बार प्रणाम।

मेरी तमन्ना



प्रत्येक उस व्यक्ति की इच्छा कहीं न कहीं यह होती है कि

वह देवी-देवताओं और योगियों के दर्शन करें,

उनका साक्षात्कार करे, उनके निर्देशन मार्गदर्शन में ज्ञान को प्राप्त करें।

मेरे अंदर भी ऐसी ही कुछ भावनाएं थी।

इनसे भी आगे यह भी भाव थे कि देवी-देवता तो तंत्रों-मंत्रों के अधीन होते हैं उनसे तो कभी भी प्रयास कर साक्षात्कार किया जा सकता है। योगियों, गुरुओं, संन्यासियों से साक्षात्कार कर पाना बेहद मुश्किल काम है क्योंकि वे तंत्र या मंत्र के अधीन नहीं होते हैं। वे अपनी स्वेच्छा के मालिक होते हैं, खुश हो जाए तो सर्वस्व क्षण भर में प्रदान कर देते हैं . . . नहीं तो जीवन गुजर जाए कुछ नहीं हो सकता। लेकिन वे हृदय के बड़े धनी होते हैं यदि उन्हें हृदय के भावों से याद किया जाए तो वे किसी न किसी रूप में उसी क्षण उपस्थित होते ही हैं और सहयोग, कृपा प्रदान करते हैं। हम पहचान सके या नहीं पहचान सके यह भी उनकी ही कृपा होती है। इस संबंध में एक कहावत प्रचलित है।

'रमता जोगी, बहता पानी' इनका कोई ठिकाना नहीं होता है अर्थात वे किसी बंधन में नहीं बंधते हैं सदैव स्वछन्द विचरण करते ही रहते हैं। इससंबंध में मेरी ये इच्छा मन के किसी कोने में सदैव मंथन-चुलबुलाहट किए रहती थी, कि काश! किसी योगी का साक्षात्कार हो, पर कोई विधि नहीं थी। उनकी स्वेच्छा पर छोड़ना पड़ता था।

एक बार शिविर में पूज्य सद्गुरुदेव जी आत्मा आह्वान प्रयोग शक्तिपात के माध्यम से सम्पन्न करवा रहे थे सौभाग्यवश गुरुदेव की कृपा से मैंने भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया, केवल इसी भाव से कि किसी योगी के साक्षात्कार हो सके। मन में यही मंथन करता रहा कि किसी योगी के दर्शन हमें प्राप्त हो जाए . . .क्यों कर रहा था। . . . मैं नहीं जानता ! शिविर के अंत के प्रवचन में गुरुदेव बोल रहे थे लेकिन मेरे लिए कुछ भी स्पष्ट नहीं था।

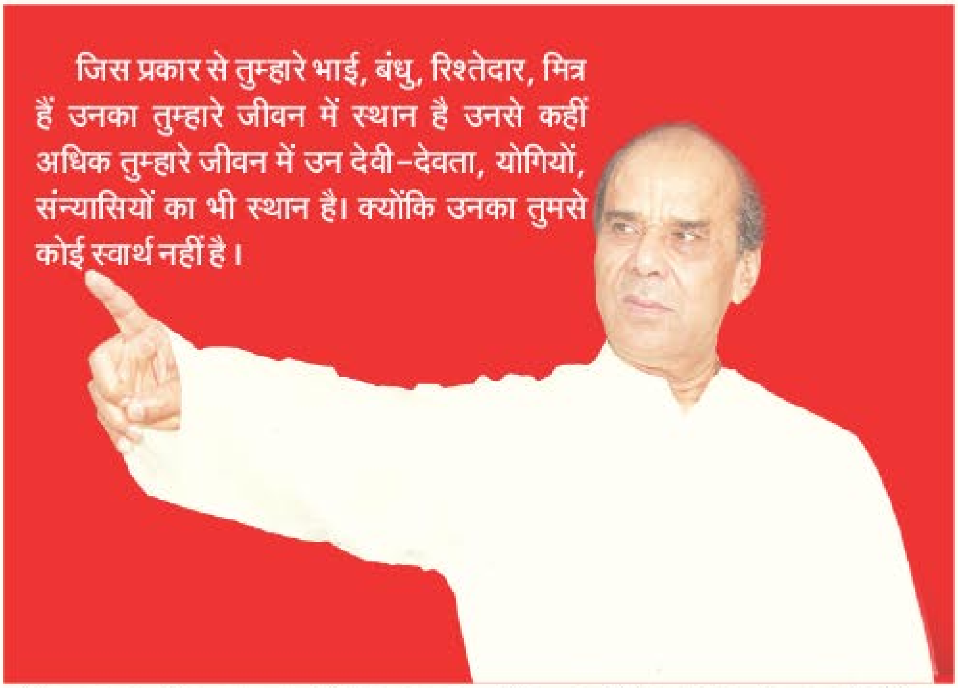
हाँ यह जरूर स्पष्ट हुआ कि ''तुम योगियों, संन्यासियों के दर्शन करना चाहते हो' मैंने तुम्हें वह ताकत, क्षमता, प्रयोग, आशीर्वाद दिए हैं कि अब तुम्हें कोई रोक नहीं सकता है। उन योगियों को आना ही पड़ेगा। उसके लिए केवल तुम्हें एकनिष्ट होकर बुलाने की, आह्वान करने की

आवश्यकता होगी और यदि तुम्हारे हृदय की विह्लता अधिक हुई तो उन्हें सशरीर आना ही पड़ेगा। बात मन में पड़ते ही मैं चौंक गया गुरुदेव मुझे ही बोल रहे हैं। चौकन्ना हुआ मैं सोचने लगा मैं यहाँ एकनिष्ट ही तो हूँ कुछ भी तो अभी तक ध्यान नहीं रह गया है। पुन: गुरुदेव बोले ही जा रहे थे।

''वे तो तुमसे मिलने के लिए स्वयं बेताब, प्रयासरत रहते हैं लेकिन उनका अपना स्तर होता हैं तुम उस स्तर को समझने का प्रयास करो वे तुमसे जरूर मिलेंगे। वे सभी तुम्हारे जीवन में हर क्षण तुम्हारे साथ हैं उनसे भिन्न तुम्हारा जीवन है ही नहीं तुम इस बात को नहीं समझ पाते हो और अकेले ही जीवन को ढोते चले जाते हो। जिस प्रकार से तुम्हारे भाई, बंधु, रिश्तेदार, मित्र हैं उनका तुम्हारे जीवन में स्थान है उनसे कहीं अधिक तुम्हारे जीवन में उन देवी-देवता, योगियों, संन्यासियों का भी स्थान है। क्योंकि उनका तुमसे कोई स्वार्थ नहीं है। उन्हें सिर्फ तुम्हारा पवित्र प्रेम चाहिए। वे भी तुम्हारे दु:ख, सुख में साथी हैं बस केवल वे तुम्हारे स्तर पर तुम्हारे ढंग से नहीं आ सकते। आयेंगे तो भी तुम पहचान नहीं पाओगे। यदि तुम अपने जीवन में उन्हें भी स्थान दो उन्हें पहचानने की चेष्टा करो, तुम्हारे हृदय, चिंतन, विचारधारा, संस्कारों में उनका स्थान हो तो वे अवश्य ही तुमसे मिलेंगे। तुम एहसास करोगे कि हाँ हमारे सम्पर्क में उन सिद्धाश्रम के, हिमालय के योगियों का स्थान है, उन देवी-देवताओं से भी तुम मिल सकोगे, उनका मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकोगे, उनकी कृपा को भी प्राप्त कर सकोगे, उनके सहयोग से तुम्हारा जीवन श्रेष्ठ और स्वर्णिम बन जायेगा, जिससे कि सभी न्यूनता और घटियापन स्वत: ही समाप्त होने लगेगा। उनके तपोबल में इतनी ताकत होती है कि जिसके आगे कोई बाधाएं समस्याएं कोई मायने नहीं रखती है।

मेरा आशीर्वाद हैं कि तुम्हारे जीवन में ऐसे क्षण आएं कि तुम सिद्धाश्रम के योगियों और हिमालय में साधनारत संन्यासियों से सम्पर्क कर सको उनसे बातचीत कर सको।

गुरुदेव के ये शब्द मानों मेरे हृदय को झिझोड़ रहे हो कल्पना के हिमालय से उठकर उस धरातल पर खड़े कर रहे हो जहाँ ये संभव है। मैंने एहसास किया कि गुरुदेव हृदयकी संवेदना को पढ़कर मार्गदर्शन दे रहे हैं और मेरी आँखों से अश्रु कण उन शब्दों से रूक ही नहीं रहे थे। शिविर का समापन हुआ। सभी गुरुदेव जी के चरण स्पर्श कर रहे थे, लम्बी कतार में हम भी लगे और अश्रु से भीगते हुए गुरुदेव के चरण स्पर्श किए जिसमें



कोई इच्छा-आकांक्षा-याचना नहीं थी, बस क्या था वो तो गुरुदेव जाने। लेकिन अश्रु रुक नहीं रहे थे, जब मैंने चरण छुए तो गुरुदेव जो खामोश अंतर्ध्यान में लीन बैठे थे उनकी एक निगाह मेरे ऊपर पड़ी सहसा मेरे आँखों से टकरा गयी। सर से पाँव तक उन्होंने मुझे देखा जैसे लगा बस हो गया जो कुछ होना था। और मैं घर आ गया उक्त प्रयोग का मंत्र जब निर्देशानुसार करता रहा।

एक दिन प्रात: की बेला, उन्हीं दिनों से मेरे मानस में उन अशरीरी आत्माओं, योगियों, देवी-देवताओं के प्रति एक स्थान बन गया, उनके प्रति एक स्मरण बन गया, एक चिंतन, धारणा स्पष्ट होने लगी। जब भी पूजा करता, दीपक जलाता, धूप करता तो यह कामना स्वत: ही स्पष्ट हो जाती कि इसकी सुगंध उन सभी को मिले जो हमें चाहते हैं हमें जानते हैं। मैं तो किसी को नहीं जानता भूलचूक को माफ करे हो सके तो मुझे अपना परिचय अवश्य कराएं। ऐसी कामना सदैव मैं व्यक्त करता रहता था ये मेरी जीवनचर्या बन गयी थी। सूर्योदय का समय था मैं अपने दूर के खेत की देखभाल करने को जा रहा था रास्ते में जाते समय ही सुनसान वन पड़ते थे छोटी सी पहाड़ी थी। बाग-बगीचे थे, सघन वन उपरांत छोटे टीले पर बड़ा सुंदर स्थान निर्मित था। वहाँ मैं जब भी जाता था थोड़ी देर बैठकर प्रकृति का आनन्द अवश्य लेता था। सामने ही एक झील थी। जिसमें कुमोदिनी, कमलिनी के पुष्प खिले थे। आज कुछ और ही दृश्य सामने दिख रहा है। मैं बियावान जंगल को पार कर उस टीले की ओर निहार ही रहा था उसी टीले पर कोई खड़ा है जो हल्का गुलाबी वस्त्र धारण किए हुए हैं सिर पर उसी रंग की पगड़ी हैं अजीब ढंग का चोला है, नीचे लुंगी स्वरूप की धोती भी उसी रंग में थी। फिर भी कुछ भी स्पष्ट नहीं हो रहा था। बड़े सुन्दर ढंग की काष्ठ पादुका है जो सामान्य रूप से बाजार में मिलती नहीं है। सामान्य कद काठी में दिखने वाले शरीर में अद्‌भुत तेजस्विता आकर्षण हैं उन्नत ललाट विशाल वक्षस्थल अजान बाहु सब मिलाकर विशाल प्रचण्ड पुरुषता को प्रकट कर रहे थे, कौन हैं जो बरबस मुझे खींच रहे हैं, उनकी एकटक निगाहें मेरे ऊपर हैं। जैसे वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो, मैं उन्हें निहारता उनके उस रूप रस का पान करता निकट होता चला जा रहा था। मन में मंथन भी था कि यह कौन हो सकता है जो मेरी प्रतीक्षा कर रहा है क्या व्यक्तित्व है? कोई बाहरी आदमी है - नहीं मैं भगवान दत्तात्रेय हूँ - मैं तो दत्तात्रेय को जानता नहीं हूँ उन्हें देखा नहीं केवल नाम सुना है। इतने उच्चकोटि के योगी मुझे कैसे मिल सकते हैं - मिल सकते हैं तुमने ही तो बुलाया है मुझे, हो सकता है यह मेरी अज्ञानता हो मुझे माफ करे पर आगे का मार्गदर्शन करे।

ये सभी कुछ बाते मूक चेतना में ही हो रही थी। इतना परिचय इतनी सजीवता सामान्य में नहीं हो सकती। तब तक मैं उने सम्मुख पहुँच गया। मेरे दोनों हाथ जुड़ गए मैंने उन्हें प्रणाम किया। वे क्षणिक मुस्कान बिखेरते हुए बोले ''मैं ही भगवान दत्तात्रेय हूँ'' मुझे सहसा आश्चर्य हुआ फिर वे बोले ''तुम्हारी इच्छा थी इसलिए आना पड़ा, तुम सौभाग्यशाली हो और निरंतर सौभाग्य को प्राप्त करते रहो मैं आशीर्वाद देता हूँ'' और वे देखते ही देखते अंतर्ध्यान हो गए। मैं उनकी उस सुगंध से आप्लावित हो रहा था शरीर में इतनी ऊर्जा प्रवाह थी कि मैं व्यक्त नहीं कर सकता, प्रसन्नता कि पूछो मत मैं झूम उठा, उस क्षण की मैं कौन हूँ! और सोचने लगा कि मेरी भी क्या तमन्ना . . . है।

– एक साधक

अहंकार

एक बार छत्रपति शिवाजी अपने किले का कार्य करवा रहे थे और घूम-घूम कर देख रहे थे कि क्या-क्या कार्य हो रहा है। इतने में उनके मन में आया कि ये बेचारे गरीब कितनी मेहनत करते हैं। दूसरी बार उनके मन में आया कि देखो मेरी वजह से कितने आदमियों का पेट भरता है। उनके गुरु रामदास जी ने अपनी कुटिया में बैठे-बैठे उनके अन्दर आये इस अहंकार भाव को पढ़ लिया। उन्होंने सोचा कि यदि अहंकार ने इसके मन में घर कर लिया तो यह नष्ट हो जाएगा क्योंकि अहंकार तो शिष्य को पथभ्रष्ट कर देता है ऐसा सोचकर गुरु जी अचानक ही वहां प्रकट हो गए। गुरुदेव को अचानक वहां देख कर शिवाजी भौंचक्के रह गये।

गुरु रामदास जी ने कहा शिवा तूने किला बनवाया है, मैं देखने आया हूँ। फिर शिवाजी के साथ घूम-घूम कर पूरा किला देखा। एक स्थान एक बड़ा पत्थर पड़ा हुआ था। अचानक गुरुजी वहां रुक गये और बोले, शिवा यह पत्थर यहाँ क्यों पड़ा है, इसको तुड़वाओ। शिवाजी ने तुरन्त पत्थर तोड़ने का आदेश दिया। पत्थर तोड़ा गया, उसमें एक चिल्लूभर गड्ढा था जो पानी से भरा हुआ था और उसमें एक मेंढक कुछ खा रहा था। गुरु रामदास जी ने कहा वाह शिवा! पत्थर में पानी भर कर मेंढक के लिए भी तूने बन्दोबस्त कर दिया। वाह, तुमने तो कमाल कर दिया। शिवाजी तुरंत उनके इस व्यंग्य को समझ गये और तुरन्त उनके पाँव पकड़ लिए।

सद्गुरुदेव ने दिल्ली आश्रम में 1995 में स्टाफ को इसी बात को समझाते हुए कहा था कि तुम्हें अहंकार करने की आवश्यकता नहीं है कि तुम यहाँ का कार्य कर रहे हो, इसलिए यह हो रहा है, कार्य तो मैं ही करता हूँ। तुम नहीं थे तब भी मेरा कार्य हो रहा था और तुम सब नहीं होंगे तो भी यह सभी कार्य होंगे ही, कोई कार्य रुकेगा नहीं। हाँ! तुम सब हो तो मुझे खुशी है कि तुम सब मेरे हाथ, पैर, आँख बनकर कार्य कर रहे हो और यहाँ के कार्यों में व्यतीत किये गये तुम्हारे एक-एक क्षण का हिसाब मैं रखता हूँ, मैं किसी का भी उधार नहीं रखता।

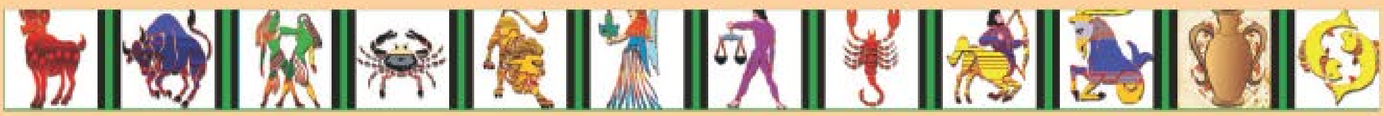


आज भी जब मैं उस समय सद्गुरुदेव के कहे शब्दों को याद करता हूँ तो उन्हीं में खो जाता हूँ और मुझे अहसास होता है कि कैसे सद्गुरुदेव हमसे कार्य करवाने का बहाना बना कर हमारे दुर्भाग्य की लकीरों को सौभाग्य में बदल देते हैं और हमें अहसास तक नहीं होने देते।



▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'





मेष सप्ताह की शुरुआत सामान्य रहेगी। जमीन-जायदाद का मामला सुलझने की संभावना है। अनावश्यक रूप से यात्रा हो सकती है। प्रयास सफल नहीं होंगे, शत्रु हावी रहेंगे। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। छोटी-छोटी बातों से विवाद उत्पन्न होंगे। अपने ही हानि पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। माह के मध्य में कोई अच्छा समाचार मिल सकता है। खुशी के साथ परेशानियां भी आयेंगी। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें, खर्च पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के हिसाब से समय ठीक नहीं है। व्यर्थ यात्रा न करें। घरेलु वातावरण उलझन पूर्ण रहेगा। आखिरी सप्ताह में कुछ कार्य इच्छानुसार होंगे। सट्टे आदि में पैसे न लगायें, नुकसान होगा। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें। आप इस माह हनुमान साधना करें।

शुभ तिथियाँ 6, 7, 8, 16, 17, 18, 25, 26

वृष माह का प्रारम्भ सुखकर रहेगा। जमीन-जायदाद में हिस्सा मिलेगा। स्वास्थ्य को लेकर चिंता रहेगी। रुके हुये रूपये प्राप्त होंगे। इस समय लिया निर्णय भविष्य के लिए हितकारी होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढेगी। माह के मध्य में छोटी-छोटी बातों पर वाद-विवाद हो सकता है। अपने ही हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे। विपरीत परिस्थितियों में भी आप आत्मविश्वास से आगे बढ़ सकेंगे। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता लाभ देगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। व्यर्थ की यात्रायें न करें। वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है, दूसरों की मदद करेंगे। काम-धंधे में नये अनुबंध मिलेंगे। आप गुरु हृदयस्थ दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 1, 8, 9, 10, 18, 20, 27, 28

मिथुन प्रथम सप्ताह में कार्यो के उचित परिणाम प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ, साधना में रुचि बढ़ेगी। वैवाहिक जीवन सुख पूर्ण रहेगा। कार्य के सिलसिले में बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरी पेशा लोगों की अधिकारी के साथ खटपट हो सकती है। बुद्धि-विवेक से निर्णय लें। परिवार का साथ सफलता देगा। माह के मध्य में कोई छोटी सी बात तनाव देगी। दाम्पत्य जीवन में भी तनाव का क्षण आ सकता है। विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है, साधना में सफलता के योग हैं। इस समय बनाई गई योजना भी लाभ देगी। आय में वृद्धि होगी। माह के अंत में परिवार में आपस में मतभेद हो सकता है। कोई भी निर्णय सोच-समझ कर लें, वाणी पर संयम रखें। रुके हुये कार्य पूरे हो सकते हैं। आप इस माह सद्गुरुदेव पूजन विधि विधान से सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ 2, 3, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30

कर्क प्रथम सप्ताह असंतोषजनक रहेगा। कुछ नुकसान भी हो सकता है। किसी भी कार्य में जबरदस्ती न करें। मित्रों से सलाह लेकर कार्य करें। विद्यार्थियों के लिए यह समय उन्नतिदायक रहेगा। समय अनुकूल न होने से कोई भी कर्म सावधानीपूर्वक करें अन्यथा बिना वजह उलझ जायेंगे। माह के मध्य से समय कुछ अनुकूल होगा। जमीन-जायदाद की समस्यायें सुलझाने में सफल होंगे। धैर्य और साहस बनाये रखें। अविवाहितों के विवाह सम्भव है। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है। अधिक तर्क-वितर्क से बचें। अपने ही धोखा दे सकते हैं। मन अशांत रहेगा। फालतू के कार्यों में न पड़ें। वाणी पर संयम रखें। संतान आपके कहे में नहीं रहेगी। कारोबार में आवश्यकतानुसार आमदनी बनी रहेगी। आप इस माह भाग्योदय साधना करें।

शुभ तिथियाँ 4, 5, 13, 14, 15, 21, 23, 24

सिंह माह का प्रथम सप्ताह सुखद रहेगा। जमीन खरीददारी होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा समय है। समाज में सम्मान प्राप्त होगा। विद्यार्थियों को ज्ञान की बातें सीखने को मिलेगी। कहीं से रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। कोई छोटी सी बात झगड़े का कारण बन सकती है। चरित्र पर कीचड़ उछाला जा सकता है। कैरियर में टेंशन हो सकती है। अधूरे कार्य मित्रों की सहायता से पूरे होंगे। मनोबल एवं उत्साह बढ़ेगा। कोई शुभ समाचार भी मिल सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहने की जरूरत है। तीसरे सप्ताह में चिंताएं परेशान करेगी। परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें। आवेश में कोई गलत कार्य न करें। भगवान शिव की साधना करें।

शुभ तिथियाँ 6, 7, 8, 16, 17, 18, 25, 26

कन्या माह का प्रारम्भ प्रसन्नतादायक रहेगा। पुराने दोस्त से मुलाकात चित्त में प्रसन्नता लायेगी। बेरोजगारों को ताने सुनने पड़ेंगे, गलत राह न भटकें। यात्रा में धन लाभ देगा। व्यापार में वृद्धि होगी।

चलते-फिरते किसी से उलझें नहीं। घर में अशांति का वातावरण रहेगा। मानसिक तनाव से काम बिगड़ सकते हैं। कर्मचारी वर्ग का मनचाहा ट्रांसफर सम्भव है, प्यार में सफलता मिलेगी। तीसरे सप्ताह में तबीयत खराब रहने से मन अशांत रहेगा। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। कम्प्यूटर के क्षेत्र में रुचि रहेगी। माह के अंत में आय के मार्गप्रशस्त होंगे। सुखद घटनायें होंगी। आप भाग्योदय साधना करें।

शुभ तिथियाँ 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

तुला प्रथम सप्ताह की शुरुआत अच्छे कार्यों से होगी। नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति की सम्भावना है। ख्याति एवं सम्मान प्राप्त होगा। किसी वजह से मानसिक अशांति हो सकती है। इस समय सोच-समझ कर कार्य करें। गलत कार्यों से बचें। गलत निर्णय चिंता का कारण बन सकते हैं। माह के मध्य में रोजगार के अवसर मिलेंगे। प्रेम में धोखा हो सकता है। पैसों की तंगी रहेगी। किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात जीवन को प्रभावित करेंगी। तीसरे सप्ताह में यात्रा हो सकती है, जो लाभकारी होगी। अपनी जिम्मेदारियों के बावजूद घरेलू सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरी करने में सक्षम रहेंगे। घरेलू उलझनें रह सकती हैं। बेवजह किसी से वाद-विवाद न करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। समय के महत्व को समझें। आप रसेश्वर साधना करें।

शुभ तिथियाँ 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

वृश्चिक माह का प्रारम्भ लाभप्रद नहीं है। समय फालतू ही व्यतीत होगा। खर्च की अधिकता रहेगी। बेकार की चिंताएं परेशान करेंगी। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। विरोधियों से सावधान रहें। बुद्धि-विवेक से कार्य करें। माह के मध्य में भाग्योदय होने के संकेत हैं। नौकरीपेशा लोगों को वाद-विवाद से बचना चाहिए। अन्यथा प्रतिष्ठा को ठेस पहुंच सकती है। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। कम्प्यूटर क्षेत्र में जॉब मिल सकते हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, सावधानी रखें। परिवार में बेटी का रिश्ता हो सकता है। परिस्थितियों में सुधार आयेगा। बुजुर्गों के बताये मार्ग पर चलें। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24

धनु माह का प्रारम्भ शुभकारी है। दूसरों की सहायता करेंगे। लेकिन इसमें भी बदनामी मिल सकती है। नौकरी एवं व्यापार से लाभ की प्राप्ति होगी। इस समय नया वाहन खरीदने से बचें। विद्यार्थियों को नई पुस्तकों में रुचि रहेगी। परिवार में मतभेद होने की संभावना है। कहीं से कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। कर्मचारी वर्ग को इच्छानुसार स्थानान्तरण मिल सकता है। जमीन-जायदाद के मामले सुलझेंगे। किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। पारिवारिक जीवन मधुरतापूर्ण रहेगा। दुश्मनों से सावधान रहने की आवश्यकता है। समाज में प्रतिष्ठा मिलेगी। माह के आखिरी दिनों में भाग्य में रुकावट आ सकती है। भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 6, 7, 8, 16, 17, 18, 24, 25

मकर प्रथम सप्ताह की शुरुआत अच्छी रहेगी। समस्याओं को हल कर सकेंगे। किसी अधिकारी की सिफारिश पर नौकरी भी मिल सकती है। अदालत के चक्करों से छुटकारा मिलेगा। एकदम से किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। कोई भी कार्य सोच-विचार कर करें। उतार-चढाव की स्थिति बनेगी, जिस पर विश्वास करते हैं वही धोखा देगा। अधिकारी

सर्वार्थ सिद्धि योग	- जुलाई - 2, 12, 14, 24, 26, 29
रवि योग	- जुलाई - 3, 11, 24, 26, 28, 29
अमृतसिद्धि योग	- जुलाई - 14, 26, 29

वर्ग से नोक-झोंक हो सकती है। माह का मध्य थोड़ा प्रतिकूल है। किसी भी कार्य को दूसरे के भरोसे न छोड़ें। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। साझेदारी के व्यापार से सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप कम्प्यूटर सीखें, आगे आप को आवश्यकता पड़ सकती है। कमला दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

कुम्भ माह का प्रारम्भ कोई शुभ समाचार मिलेगा। रुपयों की आवक होगी। आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा। घर-परिवार में शुभ कार्य होंगे। दूसरे सप्ताह में किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। शक के दायरे में आ सकते हैं। कोई भी गलत कार्य न करें। पुत्र व्यापार संभालने योग्य है, बेटी का रिश्ता आयेगा। भाग्योदय का समय है। तीसरे सप्ताह में किसी की तबियत खराब होने से चिंता में डूब जायेंगे। कार्यों में बाधायें आयेगी, कामकाज में मन नहीं लगेगा। काम का बोझ बढ़ेगा। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आखिरी सप्ताह प्रसन्नता लायेगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। नौकर की वजह से आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। कोई आपका विश्वास तोड़ेगा। घर-परिवार से सहयोग मिलेगा। आप श्रावण मास की साधना करें।

शुभ तिथियाँ 2, 3, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30

मीन माह का प्रारम्भ पक्ष में नहीं है। नये कार्य की शुरुआत आप न करें। सोच-समझ कर ही कार्य करें। यात्रा से व्यापार में वृद्धि होगी। वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। अपनों से सावधान रहें, उन्नति में बाधा पैदा करेंगे। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। धार्मिक कार्यों में समय बीतेगा। तीसरे सप्ताह में बनाई गई योजनायें निष्फल रहेंगी। मन अशांत एवं उदास रहेगा। रुकावटें आयेगी। विद्यार्थी पढ़ाई में रुचि से लगा रहेगा। राजनीति के क्षेत्र में सफलता के अवसर हैं। महत्वपूर्ण कार्य किसी अन्य को न सौंपें। इस समय शत्रु हावी हो सकते हैं। यात्रा से लाभ होगा। सोचे गये कार्य पूरे होंगे। इस माह शत्रु बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.07.20	बुधवार	हरिशयनी एकादशी व्रत
05.07.20	रविवार	गुरु पूर्णिमा
06.07.20	सोमवार	श्रावण प्रारम्भ
08.07.20	बुधवार	व्रजेश्वरी सिद्धि दिवस
12.07.20	रविवार	शीतला सप्तमी
16.07.20	गुरुवार	कामिका एकादशी
18.07.20	शनिवार	भाग्योदय जयंती
20.07.20	सोमवार	हरियाली अमावस्या
25.07.20	शनिवार	नाग पंचमी

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई 12,19,26)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (जुलाई 6,13,20,27)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (जुलाई 7,14,21,28)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (जुलाई 8,15,22,29)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (जुलाई 9,16,23,30)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जुलाई 10,17,24,31)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जुलाई 11,18,25)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक



यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जुलाई 2020

11. प्रात: मंदिर में तेल का दीपक जलाकर निम्न मंत्र का 21 बार जप करके जाएं - मंत्र : ॐ क्लीं ॐ।
12. सूर्य भगवान को लाल पुष्प चढ़ाकर जल अर्पित करें।
13. पारद शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल चढ़ायें।
14. हनुमान अष्टक का एक पाठ करके जाएं।
15. आज प्रात: प्रथम रोटी गाय को खिलायें।
16. आज आप निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करके जाएं - मंत्र : ॐ ह्रीं ॐ।
17. अपने पूजा स्थल में आज माँ दुर्गा की आरती करके जाएं।
18. आज प्रात: 11 बार शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नम: का जप करके जाएं।
19. पूजन के बाद अग्नि प्रज्वलित करके निम्न मंत्र से 108 आहुतियां दें - मंत्र : ॐ ह्लीं ॐ।
20. आज सोमवती अमावस्या के दिन पत्रिका में प्रकाशित साधना करें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर निखिल स्तवन के 1 से 11 तक श्लोक का हिन्दी सहित पाठ करें।
22. प्रात: पूजन के बाद 'श्रीं' बीज मंत्र का 51 बार उच्चारण करके जाएं।
23. आज परिवार में सुख शांति हेतु निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें - मंत्र : ॐ ह्रीं ॐ।
24. आज गणपति के रूप में चावल की ढेरी पर एक सुपारी स्थापित करें फिर पूजन कर ॐ गं गणपतये नम: का 51 बार जप करें।
25. सरसों के तेल में कुछ सिक्के डालकर दान कर दें।
26. आज सुबह दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
27. श्रावण सोमवार पर पत्रिका में प्रकाशित साधना करें।
28. आज निम्न मंत्र का 21 बार जप करके जाएं -
    मंत्र : हुं हुं हनुमतये नम:।
29. एक कागज पर कुंकुम से 'क्लीं' लिखें एवं अपनी मनोकामना लिखकर देवी मंदिर में चढ़ा दें।
30. आज प्रात: उठते ही धरती माता को प्रणाम करें।
31. एक तांत्रोक्त नारियल (न्यौ. 150/-) लेकर परिवार के सभी सदस्यों के ऊपर से घुमाकर किसी सुनसान जगह पर फेंक दें बाधाएं समाप्त होंगी।

अगस्त 2020

1. शनि शांति के लिए शनि मुद्रिका धारण करें।
2. आज पक्षियों को दाना डालें।
3. आज कोई भी शक्ति साधना करें।
4. हनुमान मंदिर में बेसन के लड्डूओं का भोग लगायें।
5. आज बाहर जाने से पूर्व दही का सेवन करें।
6. आज गुरु मंत्र की 8 माला करके जाएं।
7. आज 'ह्लीं' बीज मंत्र का जप करके जाएं।
8. सरसों के तेल में शनि गुटिका (न्यौ. 150/-) डालकर दान करें - दु:ख दारिद्रय दूर होगा।
9. आज सूर्य मंत्र का 21 बार उच्चारण करके सूर्य का अर्घ्य दें। मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:।
10. आज पूजन के बाद स्वास्थ्य लाभ के लिए कायाकल्प गुटिका (न्यौ. 210/-) धारण करें।

काली जयंती : 11.08.2020



।। अथ श्री काली तंत्रम् ।।

शव पर आरूढ़, गले में मुण्ड माला धारण किए हुए, हाथ में खड्ग, वर मुद्रा, कटा हुआ मुण्ड, श्मशान निवासनी महाकाली का स्वरूप तो निराला है, और जिस साधक ने काली की साधना नहीं की, वह तंत्र में पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता, काली तो तंत्र की आधार शक्ति है।

शत्रुओं का मर्दन करने वाली, भक्तों को अभय प्रदान करने वाली, जिसके अट्टहास से तीनों लोक गूंज उठते हैं, जिसकी तपस्या देवता भी करते हैं, जिसके बिना शिव भी शक्तिहीन है, उस महाकाली को मैं शत-शत नमन करता हूँ।

महाकाली की साधना पूर्णरूप से केवल तांत्रोक्त रूप से ही सम्पन्न की जा सकती है, और जो साधक विधि-विधान सहित काली साधना सम्पन्न करता है, वह अपने जीवन में भय, बाधा और शत्रुओं का नाश कर देता है। महाकाली का अभय व वर प्राप्त साधक तो स्वयं काल के समान हो जाता है, तथा निर्विघ्न अपनी जीवनयात्रा में सम्पूर्णता के साथ विचरण करता है।

काली साधना के सम्बन्ध में तांत्रिक विधान की पुस्तकों की भरमार है, कहीं श्मशान में पूजा करने का विधान है, तो कहीं विशेष बलि देने का विधान है, कई पुस्तकों में शव पर बैठ कर अनुष्ठान का वर्णन है, तो कहीं नग्न हो कर नग्न स्त्री के साथ भोग करते हुए विशेष तांत्रिक क्रिया का विधान है, और तो और बिल्ली, भेड़, ऊंट, भैंसे तक की बलि का वर्णन आया है। यदि कोई इन पुस्तकों के आधार पर तांत्रिक क्रियाएं सम्पन्न करे तो या तो वह पागल हो जायेगा अथवा लोग उसे पागल घोषित कर देंगे। तांत्रिक साधनाएं मूल रूप से तो अत्यन्त सरल है। इसे तो पंडितों, पुरोहितों ने अपने स्वार्थवश तोड़-मरोड़ दिया है, जिससे सामान्य साधक भयभीत रहे। आज आपके सामने एक अत्यन्त सरल काली तंत्र विधान दिया जा रहा है, जिसे आप अपने घर में, अपने पूजा स्थान में बैठ कर सम्पन्न कर सकते हैं। जब काली को 'मां' कहा गया है, तो उस मां के आशीर्वाद की प्राप्ति तो पूर्ण निष्ठापूर्वक भक्ति करने वाले साधक को अवश्य प्राप्त होगी, उसके लिए गन्दी प्रक्रियाएं सम्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं है, पुत्र की पुकार सुन कर मां को तो आना ही है, आवश्यकता है तो विगलित कंठ से पुकारने की।

काली तन्त्र विधान

यह साधना अमावस्या की रात्रि या किसी भी रविवार को सम्पन्न की जा सकती है। अभी का श्रेष्ठ मुहूर्त काली जयंती 11.8.2020 को आ रहा है ।इस दिन रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठे और अपने सामने स्वर्ण अथवा ताम्र धातु से निर्मित महाकाली यंत्र के सबसे पहले दूध से स्नान कराएं, फिर शुद्ध जल धारा से, तत्पश्चात् एक ताम्र पात्र में पुष्प रख कर निम्न मंत्र से देवी का ध्यान करते हुए पूजा कार्य आरम्भ करें

।। ॐ ह्रीं कालिका योग पीठात्मने नमः ।।

इस साधना में आठ दिशाओं में आठ भैरव तथा आठ भैरवियों की स्थापना करें, इस हेतु तांत्रोक्त आठ भैरव चक्र, आठ भैरवी चक्र की स्थापना करें, ये अष्ट भैरव व भैरवियां है :

अष्ट भैरव – असितांग भैरव, रूरू भैरव, चण्ड भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपालि भैरव, भीषण भैरव, संहार भैरव।

अष्ट भैरवी – श्री भैरवी, महा भैरवी, सिंह भैरवी, धूम्र भैरवी, भीम भैरवी, उन्मत्त भैरवी, वशीकरण भैरवी, मोहन भैरवी।

इन सब की पूजा सिंदूर, अबीर–गुलाल तथा लाल पुष्पों से करें, प्रत्येक के आगे एक–एक फल नैवेद्य के रूप में रखें, धूप और दीप निरन्तर जलता रहे, अब महाकाली यंत्र के आगे साधक नैवेद्य रख कर देवी का ध्यान करें कि

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देही शरणागत वत्सले।
भक्तत्या समर्पये तुभ्यं इह सम्पूर्णपूजनम्।।

अर्थात्, 'हे महादेवी! मैं तेरा भक्त तेरी शरण में हूं, मुझे अभीष्ट सिद्धि प्रदान करें और यह सम्पूर्ण पूजन तुम्हें समर्पित है।' अब साधक पुष्पों की एक माला देवी की फोटो पर चढ़ाएं तथा शान्त मुद्रा में बैठ कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।





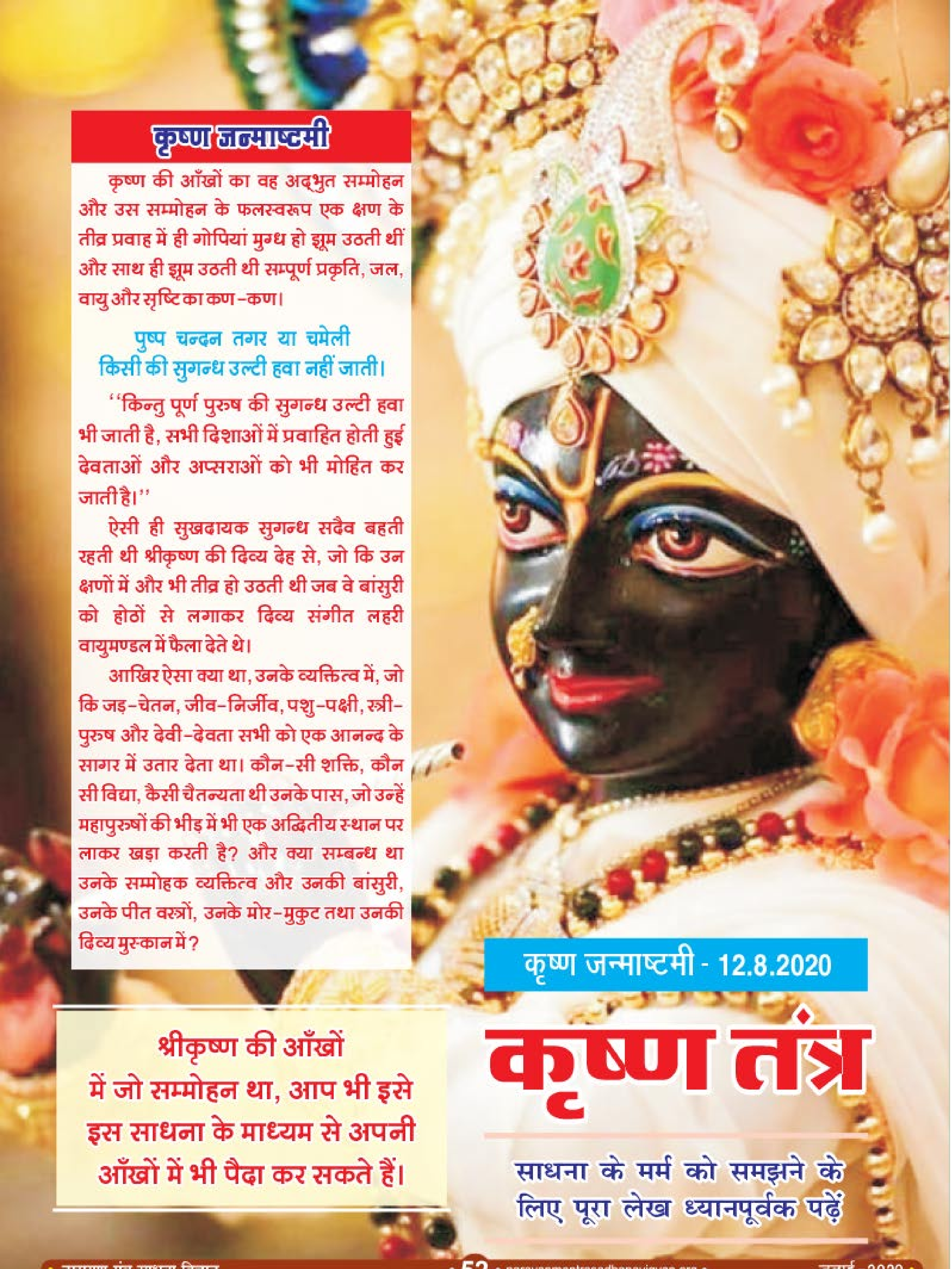
मंत्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।।

उसी स्थान पर बैठ कर काली हकीक माला 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करना है। बीच में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिए। इस प्रकार पूजन कर देवी की आरती सम्पन्न करें और अर्पित किया हुआ नैवेद्य ग्रहण करें।

यह साधना अत्यन्त सिद्ध साधना है और घोर से घोर संकट भी महाकाली की साधना से निश्चित रूप में दूर हो जाता है। साधक की मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं।

न्यौछावर 600/-



कृष्ण जन्माष्टमी

कृष्ण की आँखों का वह अद्भुत सम्मोहन और उस सम्मोहन के फलस्वरूप एक क्षण के तीव्र प्रवाह में ही गोपियां मुग्ध हो झूम उठती थीं और साथ ही झूम उठती थी सम्पूर्ण प्रकृति, जल, वायु और सृष्टि का कण-कण।

पुष्प चन्दन तगर या चमेली
किसी की सुगन्ध उल्टी हवा नहीं जाती।

''किन्तु पूर्ण पुरुष की सुगन्ध उल्टी हवा भी जाती है, सभी दिशाओं में प्रवाहित होती हुई देवताओं और अप्सराओं को भी मोहित कर जाती है।''

ऐसी ही सुखदायक सुगन्ध सदैव बहती रहती थी श्रीकृष्ण की दिव्य देह से, जो कि उन क्षणों में और भी तीव्र हो उठती थी जब वे बांसुरी को होठों से लगाकर दिव्य संगीत लहरी वायुमण्डल में फैला देते थे।

आखिर ऐसा क्या था, उनके व्यक्तित्व में, जो कि जड़-चेतन, जीव-निर्जीव, पशु-पक्षी, स्त्री-पुरुष और देवी-देवता सभी को एक आनन्द के सागर में उतार देता था। कौन-सी शक्ति, कौन सी विद्या, कैसी चैतन्यता थी उनके पास, जो उन्हें महापुरुषों की भीड़ में भी एक अद्वितीय स्थान पर लाकर खड़ा करती है? और क्या सम्बन्ध था उनके सम्मोहक व्यक्तित्व और उनकी बांसुरी, उनके पीत वस्त्रों, उनके मोर-मुकुट तथा उनकी दिव्य मुस्कान में?

कृष्ण जन्माष्टमी - 12.8.2020

कृष्ण तंत्र

श्रीकृष्ण की आँखों में जो सम्मोहन था, आप भी इसे इस साधना के माध्यम से अपनी आँखों में भी पैदा कर सकते हैं।

साधना के मर्म को समझने के लिए पूरा लेख ध्यानपूर्वक पढ़ें

जीवन में सौन्दर्य, सुगन्ध, पुरुषत्व, संगीत, हास्य तथा जीवन्तता का उद्भव हो उठता है। सौन्दर्य भी ऐसा, कि मात्र उस महापुरुष तक सीमित न रहकर, वह स्वत: ही चारों ओर फैलने लग जाता है। फिर कौन होगा, जो सौन्दर्य और वह भी निष्कलंक सौन्दर्य से प्रभावित न हो

भारतवर्ष में युगों से ही ऋषि, महर्षि और योगीजन ने मन पर विजय पाने तथा आत्मा को जीवन में सर्वोपरि स्थान देने के लिए अनेकों प्रयास किये हैं, क्योंकि साधना के आधार पर उन्होंने बहुत पहले ही जान लिया था, कि जीवन में पूर्णता हेतु, जीवन के सौन्दर्य को पूरी तरह पुष्पित करने हेतु मन का नहीं अपितु आत्मा का विकास आवश्यक है। **इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु अध्यात्म का विकास हुआ और इस विज्ञान के केन्द्र में था मन के मोहन की प्रक्रिया। मन का मोहन यानि स्व-मोहन या सम्मोहन, क्योंकि जब तक स्वयं के विचार व स्वयं की शक्ति पूर्णरूपेण केन्द्रित नहीं होगी, तब तक आत्मा की सुगन्ध का जीवन में प्रवाहित होना सम्भव ही नहीं। इसी उच्च स्थिति को प्रतीक रूप में प्रतिबिम्बित करता था पीत वस्त्रों का धारण करना।**

जो बिना चित्त को मोहित किए,
पीत वस्त्रों को धारण करता है,
वह संयम और सत्य से हीन,
पीत वस्त्र का अधिकारी नहीं।।

यों वस्त्रों से इसका कुछ अधिक लेना-देना नहीं है, क्योंकि जिसने अपनी आँखों में सम्मोहन को उतार लिया, उसके शरीर के चारों ओर वैसे ही एक स्वर्णिम आभा मण्डल उत्पन्न हो जाता है। परन्तु किसमें क्षमता है, इस आभामण्डल को देख पाने की? कोई-कोई ही वह क्षण होता था, जब कृष्ण के प्रेम से सराबोर गोपियों एवं उनके सखाओं को सब कुछ स्पष्ट हो उठता। इसलिए पीत वस्त्रों को धारण कर श्रीकृष्ण इस अवस्था के एक मूक प्रतीक को अंगीकार किए रहते थे।

जिसने चित्त को मोहित कर दिया है,
शील पर प्रतिष्ठित है,
एवं संयम और सत्य से युक्त है,
वही पीत वस्त्र का अधिकारी है।।

और आकर्षक पीत वस्त्रों में विचरण करते श्रीकृष्ण के बहुमुखी व्यक्तित्व को देख, सभी ठगे से रह जाते थे, जो प्रेम के कच्चे रेशम के धागे से बंधे होते थे, उन्हें लगता कि मुरली मनोहर ने आँखों से कोई जादू कर दिया, परन्तु प्रेम की हिलोरों में किसे चिन्ता रहती है, कि उन्हें मोहित कर लिया गया है? उस आनन्द के अतिरेक में तो सुध-बुध खोकर सभी झूम उठते। परन्तु उनके प्रतिद्वन्दी, जो कि उनके सम्मोहन से छूट पाने का भरसक प्रयास करते रहते लेकिन विफल ही रहते आलोचना करते रह जाते, कि छल से कृष्ण ने उन्हें प्रभावित किया।

और हमको भी ऐसा ही लगता है, कि सद्गुरु अपनी आँखों से, अपने सम्मोहन से, हमारे मन और हृदय पर अधिकार कर लेते हैं; किन्तु सत्य इससे सर्वथा विपरीत है। सद्गुरु तो केवल अपने ही मन को मोहित कर, केन्द्रित कर उसे पूर्णत: निर्मल कर डालते हैं। स्वयं की सम्पूर्ण शक्ति जब एकत्रित हो जाती है और जब व्यर्थ के विचारों में शक्ति नष्ट नहीं होती, तब मन पर आत्मा का आधिपत्य स्थापित हो जाता है।

जीवन में सौन्दर्य, सुगन्ध, पुरुषत्व, संगीत, हास्य तथा जीवन्तता का उद्भव हो उठता है। सौन्दर्य भी ऐसा, कि मात्र उस महापुरुष तक सीमित न रहकर, वह स्वत: ही चारों ओर फैलने लग जाता है। फिर कौन होगा, जो सौन्दर्य और वह भी निष्कलंक सौन्दर्य से प्रभावित न हो और फिर यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है अगर उसका चित्त निर्मल है, तो वह उस सौन्दर्य के प्रवाह में स्वयं ही एकात्म हो जाएगा और अगर छल, द्वेष आदि उसके जीवन के आधार हैं, तो वह आलोचना पर उतर आएगा।

क्या चन्द्रमा आप पर जादू करता है या आप ही उसकी अद्भुत छटा पर मुग्ध हो उठते हैं? क्या गुलाब की सुगन्ध आपको सम्मोहित करती है या आप ही उसका अनुभव कर उसकी सुगन्ध में बह जाते हैं? चन्द्रमा और गुलाब दोनों की ही दिव्यता हर क्षण, हर दिशा में प्रवाहमान रहती है, वह तो आप पर निर्भर है, कि आप उससे किस प्रकार प्रभावित होते हैं और दिव्य पुरुष का

सौन्दर्य तो होता ही ऐसा है, कि आप मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते।

क्योंकि उसके सौन्दर्य में, उसकी आँखों में, उसके मुखमण्डल पर एक दिव्य छटा, एक ब्रह्म सत्य की आभा होती है। उसके शरीर से प्रवाहित होती रहती है अष्टगन्ध, मुख से उच्चरित होते रहते हैं दिव्य वचन तथा कण्ठ से प्रवाहित होता रहता है एक अद्भुत संगीत और यह सम्पूर्ण दिव्यता स्वत: होती है, वह पूर्ण पुरुष स्वयं कुछ नहीं करता,क्योंकि उसको कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं, चाह ही नहीं, कोई आकांक्षा ही नहीं, परन्तु उसकी दिव्यता हरेक को प्रभावित करती ही है, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष, जड़ हो या चेतन।

जिसने स्वयं को जान लिया वह चैतन्यता का पुंज बन जाता है, एक ऐसा पुंज जो सभी को चैतन्यता प्रदान करता हुआ जीवन में चलायमान होता है। तब श्रीकृष्ण की भांति उसकी आँखों में सम्मोहन की एक अद्भुत शक्ति प्रज्वलित हो उठती है।

कठिन नहीं है इस सम्मोहन को प्राप्त करना परन्तु पहले मन से निकाल दें, कि दूसरे को प्रभावित करना सम्मोहन है। जब तक स्वयं आपका मन चंचल है, तब तक जीवन में इस सौन्दर्य का उद्भव सम्भव नहीं।

मेधावी पुरुष सम्मोहन, संयम, संन्यास द्वारा अपने लिए एक ऐसा द्वीप बना लेता है, जिसे बाढ़ भी नहीं डुबा सकती।

संन्यास, सम्मोहन, संयम आदि कोई भिन्न प्रक्रिया या जीवनशैली नहीं है, वरन मूल में चिन्तन एक ही है, कि किस प्रकार से मन को सन्तुलित किया जाए, केन्द्रित किया जाए, मोहित किया जाए और वह भी दूसरों के मन को नहीं अपितु स्वयं अपने चित्त को। जब भी ऐसा हो जाएगा, तो आप अपने अन्दर ही अनुभव करेंगे एक दिव्यता, एक चैतन्यता, एक सुगन्ध, एक संगीत जो आपके जीवन को ही नहीं, आपके आसपास के लोगों के जीवन को भी प्रेम, हास्य, निर्मलता, शान्ति तथा चैतन्यता से सराबोर कर देगा। इसी सम्मोहन की अवस्था को प्राप्त करने के लिए है यह अनूठा कृष्ण तंत्र प्रयोग, जिसे जन्माष्टमी पर सम्पन्न कर निश्चय ही सफलता के उच्च शिखर को आप छू सकते हैं।

साधना विधान

1. 12.8.20 को प्रात:काल आप इस सम्मोहन साधना को सम्पन्न करें। अन्यथा आप यह साधना किसी भी माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न कर सकते हैं।
2. इस साधना में आवश्यक सामग्री कृष्ण तंत्र के मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठित 'सम्मोहन यंत्र', 'कृष्ण चक्र' और 'सम्मोहन माला' है।
3. प्रात: ही स्नानादि कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएं। सामने चौकी पर गुलाब की पंखुड़ियां बिखेर दें। किसी पात्र में 'सम्मोहन यंत्र' को स्थापित कर चौकी के मध्य में रखें।
4. यंत्र का पूजन अष्टगन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि से करें। यंत्र की दाहिने ओर एक पुष्प रखकर उस पर 'कृष्ण चक्र' रखें। यदि आपके पास भगवान कृष्ण का चित्र हो, तो उसको भी स्थापित कर दें।
5. भगवान कृष्ण का ध्यान करें

   कदम्ब-मूले गायन्तं, गोपालं वन-मालिनम्।
   कदम्ब-कुसुमैर्जुष्टं चिन्तयित्वा जनार्दनम्।।

6. 'कृष्ण चक्र' पर मंत्र बोलते हुए केसर की बिन्दी लगाएं

   1. ॐ किरीटाय नम:, 2. ॐ कुण्डलाय नम:,
   3. ॐ शंखाय नम:, 4. ॐ चक्राय नम:,
   5. ॐ अंगदाय नम:, 6. ॐ पद्माय नम:,
   7. ॐ अंकुशाय नम:, 8. ॐ धनुषाय नम:,
   9. ॐ शराय नम:।

7. 'सम्मोहन माला' से निम्न मंत्र की 11 माला जाप करें

मंत्र

।। ॐ सं संमोहनाय कृष्णाय भद्राय ॐ फट्।।

पूजन समाप्त कर अगली अष्टमी को यंत्र, माला तथा चक्र किसी नदी में प्रवाहित कर दें। तब तक नित्य एक माला मंत्र जप करें। आप स्वयं अपने अन्दर एक नई चेतना अनुभव करेंगे। जिस भी कार्य को हाथ में लेंगे उसमें निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी तथा आप अनुभव करेंगे, कि अन्य लोग पहले से कहीं अधिक उत्साह के साथ आपकी सहायता करने के लिए तत्पर हो उठे हैं।

साधना सामग्री- 450/-



श्रीमार्कण्डेयकृतं स्तोत्रम्



श्रावण मास में नित्य एक पाठ करें

रत्सानुशरासनं रजताद्रिशृंगनिकेतनं शिंजिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।1।।
पंच पादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम्।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।2।।
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं पंकजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।
देवसिद्धतरंगिणीकरसिक्तशीतजटाधरं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।3।।
कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।4।।
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलंपरश्वधधारिणं मृगधारिणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।5।।
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं शिवलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिबर्हणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।6।।
भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।7।।
विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं संहरन्तमथ प्रपंचमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।8।।
रुद्रं पशूपतिंस्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।9।।
कालकण्ठं कालमूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।10।।
नीलकण्ठं विरुपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।11।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।12।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।13।।
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।14।।
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।15।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।16।।

।। इति श्रीमार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

कैलाश के शिखर पर जिनका निवास गृह है, जिन्होंने मेरुगिरि का धनुष, नागराज वासुकि की प्रत्यञ्चा और भगवान विष्णु को अग्निमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिनके चरणों की वन्दना करते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।1।।

मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन - इन पाँच दिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगंधित युगल चरण कमल जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला से कामदेव के शरीर को भस्म कर डाला था, जिनका श्रीविग्रह सदा भस्म से विभूषित रहता है, जो भव - सबकी उत्पत्ति के कारण होते हुए भी भव-संसार के नाशक हैं तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।2।।

जो मतवाले गजराज के मुख्य चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पड़ते हैं, ब्रह्मा और विष्णु भी जिनके चरण कमलों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुई शीतल जटा धारण करते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।3।।

गेडुल मारे हुए सर्पराज जिनके कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद अदि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अंधकासुर का नाश करने वाले, आश्रित जनों के लिये कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शांत करने वाले हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।4।।

जो यक्षराज कुबेर के सखा, भग देवता की आँख फोड़ने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं, जिनके श्रीविग्रह के सुन्दर वामभाग को गिरिराजकिशोरी उमाने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कण्ठभाग नीले रंग का दिखायी देता है, जो एक हाथ में फरसा और दूसरे में मृग लिये रहते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।5।।

जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिये औषध रूप हैं, समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष यज्ञ का विनाश करने वाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं, जो तीन नेत्र धारण करते, भोग और मोक्ष रूपी फल देते तथा सम्पूर्ण पाप राशि का संहार करते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।6।।

जो भक्तों पर दया करने वाले हैं, अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिये अक्षय निधि होते हुए भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं, जो सब भूतों के स्वामी, परातपर, अप्रमेय और उपमारहित हैं; पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिनका श्रीविग्रह सुरक्षित है, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।7।।

जो ब्रह्मा रूप से सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि करते, फिर विष्णु रूप से सबके पालन में संलग्न रहते और अंत में सारे प्रपञ्च का संहार करते हैं, सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है तथा जो गणेश जी के पार्षदों से घिरकर दिन-रात भाँति-भाँति के खेल किया करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?।।8।।

'रु' अर्थात् दु:ख को दूर करने के कारण जिन्हें रुद्र कहते हैं, जो जीवन रूपी पशुओं का पालन करने से पशुपति, स्थिर होने से स्थाणु, गले में नीला चिन्ह धारण करने से नीलकण्ठ और भगवती उमा के स्वामी होने से उमापति नाम धारण करते हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।9।।

जिनके गले में काला दाग है, जो कलामूर्ति, कालाग्निस्वरूप और काल के नाशक हैं,उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।10।।

जिनका कण्ठ नील और नेत्र विकराल होते हुए भी जो अत्यंत निर्मल और उपद्रव रहित हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।11।।

जो वामदेव, महादेव, विश्वनाथ और जगद्गुरु नाम धारण करते हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।12।।

जो देवताओं के भी आराध्य देव, जगत के स्वामी और देवताओं पर भी शासन करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा पर वृषभ का चिन्ह बना हुआ है, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।13।।

जो अनन्त, अविकारी, शांत, रुद्राक्ष माला धारी और सबके दु:खों का हरण करने वाले हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।14।।

जो परमानन्द स्वरूप, नित्य एवं कैवल्यपद - मोक्ष की प्राप्ति के कारण हैं, उन भगवाान शिव को मैं मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।15।।

जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता तथा सृष्टि, पालन और संहार के कर्ता हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।16।।

।। इस प्रकार श्रीपद्मपुराणान्तर्गत उत्तरखण्ड में
श्रीमृत्युञ्जयस्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।।



जीवन को प्रसन्नता एवं विजय से भर देने वाला

पांच सूत्री कार्यक्रम

हमारा जीवन हमारे हाथ में हैं, चाहे तो हम इसे उदासी, खामोशी, दु:ख, परेशानियां और चिंता के सागर में डुबो दें, और चाहे तो हंसी-खुशी, आनन्द, मस्ती, उमंग और जोश से परिपूर्ण कर दें, यदि आप दूसरे प्रकार का जीवन चाहते हैं, तो नित्य पांच सूत्री कार्यक्रम अपनाइये, आज ही, अभी, इसी वक्त से संकल्प ले लें कि आप इस कार्यक्रम को अपनाएंगे ही और किसी भी परिस्थिति में इस पर दृढ़ता से पालन करेंगे।

मैं आपको अपने अनुभव के आधार पर विश्वास दिलाता हूं कि आपका जीवन एक अजीब मस्ती, खुमारी और प्रसन्नता से लबालब भर जाएगा।

1. मात्र एक घण्टा-जिससे जीवन बदल जाएगा- इसके लिए प्रात: जल्दी उठने की आदत डालिये, शुरु में एक सप्ताह तक आपको अपने शरीर पर दृढ़ता, अपनानी पड़ेगी, थोड़ी कसमसाहट भी होगी, आलस्य भी आयेगा परन्तु आपने तो दृढ़ संकल्प लिया है कि इस कार्यक्रम को अपनाएंगे ही, इसलिए बिना नागा प्रात: साढ़े चार बजे हर हालत में उठ जाइये, और ठीक पांच बजे घर में पूजा स्थान में या किसी एकान्त कक्ष में चुपचाप प्रभु के चरणों में बैठ जाइये, आप जिस धर्म को भी मानने वाले हो, जिस देवता की भी पूजा आराधना करते हो आप उसके पास चुपचाप बैठ जाइये, यदि आप नास्तिक है, किसी भी देवता को नहीं मानते हैं, तब भी कोई चिंता मत कीजिये, जमीन पर आसन बिछाकर चुपचाप बैठ जाइये, उस समय यह आवश्यक नहीं है कि आप मंत्र जप करें या भगवान का नाम लें, आपको मात्र ऐसा अनुभव करना है कि ईश्वर/परम सत्ता आपके आसपास ही कहीं विचरण कर रहा है, और आसपास में बैठे हुए हैं।

मात्र इतने से ही लोगों को बड़े अच्छे अनुभव हुए हैं, दक्षिण भारत की एक साधिका के पति का व्यापार ठीकठाक चल रहा था, घर में सभी सुखोपभोग की सामग्री थी, दो छोटे-छोटे बच्चे थे, जो अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते थे, आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार की कमी नहीं थी, परंतु वह स्वयं खालीपन सा अनुभव करती थी, ऐसा लग रहा था, कि जीवन में सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है, इस 'कुछ नहीं' की वजह से ही वह मन ही मन रिक्तता अनुभव कर रही थी।

गुरुदेव ने सलाह दी कि तुम कोई ईश्वर चिंतन या मंत्र जप करो, तो उसने कहा कि मैं किसी देवता आदि में विश्वास नहीं करती हूँ।

ठीक है, गुरु का कहना तो मान सकती हो, सुबह जल्दी कमरे में अकेली बैठ जाओ, कुछ मत सोचो, बैठी रहो।

उसने ऐसा ही किया और उसके पत्र की ये पंक्तियां हम सबके लिए प्रेरणास्पद है, "शुरु शुरु में मुझे यह बोरियत और मूर्खता पूर्ण कार्य लगता परंतु सात आठ दिनों बाद ही मुझे ईश्वर की सामीप्यता अनुभव होने लगी, ऐसा लगा कि मैं अपने पिता के पास बैठी हुई हूं, और वे मेरे सिर पर हाथ फेर रहे हैं, और तब से यह नित्य का क्रम हो गया, अब तो मेरे पूरे चौबीस घण्टों में यही घण्टा सार्थक और महत्वपूर्ण बन गया है, यदि कभी ऐसा नहीं करती तो पूरा दिन बेकार चला जाता है, वास्तव में ही इस एक घण्टे ने मेरे पूरे जीवन के खालीपन को आनन्द से भर दिया है।"

यह आवश्यक नहीं है, कि तुम्हें अनुभव हो ही, तुम्हें तो उस एक घण्टे में प्रभु की प्रतीक्षा करनी है, और यदि उनका एहसास हो जाय तो उस एक घण्टे तक उनकी शरण में बने रहना है, चाहे प्रतीक्षा हो चाहे शरण स्थान, आपको तो एक घण्टा नियमपूर्वक देना ही है और आप अनुभव करना कि यह एक घण्टा पूरे दिन रात को आनन्द से सरोबार कर देगा।

2. योगाष्टक नित्य कीजिये और स्फूर्तिवान बने रहिये- जीवन का आनन्द जीवन की मस्ती और जीवन की पूर्णता प्राप्त करने के लिए शरीर का चुस्त दुरुस्त बना रहना भी जरूरी है, यदि आपने कुछ नहीं किया तो यह शरीर जड़ की तरह हो जायगा इसके लिए नित्य प्रात: योगाष्टक कीजिये, ये आठ योगासन किसी योग की पुस्तक या ग्रंथों में नहीं मिलेंगे यह तो गुरुदेव द्वारा निर्मित हैं, पर ये हैं अत्यधिक चमत्कारी और स्फूर्तिदायक। साथ ही साथ ये इतने सरल और सहज है, कि आठ वर्ष के बालक से लेकर अस्सी साल का वृद्ध आसानी से कर सकता है स्त्रियों, महिलाओं और बालिकाओं को भी प्रत्येक परिस्थिति और स्थिति में ये आसन कर लेने चाहिये, इससे कोई अहित नहीं हो सकता।

(अ) शीशे के सामने खड़े होकर चेहरे से विचित्र आकृतियां बनाइये- देह विज्ञान का सीधा-सादा नियम यह है कि जिस मांस पेशी



का उपयोग नहीं होता वह जड़वत हो जाती है, फलस्वरूप यह भाग निर्जीव सा होकर काला सा झुर्रीदार पड़ जाता है, चेहरे पर सैकड़ों मांस-पेशियां है, पर हम केवल कुछ मांस पेशियों का ही उपयोग करते हैं, जिनमें आंखें, नाक, मुंह, और कान इसके अलावा तीन सौ छत्तीस मांसपेशियों का उपयोग कर ही नहीं रहे हैं, जब कि ये सभी मांसपेशियां मिल कर पूरे चेहरे का निर्माण करती है।

इन सभी मांसपेशियों को सक्रिय करने के लिए चेहरे से विचित्र आकृतियां बनाइये, ज्यादा से ज्यादा मुंह खोलिये, आंखें फैलाइये, आंखें सिकोड़िये, गोल होंठ बनाकर हिलाते रहिये, कुछ ही दिनों में चेहरे की त्वचा खिंच कर चमकदार और झुर्रियों से रहित आकर्षक बन जाएगी।

(आ) सीने को फुलाइये-सीना या वक्ष स्थल शरीर का सर्वाधिक आकर्षण केन्द्र है, इसके व्यायाम के लिए दोनों पांव मिलाकर खड़े हो जाइये और ज्यादा वायु सीने में भरिये, उसे छोड़िये, सीने को बांई और मोड़िये, दाहिनी ओर मोड़िये, जल्दी-जल्दी सांस लेते हुए छोड़िये, कुछ समय तक सांस सीने में भर कर रुक जाइये और इसी प्रकार की क्रियाएं तीन या चार मिनट कीजिए, इससे वक्ष स्थल सही स्वरूप में आ जायगा और कुछ ही दिनों में आप अपने आप में परिवर्तन अनुभव करने लगेंगे।

(इ) पेट को खींचिये-सारे रोगों की जड़ पेट ही है, पेट का बढ़ना पूरे शरीर के सौन्दर्य को समाप्त कर देता है, इसके लिए प्रातःकाल दोनों पावों को थोड़ा फैलाकर खड़े हो जाइये और मुंह से जोरों से सांस लेते रहे, छोड़ते रहें यह ध्यान रखें कि सांस मुंह से ली जाय, सांस लेते छोड़ते समय पेट भी पिचके और फूले, इसके बाद कमर पर दोनों हाथ रख कर आगे की ओर मुड़ते हुए नाक से पूरी वायु निकालिये, जिससे पेट पिचक जाय।

इसके बाद पेट को तेजी से अन्दर खीचिएं और छोड़िए और लगभग दो मिनट ऐसा कीजिये, कुछ ही दिनों में स्वतः ही पेट अन्दर धंस जायगा और आप अत्यधिक सुन्दर और आकर्षक दिखाई देने लगेंगे।

(ई) कमर घुमाइये-पतली कमर हमेशा से आकर्षण का केन्द्र रही है, दोनों पांव एक फीट के फासले से फैला दीजिये, कमर पर हाथ रख दीजिये और फिर बाईं तरफ ज्यादा से ज्यादा पूरे धड़ को झुकाइये, इसके बाद दाहिनी ओर पैरों के समानन्तर पूरी शरीर को झुकाइये, इसी प्रकार आगे भी और पीछे भी शरीर को ज्यादा से ज्यादा झुकाने का प्रयोग कीजिये।

फिर हाथ फैलाकर तेजी से अपने पांवों को उसी स्थान पर जमाते हुए चेहरे को पीछे की ओर लाने का प्रयत्न कीजिये, लगभग दो मिनट कमर के इस व्यायाम को दीजिये, कुछ ही दिनों में कमर की फालतू चरबी समाप्त हो जाएगी, और आपकी सुन्दर, आकर्षक कमर बन जाएगी।

(उ) पंजों को मोड़िये-खड़े-खड़े पहले दाहिने पंजे को जमीन से थोड़ा ऊपर उठाकर आगे-पीछे दांये-बाएं मोड़िये, इसी प्रकार बांये पंजे से भी व्यायाम कीजिये, फिर दाहिने पैर को जोरें से झटकिये फिर दाहिने पैर को झटकिये। इस प्रकार एक मिनट व्यय कीजिये।

(ऊ) हलासन-जमीन पर सीधे लेट जाइये, हाथ सीधे जमीन के समानान्तर हों, और फिर दोनों पांवों को थोड़ा-थोड़ा ऊपर की ओर से होते हुए पीछे जमीन पर छूने का प्रयास कीजिए और फिर उसी अवस्था में ले आइये, इस प्रकार दो या तीन मिनट आपको करते रहना है।

(ए) दौड़ना-स्वास्थ्य का परम मित्र दोनों हाथों को मोड़कर सीने के समानान्तर लाकर दौड़ने की मुद्रा बनाइये, और कमरे में एक स्थान पर खड़े-खड़े दौड़ने का अभ्यास कीजिये, ऐसा प्रयत्न कीजिये कि जैसे आप दौड़ रहे हैं।

इस प्रकार योगाष्टक का प्रयोग आप नित्य कीजिये, मैं तो आपको सलाह देता हूँ कि केवल तीन दिन करके तो देखिए, दिन भर आप इतने अधिक स्वस्थ्य, चुस्त तन्दुरस्त बने रहेंगे कि आपको जीवन के प्रति आनन्द अनुभव होने लगेगा, इसमें न तो कठिन योगासन है न क्रिया कलाप। सरल संक्षिप्त और सामान्य व्यायाम है, जो अपने कमरे में खड़े-खड़े मात्र दस मिनट के अंदर-अंदर पूरा कर सकते है, पर इसके चमत्कार आश्चर्यजनक है।

3. साधना मंत्र कीजिये-इस योगाष्टक के बाद आपके घर में जो भी पूजा कक्ष हो या एकांत कक्ष हो वहां बैठकर सर्व विपत्ति निवारण चेतना मंत्र का मात्र पन्द्रह मिनट तक मंत्र जप कीजिये, पन्द्रह मिनट तो जीवन का एक छोटा सा हिस्सा है, परन्तु इससे आगे के चौबीस घण्टे आपके लिए प्रफुल्लतादायक, उर्वस्विता पूर्ण एवं सङ्कलता युक्त होंगे, इसके लिए आपको किसी माला की आवश्यकता नहीं है, केवल पन्द्रह मिनट तक सतत मंत्र जप सम्पन्न करना है, मंत्र इस प्रकार है -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः॥

आप केवल एक सप्ताह भर मंत्र को करके तो देखिये, यह तो शाम्भव मंत्र है, सभी वर्गों और सभी धर्मों के लिए समान रूप से उपयोगी है, आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि यह मंत्र आपके जीवन में आनन्ददायक परिवर्तन लाने में सहायक हो रहा है।

4. प्रसन्नता से छलछलाते हुए काम पर जाइये-आप जो भी काम कर रहे हैं, वह आपके लिए ईश्वर के समान है, काम पर जाते समय आपमें आह्लाद मस्ती, उमंग और जोश होना चाहिए, निष्क्रिय रूप से वहां जाकर अपने आपको तथा अन्य लोगों को हतवीर्य बना देते हैं, इसके विपरीत आपका दिप्-दिप् करता चेहरा हृदय का उछाह और जीवन की उमंग आसपास के वातावरण को भी सुगंधित बना देगी और निश्चय ही आप अपने कार्य में ज्यादा सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

आप केवल एक सप्ताह तक इस प्रयोग को आजमा कर देखिये, आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपका यह परिवर्तन कई लोगों में सुखद परिवर्तन ले आयेगा।

5. रात्रि को सब कुछ प्रभु के चरणों में सौंप दीजिये-आपका प्रातःकाल प्रभु के साथ आरंभ हुआ था, और अब आपको केवल पांच मिनट प्रभु को समर्पित करने हैं, बिस्तर पर बैठे बैठे हीं पांच मिनट के लिए बिल्कुल शांत, सरल मुद्रा में बैठ जाइये, सभी शत्रु और बाधाकारक व्यक्ति को सच्चे हृदय से क्षमा कर दीजिये और फिर सरल चित्त से प्रभु के चरणों में अपने आपको सौंप दीजिये, ऐसा अनुभव करिये कि अब आपका कोई अस्तित्व नहीं रहा।

और आप देखेंगे कि रात में गहरी और आनन्ददायक नींद आपको आयेंगी।

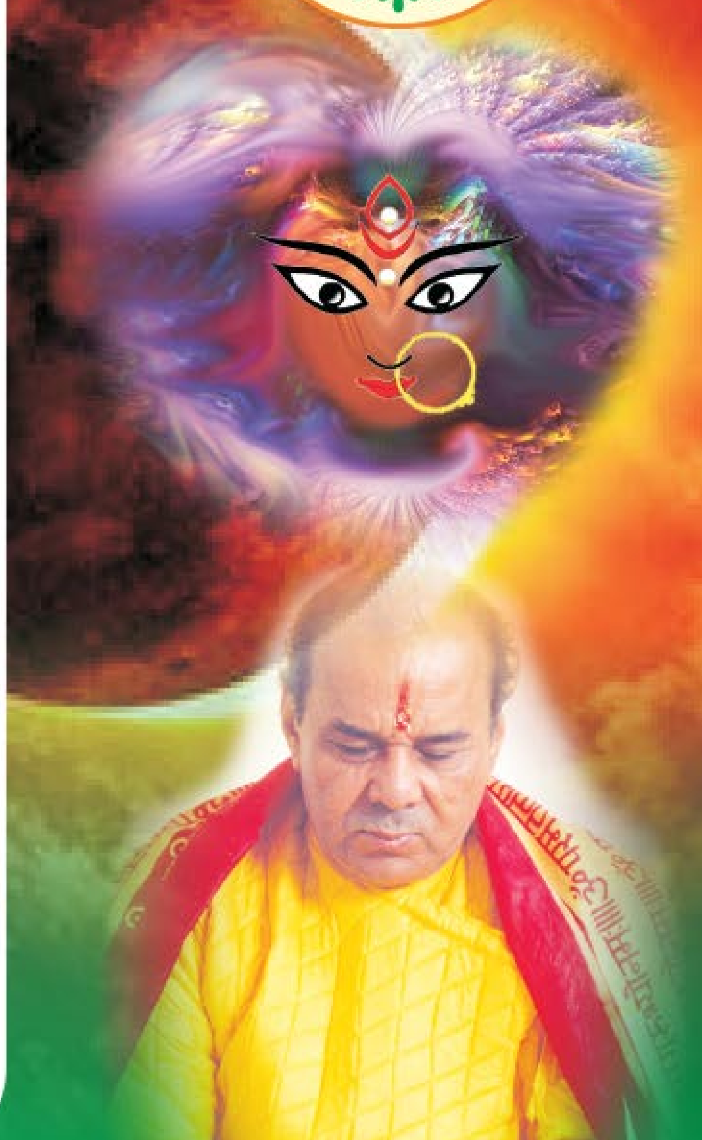
इस प्रकार यह पांच सूत्री कार्यक्रम अपनाने पर आपका जीवन प्रसन्नता एवं विजय से ओतप्रोत हो जाएगा।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

महाकाली

महाविद्या दीक्षा



यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें विघटनकारी तत्व शत्रुओं के रुप में आपके जीवन की शांति, सौहार्द भंग करते ही रहते हैं जिनसे व्यक्ति हर क्षण त्रस्त रहता है... और उनसे छुटकारा पाने के लिए टोने–टोटके आदि के चक्कर में फंसकर अपने समय और धन दोनों का ही व्यय करता है, परन्तु फिर भी शत्रुओं से छुटकारा नहीं मिल पाता।

महाकाली दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति शत्रुओं को निस्तेज एवं परास्त करने में सक्ष्म हो जाता है, चाहे वह शत्रु आभ्यान्तरिक हो या बाहरी, इस दीक्षा के द्वारा वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है, क्योंकि महाकाली ही मात्र वे शक्ति स्वरुपा है, जो शत्रुओं का संहार कर अपने भक्तों को रक्षा कवच प्रदान करती है।

मंत्र

।। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं फट् ।।

योजना केवल गुरु पूर्णिमा एवं काली जयंती इन दो दिन के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 62 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :



नारायण मंत्र साधना विज्ञान



गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039



Krishana Janmaashtami (12.08.20)



KRISHNA'S

HYPNOTIC EYES

Those beautiful lotus eyes of Krishna--a look into their mesmerising depths for a mere second and the Gopi's were left entranced transported to an ethereal plane where nothing but pure divine joy vibrated in the air. And then the wonderful bouquet of Ashtgandh which kept pouring out of his body--more enchanting than the smell of any flower, it most joyously tingled the olfactory nerves of even the Gods and Apsaras, leaving them drifting blissfully in an ocean of sheer ectasy !

What was there in Sri Krishna's personality that so swayed the emotions of others? What made his renditions on the flute so divinely melodious?

For answers to these natural queries one would have to go back to thousands of years in the past when the Sages and Yogis in India for the first time struck upon the most wondrous of all human powers--the Soul. Their experiments led them to perfect efficacious Sadhanas by virtue of which the infinite paranormal powers of the Supreme Conscience could be tapped.

And the basis of this science of Spiritualism became mind-control or **Sammohan** or **'hypnotism of the self'**, for the savants knew that till the thoughts are not concentrated, not controlled the fragrance of the divine cannot permeate into one's life. Once this stage is attained a unique aureate glow starts to shimmer around the physical body, leaving all other humans enthralled by the Enlightened One's presence.

That's how a Sadguru's magic works ! Some might feel that a Sadguru hypnotises his disciples, but nothing could be farther from the truth. A Supreme Master merely hypnotises his own mind and purging all thoughts leaves it pure and unsullied. Thus when all his energy gets concentrated, the brilliance of the soul starts to pour through.

Beauty, fragrance, music, laughter then fill his life. And his beauty does not remain confined rather it is infectious. It flows out by itself and mesmerises whoever comes within its range. A devotee delightfully gives in to this overpowering sensation while someone with deceit, hatred, jealousy as the basis of his or her life starts to protest and criticise the Enlightened One saying that he is forcefully trying to hypnotise others.

The moon or the rose never force their beauty and gragrance on others, rather its we who sense these and are attracted. It simply cannot be avoided.

Quite similar is the magic of the Guru. His eyes shine with love, his face glows with an ethereal radiance, his physique pours out an overwheliming scent and divine words flow out of his lips. He desires nothing wishes to influence none but such is his divinity that not just humans rather the whole nature is left trembling with delight.

One who has realised the self gains a mesmerishing personality like Krishna's. But for this the mind has to be overpowered. Sanyaas, Sammohan and Sanyam are not different but at the root lies the same contemplation i.e. to hypnotise one's own self and let flow the divinity of the soul. The following Krishana Tantra ritual is one unfailing way of developing such an alluring personality.

On the day of **Krishana Janmaashtami** (12.08.20) or on any eighth day of dark half of the lunar month this SAdhana can be accomplished. All you need is **Sammohan Yantra, Krishana Chakra and Sammohan Mala.**

Take a bath early in the morning and get into yellow robes. On a wooden plank spread a yellow cloth and on it shower some rose petals. In a steel plate place the Sammohan Yantra. Offer sandalwood paste, flowers, incense, ghee-lamp and unbroken rice grains to this Yantra.

Pray to Lord Gannpati

Kadamb Moole Gaayantam, Gopaalam Van-Kadamb-Kusumeirjusbtam Chintyitvaa Maalinam Janaardanam.

Place the Krishna Chakra near the Yantra and on it make nine marks with sandalwood paste each time chanting--

Om Kireetaay Namah **Om Kundalaay Namah**
Om Shankhaay Namah **Om Chakraay Namah**
Om Angadaay Namah **Om Padmaay Namah**
Om Ankushaay Namah **Om Dhanushaay Namah**
Om Sharaay Namah

Next chant 51 rounds of this Mantra with a Sammohan Mala.

Mantra

Om Hreem Krishnnasya Sammohan Siddhim Ayeim Om Phat

After the Sadhana on the next **Ashtami** (eighth day of the lunar month) disperse all Sadhana articles in a river. Till then chant one round of the Mantra daily.

You shall yourself feel a surge of divinity in yourself. Whatever you shall do then success shall be yours to cherish for the people shall on their own come forward to help you and make things easy for you.

Sadhana Packet - Rs. 510/-



Any Thursday

Room Koop Cheitanya Sadhana

Activate your sixth sense!

The ancient Indian scriptures state that a person is an epitome of the universe. In him are hidden amazing powers that could be activated through some very intense but easy Sadhanas. Here is one such Sadhana...

This is an amazing ritual for activating every pore of the body so that these pores act like millions of eyes and ears through which one could receive even subtle messages and thus know about the thoughts of others, events occurring in far off places and even things that could happen in the future.

Different Sadhaks could have different experiences. Some might just get to veiw far off places that they have never seen or hear strange voices. Some might gain power of clairvoyance and others might gain power of clair audience. Some might even start having indications of future events through subtle signs or dreams.

Although the experiences might differ but each Sadhak does get to gain something provided he tries the Sadhana with full devotion and concentration. During Sadhana period itself Sadhak starts becoming more conscious and aware and slowly his sixth sense becomes awakened.

This Sadhana should be started from a **Thursday** either in Brahm Muhurat (4 am to 6 am) or at night after 9 pm. It is best to try the Sadhana in isolation but in open air if possible. Otherwise try in an airy room. Have a bath and wear white clothes. For the Sadhana take a **Divya Cheitanya Parad Gutika** and wear it in a red thread around the neck.

Take a blanket and fold it. Then sit on it in Padmasan or Sukhasan with the legs crossed. The perform Prannayam. For this first close the right nostril and breathe in through the left nostril. Hold the breath in and then breathe out through the left nostril. Repeat five times. It should take one minutes to complete one cycle of inhalation and exhalation. then close the left and breathe through the right five times. Lastly breathe in and out with both nostrils simultaneously again five times. The breathing should be deep and slow.

Then take the ***Rom Koop Cheitanya Yantra*** in the right hand and chant the Guru Mantra mentally for ten minutes. Then touch the Yantra to the eyes. Then still holding the Yantra in the right hand get up and stand on the toes with both hands stretched upwards and the eyes looking skywards. In this position chant the following Mantra for the next ten minutes.

Om Kleem Kreem Rom Pratirom Cheitanyam Kuru Jaagraya Jaagraya Kreem Kleem Om Phat

One does not need any rosary to count the Mantra chanting. After the Mantra chanting touch the Yantra to all parts of the body so that the divine energy in it can be transferred to each body pore. After this open the blanket and lie on it on the back and close the eyes concentrating on the third eye. In the beginning you might not see or experience anything. But with practice you shall be able to view various scenes of mountains, rivers and far off places. Slowly you shall be able to view events. **Do this daily for 21 days. On the 22nd day drop the Yantra in a river or pond and keep wearing the Gutika.**

This is a very secret Sadhana whcih should be tried with full faith and devotion in order to gain the maximum. The experiences become more intense if one continues practising with concentration on the third eye even later.

Sadhana articles — 450/-



पूज्य सद्‌गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान



कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण साधना
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 37219989876

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

धूमावती यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

शिव यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-27354368, 27352248

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

Printing Date : 15-16 June, 2020
Posting Date : 21-22 June, 2020
Posting Office At Jodhpur RMS





गुरू पूर्णिमा - 5 जुलाई 2020

यह महोत्सव शिष्यों के लिए उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। जिस दिन शिष्य विगलित कंठ से गुरू से कुछ भी मांग कर उसकी कृपा प्राप्त करने का अधिकारी होता है। आवश्यकता है कि हम सद्गुरूदेव के बताए मार्ग के अनुसार अपने जीवन को गतिशील रखें। अतः इस दिन आपको कोई न कोई दीक्षा अवश्य ही प्राप्त करनी चाहिए। दीक्षा आप फोटो के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

फोटो से दीक्षा प्राप्त करने के लिए आप जोधपुर आश्रम फोन कर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002